मुद्रक :
मदनकुमार मेहता
रेफिल आर्ट प्रेस
(आदर्श-साहित्य-संघ द्वारा संचालित
३१, बड़तल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता ।
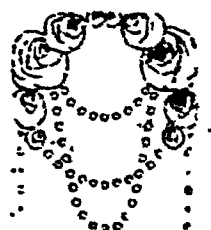
सेठ चांदमल बांठिया ट्रष्टेर ट्रष्टि
अधिकारी
पार्श्वनाथ जैन लाइब्रेरी
जयपुर

— कथारम्भ —

"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥"

वंगदेशे दार्शनिक-साहित्येर शैशवावस्थाय जैनदर्शनेर आलोचना अप्रासंगिक नहे एइरूप धारणार वशवर्त्ती हइया आमि "दश वैकालिक सूत्र" बांला पद्ये अनुवाद करिते प्रवृत्त हइ। बांलाभाषाय अनभिज्ञ पाठकवृन्देर पक्षे इहा समधिक उपयोगी ना हइलेओ बांलार सूक्ष्मदर्शी पण्डितगण ये इहाद्वारा जैनदर्शनेर तात्पर्य्य हृदयङ्गम करिते पारिबेन एविषये बोध हय काहार मतद्वैध नाइ। जैन आगम-शास्त्र समूह प्राकृतभाषाय (अर्द्धमागधीभाषाय) रचित हइलेओ उहा संस्कृत, हिन्दी, गुजराटी एवं इंराजी भाषाय अनूदित हइयाछे। वर्त्तमाने भारतीय कर्त्तृपक्ष हिन्दीभाषाके राष्ट्रभाषारूपे निर्द्धारित करियाछेन बलिया एइग्रन्थ वंगवासिगणेर जन्य बांला अक्षरे एवं अपरेर जन्य देवनागरी अक्षरे मुद्रित हइयाछे।

जैनधर्म्म अति प्राचीन। यीशुखृीष्टेर आविर्भावेर ६०० शत वत्सर पूर्व्वे गौतम बुद्ध जन्मग्रहण करेन। श्रीवर्द्धमान महावीर बुद्धेर समसामयिक छिलेन। तीर्थंकर श्री-महावीरेर आविर्भावेर पूर्व्वे

पूज्यपाद ऋषभादि त्रयोविंशति तीर्थंकर आध्यात्मिकतार समुज्वलालोके भारतभूमिके परमशान्तिर पथे सञ्चालित कराइया एक अभिनव युगेर प्राधान्य सर्व्वत्र प्रचार करेन। जैनगण साधारणतः दुइभागे विभक्त। श्वेताम्बर ओ दिगम्बर। श्वेताम्बरगण तिनभागे विभक्त :—यथा; मूर्त्तिपूजक, स्थानकवासी एवं तेरापन्थी।

कर्म्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग मोक्षलाभेर परम सहायक इहा वहूशास्त्रेइ उल्लिखित आछे। जैनाचार्य्यगण उक्त त्रिविधयोगेर प्राधान्य उपलब्धि करिया एवं उक्त त्रिवेणीर पूतधाराय सिञ्चित हइया मोक्षार्णवेर अनन्त-शान्तिर सुशीतल प्रवाहे निजदेह—मनप्राण अर्पण करिया छिलेन। जैनदर्शने उक्त त्रिविध योगेर प्राधान्यइ विद्यमान आछे। ज्ञानमार्गेर प्राधान्य वर्णनाकाले जैनाचार्यगण वलियाछेन "ज्ञानदर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गाः" ज्ञान् दर्शन ओ चारित्रइ मोक्षमार्ग-गमनेर एकमात्र पथ। जैनदर्शने जैन तीर्थंकरगण गुरुदेवेर स्तुति विहित आछे, उहाइ भक्तियोग। साधुदेर सन्न्यास ओ तपस्या एवं श्रावकदेर तपस्याओ नियम पालनइ कर्म्मयोग। अतएव वलिते हइवे ये जैन दर्शने उक्त त्रिविधयोगेरइ समावेश रहियाछे।

शुभाशुभ कर्म्मवद्धन हइते स्वकीय आत्माके मुक्त कराइया उहार विशुद्धि सम्पादनइ मोक्षप्राप्तिर एकमात्र उपाय इहाइ जैन-दार्शनिकगणेर अभिमत। जैनशास्त्रे उल्लिखित आछे :—

"दग्धेवीजे यथाऽत्यन्तं प्रादुर्भवति नाकुंरः।
कर्म्मवीजे तथादग्धे न रोहति भवाङ्कुरः॥"

ये प्रकार शस्यवीज दग्धीभूत हइले उहार अङ्कुरोद्गम हयना सेइरूप याहार कर्म्मवीज दग्धीभूत हइयाछे ताहार मायाच्छन्न संसारे जन्मलाभ करिते

हय ना। कर्म्मवन्धन हइते मुक्तीच्छु साधक अहिंसा संयम एवं तपस्यार प्रभावे आत्मार मालिन्य दूर करिया आत्मध्याने रत थाकिवेन इहाइ जैनतीर्थंकरगणेर उपदेश। श्रीमद्भगवद्गीताय ऐरूप उक्त हइयाछे यथा :—

यस्त्वात्मरति रेवस्या दात्म तृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येवच सन्तुष्ट स्तस्य कार्यं नविद्यते॥"

ये मानव आत्मविषये प्रीत, आत्मपरितृप्त एवं आत्मातेइ सन्तुष्ट हन, ताहार कोन कर्त्तव्य कार्य नाइ (गीता ३य अध्याय १७ श्लोक)। उहाद्वारा प्रमाणित हय ये आत्मदर्शन मुक्तिर सर्वोत्कृष्ट उपाय। जैनसाधुगण कर्म्मवन्धन हइते मुक्त हइया सांसारिक समस्त भोगवासना त्याग करिते–सर्व्वदाइ यत्नशील। गीतार चतुर्थाध्ययनेर २० ओ २१ श्लोक पड़िलेइ जैनधर्म्मेर प्रकृतस्वरुप उपलब्धि हइवे।

"त्यक्त्वा कर्म्मफलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्म्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोतिसः॥ २०
निराशी र्यतचितात्मा त्यक्तसर्व्व परिग्रहः।
शरीरं केवलं कर्म्म कुर्व्वन्नाप्नोति किल्विषम्॥ २१

साधुगण कर्म्मओ तत्फले आसक्ति परित्याग करेन; ताहारा नित्यतृप्त अर्थात् आत्मानुभूतिते परितृप्त सुतरां अप्राप्त-विषयलाभे अथवा प्राप्तविषयेर परिरक्षणे प्रयत्नरहित हइया ध्यानादि कर्त्तव्य कर्म्मे प्रवृत्त हइलेओ ताहारा किछुइ करेन ना; ताहादेर कृतकर्म्म कर्म्माभाव प्राप्त हय। २० श्लोक। यिनि निष्काम हइया अन्तःकरण ओ देहके संयत करिया सर्व्वप्रकार परिग्रह (भोग्यवस्तु) त्याग करियाछेन, तिनि केवल शरीर रक्षार निमित्त कर्त्तृत्वाभिनिवेशरहितभावे कर्म्मानुष्ठान

করিলেও সংসার বন্ধন প্রাপ্ত হন না (২১ শ্লোক)

জৈনদর্শনে পূর্ব্বোক্ত উপদেশগুলির তাৎপর্য্য যথাযথরূপে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ইহাদ্বারাই প্রতিপন্ন হয়, যে জৈনদর্শনের মোক্ষোপায়-পদ্ধতি শাস্ত্র সম্মতও মানব মাত্রেরই উপযোগী।

আর্হত প্রবর শ্রীহরিভদ্র সূরি বিরচিত জৈন দর্শন সমুচ্চয় নামকগ্রন্থে জিনতীর্থঙ্করের যেরূপ লক্ষণ উদাহৃত হইয়াছে তাহা সকলেরই প্রণিধানযোগ্য এবং উহাদ্বারাই জৈনগণ কোন পথের পথিক তাহা স্পষ্টরূপে প্রতিভাত হয়।

> জিনেন্দ্রো দেবতা তত্র রাগদ্বেষবিবর্জিতঃ।
> হতমোহ-মহামল্লঃ কেবল—জ্ঞানদর্শনঃ॥
> সুরা-সুরেন্দ্র-সংপূজ্যঃ সদ্ভূতার্থোপদেশকঃ।
> কৃৎস্ন কর্ম্ম ক্ষয়ং কৃত্বা সংপ্রাপ্তঃ পরমং পদম্॥

উক্ত শ্লোকদ্বয়ের তাৎপর্য্যদ্বারা প্রমাণিত হয় যে জিনগণ রাগদ্বেষহীন অর্থাৎ তাহারা সাংসারিক স্নেহরাগাত্মক রাগ এবং নিগ্রহাত্মক দ্বেষ জয় করিয়াছেন। উক্ত রাগদ্বেষ উভয়ই মুক্তির প্রতিরোধক। জিনগণ হিংসাদি মোহশূন্য এবং জ্ঞানদর্শন চারিত্র দ্বারা সদসৎ নির্ণয় করিতে সমর্থ। জৈনশাস্ত্রে শুভাশুভকর্ম্ম-প্রবৃত্তি বন্ধনের হেতু বলিলেও আত্মার ঊর্দ্ধ্বক্রান্তির পথে অহিংসা সংযম তপস্যাদি আধ্যাত্মিক কর্ম্মের প্রবৃত্তি ধর্ম্ম বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। ইহাদ্বারা স্পষ্টই প্রতীয়মান হয় যে, যে কর্ম্মের অনুষ্ঠানফলে জীবের নরদেবতাদিরূপে অবতীর্ণ হইয়া পাপপুণ্য জনিত ফলভোগ করিতে হয়, তাদৃশ কর্ম্মকেই বন্ধনস্বরূপ বলিয়াছেন। তাদৃশ কর্ম্মের ক্ষয়ে আধ্যাত্মিকতার প্রভাব অনুভূত হয়। আধ্যাত্মিক কর্ম্মত্যাগের কথা জৈনশাস্ত্রে নাই।

आध्यात्मिक कर्म्म ओ ज्ञान एइ उभयेर अनुष्ठान अत्यावश्यक। अन्यथा निर्व्वाण-लाभ सदूर पराहत। योग वाशिष्ट रामायणेओ ऐरुप लिखित आछे; यथा :—

"उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः।
तथा ज्ञान कर्म्मभ्यां जायते परमं पदम् ॥

पक्षिगण पक्षद्वय द्वारा आकाश मार्गे उठिते पारे। एकटि पक्ष ना थाकिले उहादेर उड़िवार चेस्टा वृथा हय। तद्रूप मानुषेर मुक्तिमार्गे उठिवार दुइटी पथ; आध्यात्मिककर्म्म ओ ज्ञान; उहादेर एकटिर अभावे मानुष निर्व्वाणलाभे समर्थ नहे। जैनदर्शने कर्म्मत्याग वा क्षयेर ये कथा उल्लिखित हइयाछे उहाद्वारा आध्यात्मिक कर्म्मत्याग वुझाय ना। भोगेर परिपोषक ये कर्म्मद्वारा जीवेर जन्म मरण दुःख पाइते हय, सेइ कर्म्मकेइ क्षय करिते जैन तीर्थङ्करगण भूयोभूयः उपदेश प्रदान करियाछेन। आध्यात्मिककर्म्म कर्म्म नहे उहा धर्म्म। एजन्यइ अहिंसा संयम तपस्या प्रभृति आध्यात्मिक कार्य्यगुलिके जैनाचार्य्यगण धर्म्म नामे अभिहित करियाछेन। हिन्दु दर्शनेओ ऐरुप उक्त हइयाछे :—

यावन्नक्षीयते कर्म्म शुभञ्चाशुभमेव वा।
तावन्न जायते मोक्षो नृणां कल्पशतै रपि ॥
यथा लौह मयैः पाशैः पाशैः स्वर्णमयैरपि।
तावद्वद्धो भवेज्जीवः कर्म्मभिश्च शुभाशुभैः ॥

शुभाशुभ कर्म्म क्षय ना हइले शतकल्पेओ मानुषेर मुक्ति हय ना। येरूप मानव लौहश्रृङ्खल द्वारा वद्ध हय सेइरूप स्वर्णश्रृङ्खल द्वाराओ वद्ध हय। जीवगणओ सेइरूप पापपुण्य कर्म्मद्वारा वद्ध हइया थाके।

श्रीमद्भगवद्गीताओ अध्यात्मिक कर्म्म व्यतीत अन्यान्य कर्म्मके बन्धनेर हेतु बलिया उल्लिखित हइयाछे। यथा :—

"यज्ञार्थात् कर्म्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म्म कौन्तेय ; मुक्तसङ्गः समाचर॥

परमेश्वरेर आराधना व्यतीत अन्यान्य कर्म्मेर अनुष्ठान संसार बन्धनेर हेतु-भूत हय अतएव हे पार्थ ! तुमि निष्काम हइया भगवानेर प्रीतिर निमित्त विहितकर्म्मेर अनुष्ठान कर। पूर्व्वोक्त श्लोके आध्यात्मिक कर्म्म व्यतीत अन्यान्य कर्म्मद्वारा जीव बद्ध हय इहाइ प्रमाणित हय। जैनसिद्धान्त दीपिकार प्रणेता पूज्यपाद आचार्य श्रीमत् तुलसी रामजी महाराज धर्म्मेर व्याख्या निम्न प्रकार करियाछेन।

"आत्मशुद्धिसाधनं धर्म्मः।"

आत्मशुद्धिर साधनइ धर्म्म। तत्पर धर्म्मके तिनि दुइभागे विभक्त करियाछेन :—

"संवरो निर्जरा।"

सम्बर संयम ओ निर्जरातपः एइ दुइटिके धर्म्म बलियाछेन। एमनकि क्षान्ति मुक्ति सरलता ब्रह्मचर्य प्रभृतिकेओ धर्म्माङ्ग बलिया निर्देश करियाछेन। अतएव जैनाचार्यगण आध्यात्मिक कर्म्मके कखनओ बन्धन हेतुभूत कर्म्म बलिया स्वीकार करेन नाइ इहा स्पष्टरूपे अनुमित हय।

शास्त्रोक्त विधि पालन करिते हइले शास्त्रोक्त वाक्यगुलिर बहिरावरण भेद करिया उहार गूढ़ार्थ हृदयङ्गम करिते चेष्टा करिते हय। वक्तार प्रकृत उद्देश्य कि ताहा प्रणिधान सहकारे बुझिया कर्त्तव्य स्थिर करिते हइबे। सेइजन्य शास्त्रकार बलियाछेन :—

केवलं श्लोकमाश्रित्य विचारं नैव कारयेत्।
युक्तिहीन विचारेतु धर्म्महानिः प्रजायते॥

केवलमात्र श्लोकेर पदगुलिर अर्थ समन्वय करिया व्याख्या करिलेइ प्रकृत तात्पर्य निर्णय हय ना। वक्तार प्रकृत उद्देश्य कि ताहा सविशेष चिन्ता करिया स्थिर करिते हय। युक्तिहीन विचार द्वारा धर्म्महानि हय। सेइजन्यइ आर्हत श्रीहरिभद्र सूरि श्रीमहावीरेर युक्ति ओ तात्पर्य ज्ञानेर प्रशंसा करियाछेन :—

"अस्ति व्यक्तव्यता कदचित्तेनेदं न विचार्यते।
निर्दोषं काञ्चन श्चेत्स्यात् परीक्षाया विभेतिकिम्॥
पक्षपातो न मेवीरे न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रह॥"

तिनि शास्त्रेर विभिन्न मतगुलिर ग्राह्याग्राह्य विषयगुलिर तात्पर्य बुझिवार जन्य सर्वान्तःकरणे यत्नवान् छिलेन; परे आत्मसाधनार पथके सादरे ग्रहण करिया अपरेर भ्रान्तधारणा विदूरित करियाछिलेन। ताहार निकट ये जैनदर्शन अति आदरेर सामग्रीरूपे परिगृहीत हइयाछिल एविषये काहारओ किछुमात्र सन्देह नाइ।

आत्मार मालिन्य दूरी करणइ जैनगणेर मोक्षमार्ग गमनेर प्रधान उपाय। सेइ जन्यइ ताहारा आत्मार ऊर्द्धव् गमने गुणस्थानेर विचार करिया उहार उत्कर्षतार तारतम्य देखाइयाछेन। गुणस्थान मोक्षप्रासाद गमनेर सोपानस्वरुप। संयमादि व्यतीत मोक्षमार्गे अग्रसर हओया अत्यन्त कठिन। श्रीमद् भगवद्गीतार षष्ठाध्यायेर ३६ श्लोके लिखित आछे :—

"असंयतात्मना योग दुष्प्राप इति मेमतिः।"

असंयतात्मार पक्षे योगे सिद्धिलाभ करा अत्यन्त कष्टसाध्य। आत्म-दर्शनइ जीवेर ऊर्द्धक्रान्तिर एकमात्र पथ। अहिंसादि उहार साधन। सदसत् विचारइ अज्ञानान्धकार दूर करिबार सर्वोत्कृष्ट उपाय एइ अमोघ तत्त्वगुलि जैन साधुगण सर्वत्र प्रचार करिया छिलेन। श्रुतितेओ आछे :—

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्योमन्तव्यो निदिध्यासितव्यः ॥"

मुमुक्षु साधु आत्माके दर्शन करिबेन येहेतु मुक्ति-कामीर पक्षे आत्म-दर्शनइ अभीष्टलाभेर उपायस्वरुप। आत्मदर्शन कि प्रकारे सम्भव हइबे एइरुप प्रश्न उत्थापित हइले वलिते हइबे ये आत्मदर्शन करिते हइले आत्मार श्रवण, मननओ निदिध्यासन अत्यावश्यक।

जैनाचार्यगण पूर्वोक्त श्रुतिर तात्पर्य साधनाबले अनुभव करिया एवं आत्मदर्शनइ धर्म्मेर मूलभित्तिस्वरुप हृदयङ्गम करिया आत्म-ग्लानिसूचक वेदादिगृहीत—हिंसात्मक नियम पद्धतिगुलिके परित्याग करेन एवं विशुद्ध आत्मार विमलप्रभाय देदीप्यमान हइया संसारार्णवेर विघ्नतरङ्गेर घातप्रतिघात विदूरित करिते बद्धपरिकर हन। जैनाचार्य-गण आध्यात्मिकताय विशिष्टस्थान अधिकार करिया अहिंसाधर्म्मेर जाज्वल्यमान प्रमाण प्रदर्शन करियाछिलेन। उहादेर न्याय अनुष्ठित आध्यात्मिककर्मानुष्ठानेर कठोरता आर कोथायओ परिलक्षित हय ना।

आत्मचेतना-समुत्सुक साधुरा पञ्चमहाव्रत त्रिविधकरण योग पालन करिया सच्चिदानन्द आत्मार विमलप्रभा अनुभव करेन। जैनगण मुक्त आत्मा भिन्न स्वतन्त्र ईश्वरेर अस्तित्व स्वीकार करेन ना किन्तु आत्माकेइ परमेश्वर वलिया स्वीकार करियाछेन।

प्रामाण्यस्वरूप एस्थले जैनसिद्धान्तदीपिकार पञ्चम प्रकाशेर ४० सूत्र उद्धृत करितेछि।

"अपुनरावृत्तयोऽनन्ता मुक्ताः ॥ ४० ॥

सिद्धः बुद्धः मुक्तः परमात्मा परमेश्वर ईश्वर इत्यादय एकार्थाः। आत्माके जैनाचार्यगण बुद्ध मुक्त परमात्मा परमेश्वर ईश्वर प्रभृति नामे अभिहित करियाछेन। अतएव इहाद्वारा प्रमाणित हय ये जैनगण आत्माकेइ ईश्वर वलिया स्वीकार करियाछेन। आत्माके याहारा ईश्वरस्वरूप मानेन ताहारा निरीश्वरवादी किरूपे हइलेन इहाइ आमार सुधीगणेर निकट जिज्ञास्य। आत्मवादके निरीश्वरवाद वलिले वेदान्तिकेर आत्मवादओ दोपावह हइया उठे।

जैनगणेर शास्त्र आगम वा सिद्धान्त नामे परिचित। निम्ने उहार भाग विभाग प्रदर्शित हइल।

सिद्धान्त (आगम) मोट ४५टि।

अङ्ग (१२) उपाङ्ग (१२) प्रकीर्ण (१०) छेदसूत्र (६) मूलसूत्र (४) नन्दी (१)

अङ्ग—आचाराङ्ग, सूत्रकृताङ्ग, स्थानाङ्ग, समवायाङ्ग, भगवती विवाह-पन्नति वा व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्म्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृत्दशा, अनुत्तर उपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाक सूत्र। (११)

उपाङ्ग—ओपपातिक, रायप्रसेनीय, जीवाभिगम, प्रज्ञापना, जम्बुद्वीप-प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, नीरयावलिया, कल्पावतंसिका पुष्पिका' पुष्पिचूलिका, वह्निदशा। (१२)

गूलसूत्र—दश वैकालिक सूत्र, उत्तराध्यनसूत्र, नन्दी, अनुयोगद्वार। (४)

छेद सूत्र—व्यवहार, बृहत्कल्प, निशीथ, दशाश्रूतस्कन्ध (४)

अवकाशसूत्र— (१)

दृष्टिवाद नामीय द्वादशाङ्ग अप्राप्य। ४४ टि सूत्रेर मध्ये कतकगुलिसूत्र यथायथ ओ सम्पूर्ण ना पाओयाय एवं अङ्गसूत्रगुलिर सहित स्थानेस्थाने उहादेर भेद परिलक्षित हओयाय जैनगणेर कतक सम्प्रदाय ३२टि सूत्र प्रामाणिक बलिया ग्रहण करेन। ताहादेर भेद एइरूप :-
अङ्ग (११), उपाङ्ग (१२), मूलसूत्र (४), छेदसूत्र (४), आवश्यकसूत्र (१) (मोट ३२टि सूत्र) ।

उपरिलिखित—मतान्तर परिलक्षित हइलेओ दशवैकालिक सूत्रके सकलेइ मूलसूत्रेर अन्तर्गत बलिया स्वीकार करियाछेन।

दशवैकालिक सूत्र जैन सम्प्रदायेर एकटि अमूल्य धर्म्मग्रन्थ। इहा मूलसूत्रेर अंश विशेष। आत्मार मूलगुण प्रधानतः चारिटि मात्र। यथाः— ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तपस्या। ये शास्त्र उक्त मूल-गुण समूह पोषण करे उहाकेइ मूलसूत्र बले। दश वैकालिक सूत्रे दशटि अध्ययन एवं दुइटि चूलिका आछे। दशवैकालिक सूत्रे सर्व्व-विरतिरूपचारित्र-धर्म्मेर पूर्ण विवरण पाओया याय। दशवैकालिक सूत्र प्रणेता जैनाचार्य्य श्रीशय्यम्भव भट्ट वीर सम्वत् ३६ साले राजगृहे जन्मग्रहण करेन। तांहार पूर्व्ववर्तिगुरु—स्थानीय आचार्य्यगणेर नाम निम्ने लिखित हइल।

तीर्थङ्कर श्रीवर्द्धमान महावीर।
|
तत्शिष्य..............श्रीसुधर्म्मा स्वामी।
|
" श्रीजम्बु स्वामी।
|
" श्रीप्रभव स्वामी।
|
" श्रीशय्यम्भव स्वामी

श्री शय्यम्भव स्वामी कर्त्तृक दश वैकालिकसूत्र वीरसम्वत् ७२ साले रचित हय। वीर सम्वत् ९८ साले उक्त ग्रन्थकार निर्वाण प्राप्त हन।

दश वैकालिक सूत्रेर प्रणयने मनकमुनिइ प्रधानकारणरूपे प्रख्यात हइयाछेन। यखन श्रीशय्यम्भव भट्ट जैनदीक्षा ग्रहण करेन, सेइ समये ताहार धर्मपत्नी गर्भवती छिलेन। एकदा ज्ञातिवर्ग उक्त धर्मपत्नीके जिज्ञासा करेन - "आपनार गर्भे किछु आछे कि? तदुत्तरे तिनि वलेन "मनगम् अर्थात् अल्प किछु आछे। कियत्काल परे यथाकाले शय्यम्भव पत्नी एकटि सुसन्तान प्रसव करेन। मातार प्रत्युत्तरकाले "मनगम्" शब्द उच्चारित हइयाछिल वलिया पुत्रेर नाम मनक राखा हय। मनक दैनन्दिन शशिकलार मत वर्द्धित हइया अष्टम वर्षे उपनीत हन। एकदिन मनक स्वीय जननीके जिज्ञासा करेन "मातः! "आमार पिता के? तिनि वर्त्तमाने कोथाय आछेन"? मनक-जननी पुत्रेर निकट पितार प्रव्रज्यार समस्त घटनावली यथायथरूपे वर्णना करेन। मनक मातृमुखे पितार संन्यास ग्रहणवृत्तान्त श्रवण करिया ताँहार दर्शने समुत्सुक हन एवं शुभदिवसे मातार चरणवन्दना करिया ताँहार आदेशे पितृदर्शने आलय हइते वहिर्गत हन। आचार्य्य-प्रवर श्री शय्यम्भव स्वामी तत्काले चम्पा नगरीते विहार करितेछिलेन। मनक कोन प्रकारे चम्पानगरीते उपनीत हइया पितार दर्शन लाभ करेन एवं पूर्वजन्मकृत-शुभसंस्कारवशतः भक्तिर सहित पितार चरणवन्दना करेन। मनकेर भक्तिर आधिक्य निरीक्षण करिया श्रशय्यम्भव स्वमी मनकेर परिचय जिज्ञासा करेन। वालकेर परिचये श्रीशय्यम्भव स्वामी वुझिते पारिलेन ये मनक ताँहारइ पुत्र। मनक पितार निकट कियत्काल अवस्थान करिया पिता हइते जैनदीक्षा ग्रहन करेण। श्रीशय्यम्भव स्वामी तपस्या वले मनकेर आयुः

छय मास मात्र अवशिष्ट आछे इहा वुझिते पारिया स्वल्पकाले ज्ञान-वृद्धि एवं मुक्ति कामनाय एइ ग्रन्थ दशटि अपराह्न वेलाय (विकाले) लिखिया शेष करेन। रचनाकालेर वैशिष्ट्य रक्षार निमित्त एइ ग्रन्थ "दशवैकालिक सूत्र" नामे अभिहित हय। एइ ग्रन्थे जैन भिक्षुकगणेर धर्म्मरीतिनीति विशदरूपे वर्णित हइयाछे। अहिंसा, संयम, तपस्या, भोगवासना-निवृत्तिर उपाय, अनाचीर्णदोष, षट् कायिक जीव, पञ्च-महाव्रत, भिक्षाविधि, भाषार विचार, आहार विधि, गुरुसेवा, विनय, खाद्याखाद्य विचार, रात्रि भोजन त्याग प्रभृति विषय इहाते दृष्टान्त-सहकारे सरल ओ प्राञ्जल भाषाय लिपिबद्ध करा हइयाछे। एइ ग्रन्थ प्राकृत भाषाय गद्ये ओ पद्ये लिखित हइयाछे।

उक्त ग्रन्थखानि वङ्गभाषाय पद्यानुवाद करिया प्रकाश कराइते धर्म्मप्राण उदारहृदय जयपुर निवासी शेठ श्रीचाँदमल वांठिया महोदय कृतसङ्कल्प हन एवं पद्यानुवादेर भार आमार उपर न्यस्त करेन। आमि उक्त ग्रन्थेर विवृत्तिगुलि यथारीति वांलापद्ये लिखिया उहार संशोधनार्थे विक्रमसंम्वत् २००७साले कार्त्तिक मासे चातुर्मास्य उद्यापन काले हांसीस्थित जैन श्वेताम्बर तेरापन्थि-सम्प्रदायेर पूज्यपाद आचार्य श्रीतुलसीरामजी स्वामीर शरणापन्न हइ। ताँहार कृपाय एवं परामर्शा-नुसारे वङ्गभाषाय अभिज्ञ श्रीमद् दुलीचाँद स्वामीर निकट याइया प्रथम ओ द्वितीय अध्ययनेर सन्दिग्ध अंशगुलिर संशोधन करि। तत्पर विकानीरेर अन्तर्गत प्रसिद्ध सहर "सर्दारसहरे" उपनीत हइया काव्यविशारद वैयाकरण श्रीमत् मोहनलाल स्वामीर साहाय्ये ग्रन्थेर प्राय अधिकांश सन्दिग्ध अंशगुलि संशोधन करिया लइ। आमार परमात्मीय सहोदर प्रतिम श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापन्थि-महा-सभार सुयोग्य सभापति श्रीछोगमलजी चोपड़ा वि, एल, महोदय

आमाके सर्वविषये सर्वान्तःकरणे साहाय्य करेन। सर्दारसहर वास्तव्य श्रीनेमिचाँद गाधिया ताहार निज वाड़ीते आत्मीयभावे आमाके राखिया एवं आमार अभाव अनुयोग यथासाध्य दूर करिया निर्विघ्ने पद्या-नुवाद करिवार सुयोग प्रदान करेन। एइ ग्रन्थेर ऐतिह्य उद्धृत करिवार समय स्वधर्म्मपरायण सभापति महाशयेर योग्यपुत्र श्रीगोपीचाँद चोपड़ा बि, एल, महाशय सर्वान्त.करणे आमार साहाय्य करेन। पण्डित प्रवर स्वनामधन्य चिकित्सक आशुकवि श्रीरघुनन्दन शास्त्री चुरुवास्तव्य श्रीघनश्याम शास्त्री एवं लाडूनु निवासी श्रीपान्नालाल भंशाली आमार यथेष्ट साहाय्य करेन। याहादेर साहाय्ये एइ ग्रन्थ-खानिर पद्यानुवादे कृतकार्य हइयाछि, ताहादिगके आमि आमार आन्तरिक धन्यवाद प्रदान करितेछि। उहादेर साहाय्य व्यतीत आमार एइ दुरूह कार्य सम्भवपर हइत ना। उहादेर सस्नेह दृष्टिपाते आमार विदेशवासओ सुखप्रद हइयाछिल।

हिंसा निवृत्तिर उपायस्वरूप एइ ग्रन्थखानि पड़िया यदि काहार प्राणे अहिंसा साधने ओ संयमे विन्दुमात्रओ प्रेरणा जन्मे ताहा हइलेइ आमार परिश्रम सार्थक ज्ञान करिव।

विनीत—

ग्रन्थकार।

सूचीपत्र ।

दश वैकालिकसूत्र ।

अशुद्धि—संशोधन

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठाङ्क	पंक्ति
सव्व ...	सर्व्व ...	१ ...	३
जोवहत्या ...	जीवहत्या ...	३ ...	३
वजन ...	वर्जन ..	३ ...	३
ज़ोवविरोधना	जीवविरोधना ...	४ ...	७
स्त्रो ...	स्त्री ...	४ ...	१६
विषेष ...	विशेष ...	५ ...	२०
व़िणयोर ...	विनयीर ...	६ ...	१५
धर्मत्मागे ...	धर्म्मत्यागे ...	७ ...	२३
द्युतक्रिया ...	द्यूतक्रिया ...	१८ ...	२१
चरिटि ...	चारिटि ...	२८ ...	१७
करिाणा ...	करिना	३२	१६
विम्वा	किम्वा ...	३८	१३
भावाशक्ति	भावासक्ति ...	४६ ...	४
शुद ...	शुद्ध ...	४६ ...	५
कम्मक्षय ...	कर्म्मक्षय ...	४७ ...	१३
वाचाइया	वांचाइया ...	५०	१३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठांक	पंक्ति
साभीष्ट ...	स्वाभीष्ट ...	५० ...	१४
वजन ...	वर्जन ...	५० ...	१६
चलिते चलिते	वलिते वलिते ...	५३ ...	११
शान्ति	शास्ति ...	५४ ...	७
मुक्ष्मकीट ...	सूक्ष्मकीट ...	५५	१२
कदम मय	कर्दममय ...	५६	५
योहाते ...	याहाते ...	७५ ...	१२
अपरिणता	अपरिणता वा ...	७८	१
पूर्णरुप	पुर्व्वरुप ...	८० ...	२१
व्याधिहीण	व्याधिहीन ...	८६ ...	१२
पृिवकाय	पृथ्वीकाय ...	८७ ...	१५
दन्देर	दन्तेर ...	८८ ...	११
तुल ...	तैल ...	८६ ...	६
तोर्थङ्कर ...	तीर्थङ्कर ...	८६ ...	६
आसक्तिई	आसक्तिइ ...	८६ ...	२२
सततः	सतत ...	६१ ...	१५
आहत ...	आह्वत ...	६५	७
साध ...	साधु ...	११० ...	१३
ऊद्ध्वं ...	ऊद्र्ध्वें ...	११४ ...	१
सवाक्येर	स्ववाक्येर	११४ ...	६
इहाते ...	हइते ...	१२७	१२
याअनुमोदिनो	पापानुमोदिनी	११४ ...	५
सज़्योतिं	सज्योति ...	११७ ...	१८

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कछ्प ...	कच्छप ...	१२४ ...	१५
वयक्रम ...	वयःक्रम ...	१२७ ...	१६
दुख ...	दुःख ...	१३३ ...	१२
दुखमय ...	दुःखमयः ...	१३८ ...	१४
भतृसनादि ...	भर्तृसनादि ...	१३६ ...	१५
१५	१६ ...	१४० ...	४
कण्टकऔ ...	कण्टकओ ...	१४५ ...	४
अप्रिय याहा ...	याहा अप्रिय ...	१४६ ...	६
मभ्ये ...	मध्ये ...	१४६ ...	१६
षदे ...	पदे ...	१४७ ...	१७
शुसाधु ...	सुसाधु ...	१५० ...	११
सनाधिर ...	समाधिर ...	१५१ ...	५
आक्राशा	आक्रोश ...	१५७ ...	२१
विलतेछि ...	वलितेछि ...	१६१ ...	१४
भोगपारे ...	भोगपरे ...	१८३ ...	२०

कथारम्भ ।

अशुद्ध	शुद्धि	पृष्ठ	पंक्ति
तीर्थंकरगण गुरुदेवेर	तीर्थंकर-गुरुदेवेर	२ ...	१३
तृप्तस्च ...	तृप्तश्च ...	३ ...	५
प्रवृक्ति ...	प्रवृत्ति ...	४ ...	१६
अत्यावस्यक ...	अत्यावश्यक	५ ...	१

मङ्गलाचरण ।

चिदानन्दमय प्रभु व्याप्त चराचर ।
शुद्ध-वुद्ध-यतिलब्ध ज्ञानेर गोचर ॥
सर्व्वधीवृत्तिर साक्षी नित्य निर्विकार ।
अजर अमर आत्मा नमि कोटिवार ॥
जैनधर्म्म-प्रवर्त्तक अहिंस - साधक,
यांहादेर कृपावले प्रवुद्ध श्रावक,
ऋषभादि पूज्य त्रयोविंशति-संख्यक,
नमि आमि भक्तिभरे विश्वेर रक्षक ॥
जीव मुक्ति हेतु यिनि कृच्छ्रव्रतधारी ।
साधु श्रेष्ठ महावीरे नमस्कार करि ॥
शान्त शुद्ध जितेन्द्रिय प्रवीण आगमे ।
सभक्ति साञ्जलि नमि श्रीतुलसी रामे ॥

भूमिका ।

दश-वैकालिक-सूत्र सिद्ध-पूर्ण-ज्ञान ।
साधुरा पूजिछे याहा करिया धेयान ॥
सर्व्वविरतिरूप चारित्र धर्म्मेर ।
विकाशक एइ ग्रन्थ सकल लोकेर ॥
सन्तोष लभिवे वहा पड़ि साधु जन ।
दूर हवे पाप ताप करिले श्रवण ॥
आचार्य्यं तुलसी पदे करि नमस्कार ।
शुन पूण्य कथा एवे हये शुद्धाचार ॥
दश वंकालिक नाम अति सुशोभन ।
केमने हइल तार शुन विवरण ॥
शय्यम्भव नामे मुनि आचार्य्य सुजन ।
जैनसारतत्त्वे रचि दश अध्ययन ॥
विकाले ग्रन्थेर शेष करेण वलिया ।
वैकालिक नाम हय पृथिवी व्यापिया ॥
मनक नामेते मुनि पुत्र छिल तार ।
छय मास आयुः छिल अवशिष्ट आर ॥

ताहार ज्ञानेर तरे ग्रन्थ सङ्कलन ।
करेण साधकवर करिया चिन्तन ॥
प्रथमाध्ययने आछे धरम प्रकृत ।
अहिंसा संयम तपः जैनेन्द्र कथित ॥
श्रमणेर वृत्ति आर भ्रमर तुलना ।
माधुकरी वृत्ति तथा हयेछे योजना ॥१
द्वितीयाध्ययने आछे वासना जड़ित ।
मानव केमने पाले कृच्छ्र साधुव्रत ॥
भोगीर भोगेते मति त्यागीर वर्जन ।
सुविस्तृतभावे साधु करहे श्रवण ॥
मनेर चाञ्चल्यरोधे आछे द्विप्रकार ।
वहिरङ्ग अन्तरङ्ग विधि धर्म्माचार ॥
राजीमती उपदेशे मुनि रथनेमि ।
केमने हलेन चिर सतत संयमी ॥
रथनेमि तुल्य कार यदि वा कखन ।
भोगेर निवृत्ति हय सफल जीवन ॥२
तृतीयाध्ययने आछे दोषेर वारता ।
संयमेते स्थिरचित्त-मुनिर व्यर्थता ॥
औद्देशिक आदि वहु अनाचीर्ण दोष ।
तेयागि किरूपे मुनि लभिवे सन्तोष ॥३
अध्ययन चतुर्थेते हयेछे प्रचार ।
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर प्रारम्भे याहार ॥
षड् जीव वर्णने आछे पञ्च महाव्रत ।
रात्रिर भोजन त्याग हयेछे वर्णित ॥

पृथ्वी जल तेजः वायु वनस्पति आर ।
त्रस नामे छय जीव आछे नानाकार ॥
जीवहत्या महापाप हयेछे लिखित ।
कि उपाये रक्षा पाय जीव शत शत ॥
सुगति दुर्गति साधु केन भुञ्जे भवे ।
केमने मुकति पाय तपस्या प्रभावे ॥४
अध्ययन पञ्चमेर नाम पिण्डैषणा ।
उद्देशद्वयेते ताहा हयेछे योजना ॥
भिक्षुकेर भिक्षाविधि वर्षाकाले स्थिति ।
विश्रान्ति चिन्तन आर भोजनेर रीति ॥
प्रथम उद्देशे ताहा आछे सुविस्तार ।
याहा द्वारा साधुदेर हवे उपकार ॥
द्वितीय उद्देश कथा वलिव एखन ।
मनोयोग सहकारे करिवे श्रवण ॥
धर्मकाय जीवगण करिते रक्षण ।
कि उपाये लभे साधु पानीय भोजन ॥
भिक्षार ग्रहणकाले किरूपे थाकिवे ।
किरूपे आहार्य्य साधु ग्रहण करिवे ॥
क्रोध पूजा कि प्रकारे करिवे वर्जन ।
कि कि खाद्य करिवेना भिक्षार्थी ग्रहण ॥
भिक्षालाभे कालाकाले किरूप विचार ।
आचार्य्य भिक्षार्थी हले किहवे भिक्षार ॥
इत्यादि विषय आछे वर्णित इहाते ।
चेष्टित हइवे ताहा पालन करिते ॥५

षष्ठ अध्ययने आछे अनेक विषय ।
वर्णित हइवे उहा जैनतत्त्वमय ॥
प्रश्नोत्तर गुरुशिष्ये साधुर आचार ।
दोष स्थान अष्टादश हयेछे प्रचार ॥
अहिंसा ख्यापन आर दोषादि वर्णन ।
परिग्रह व्याख्या त्याज्य रात्रिर भोजन ॥
वर्णित हयेछे आर जीवविरोधना ।
चारिटि अभोज्य वस्तु हयेछे योजना ॥
आहार्य्य ग्रहण रीति वर्जन विधान ।
पश्चात् आर पुरः कर्म्म दोषेर व्याख्यान ॥
स्नानादि वर्जन आर निर्जरा ग्रहण ।
सिद्धिलाभकथा इथे हयेछे वर्णन ॥६
अध्ययन सप्तमेते भाषार विचार ।
चारि संख्या परिमित उहार प्रकार ॥
उहा हते दुइ ग्राह्य दुइ त्यजनीय ।
सत्य विनयादि ग्राह्य त्याज्य दूषणीय ॥
प्राणि भेदे भाषा भेद किरूपे करिवे ।
वृक्षादिके कि प्रकार भाषाते कहिवे ॥
स्त्री पुरुष कथनेर कि प्रकार रीति ।
सावद्य भाषार त्याग श्रद्धार प्रकृति ॥
खरिद विक्रये भाषा किरूपे कहिवे ।
असाधुर सह कथा केन ना वलिवे ॥
युद्धे कार जय लाभ कखन घटिल ।
सुभिक्ष दुर्भिक्ष अद्य कोथा वा हइल ॥

पूर्वोक्त प्रश्नेर त्याग आगमविहित।
शुद्ध भाषा आर फल हयेछे वर्णित ॥७
अध्ययन अष्टमेते निम्नोक्त विषय।
जैनेन्द्र महर्षि द्वारा लिपिवद्ध हय ॥
आचारादि अभिज्ञेर कर्त्तव्य साधन।
जीवभेद, षड्जीवेर हिंसादि त्यजन ॥
सूक्ष्म आट जीव प्रति हिंसा त्याग विधि।
प्रतिलेखनेर फल कि वा निरवधि ॥
उच्चारादि विसर्ज्जन भिक्षार्थीर कथा।
लाभालाभ चर्चा त्याग भोजनाप्रियता ॥
परिषहसह्यफल निशा खाद्यत्याग।
दान्त भावे विषयेते राखिया विराग ॥
साधु करे आत्मोत्कर्ष किरूपे गोपन।
श्रुतलाभे गर्व्वबोध करिवे वर्जन ॥
पाप कार्य्य कृत हले करिवे ना आर।
स्वपापेर मन्द फल करिवे प्रचार ॥
आचार्य्येर उपदेश विनये पालिवे।
आयूर अल्पता ज्ञाने किरूपे चलिवे ॥
क्रोधादि कषाय चारि त्यागेर आदेश।
वृथा कथा अपृष्टेर निषेध विशेष ॥
अप्रीतिजनक किम्वा क्रोधेर कारण।
वाक्य राशि प्रयोगेर रहेछे वर्जन ॥
नाक्षत्रिक गणनादि भावि भाग्यवाणी।
नारीर संसर्ग भवे कत करे हानि ॥

साधुगणपालनेर आदेश वचन ।
संयमेर फल व्याख्या आछे अगणन ॥८
अध्ययन नवमेते आछे बहु नीति ।
चतुर्व्विध उद्देशेर रहेछे विवृति ॥
क्रोध आर विनयेर विषय वर्णन ।
गुरु प्रति श्रद्धाभावे शिष्येर पतन ॥
नागेर उपमा द्वारा याहा विचारित ।
मुमुक्षु मुनिर कार्य्य हयेछे वर्णित ॥
गुरू सेवा विनयीर कि वा हय फल ।
तुलना इन्द्रेर सह गुरूर केवल ॥
उपमा सुधांशु सह गणीर कथित ।
गुरुर सन्तोष फल हयेछे वर्णित ॥
धर्मेर उपमा आछे वृक्षेर सहित ।
कपटता महादोष हयेछे कथित ॥
विनयीर भावि फल अविनये दोष ।
शारीरिक मानसिक जन्मे असन्तोष ॥
आचार्य्येर आज्ञा मानि किरूपे साधक ।
उन्नति चरम स्थाने उठिछे सेवक ॥
शिल्पादि निषेध विधि नम्रतार गुण ।
क्षमार किरूप शक्ति हयेछे वर्णन ॥
गुरु सेवा भिक्षा लाभ इन्द्रियेर जय ।
अप्रिय भाषण त्याग वर्णित विषय ॥
रागद्वेषकषायेर त्यागेर सुफल ।
निन्दा त्यागे सकलेर जन्मे धर्म्म बल ॥

मान्ननीय शिष्य सह कन्यार उपमा।
वर्णित हयेछे अति संयमगरिमा॥
पाँचटि समिति आर त्रिगुप्ति पालने।
कषायेर परित्याग परम यतने॥
पूज्य हय साधुवर भुवने सतत।
गुरुर शुश्रुषाफल हयेछे वर्णित॥
चतुर्थ उद्देशे आछे विनय समाधि।
तीर्थङ्कर महावीर रचित सुविधि॥
श्रुत तपः समाधिर प्रभाव विस्तार।
ज्ञान योग एकाग्रता विविध आचार॥
गुरुर शुश्रूषा विधि समाधिर बल।
वर्णित हयेछे सत्य जैन नीति फल॥९
अध्ययन दशमेते हयेछे वर्णित।
भाव साधुबर संज्ञा अति सुविस्तृत॥१०
प्रथम चूलिका धरे रतिवाक्य नाम।
साधुरा पड़िया हवे सिद्ध मनस्काम॥
प्रथम चूलिका मध्ये आछे सुउपाय।
किरूपे संयम सदा स्थिर राखा याय॥
दुःखेते उद्विग्न साधु स्वकर्त्तव्य च्युत।
संयम त्यजिते शीघ्र यखन उद्यत॥
अष्टादश स्थान तदा करिया मनन।
संयमेते युक्त हन किरूपे तखन॥
धर्म्मत्यागे किवा फल पाय साधुजन।
उपमार प्रदर्शने सन्तापित हन॥

चारित्रत्यागेते ताप पर्य्यायेते रति ।
धर्मभ्रष्ट भुञ्जे साधु किरुप दुर्गति ॥
संयमे सहिले कष्ट किवा फलोदय ।
वर्णित हयेछे हेथा अति सुखमय ॥
चूलिका विविक्त चर्य्या द्वितीयस्थानीया ।
वहार परम तत्त्व शुन मनदिया ॥
चूलिकार द्वितीयेते आछे उपदेश ।
किरूपे संसारमार्गे हवे ना प्रवेश ॥
प्रतिस्रोतः कारी केवा भिक्षुर विहार ।
एकचर्य्या जागरणे आत्म समाचार ॥
प्रतिबुद्धजीवी केवा आर उपदेश ।
कथित हयेछे स्पष्ट इथे समावेश ॥२

दश-वैकालिक-सूत्र।

प्रथम अध्ययन।

त्रिपन्न आत्माके यिनि करेण धारण।
श्रेष्ठ हितकारी यिनि सदा सर्व्वक्षण॥
धर्म्म नामे तिनि हन विख्यात धराय।
अहिंसा संयम तपः धर्म्म बला याय॥
जीवहिंसा महापाप सर्व्वशास्त्रमते।
प्राणीर हननत्याग अहिंसा जगते॥
इन्द्रिय सकल हय पापेर आलय।
पापद्वाररुद्धकारी संयम निश्चय॥
बहुजन्मे जीव करि कर्म्म अष्टविध।
शोक ताप दुःख दैन्य भुञ्जे नानाविध॥
याहा द्वारा अष्ट कर्म्म हय सन्तापित।
पृथ्वीमाझे ताहा शुद्ध तपः नामे ख्यात॥
बाह्य ओ आन्तर तपः हय द्विप्रकार।
अनशन आदि बाह्य ध्यानादि आन्तर॥
धरमे आसक्त रय याहार पराण।
ताहाके प्रणाम करे देवता प्रधान॥१

देहेते आश्रित धर्म्म देह खाद्यपर ।
किरूप आहार्य्यरत साधक प्रवर ॥
वक्ष्यमाण उपमार मर्म्मार्थ बुझिबे ।
साधक भोजनविधि बुझिया चलिबे ॥
मधुर कुसुम रस बहुविटपीर ।
भ्रमर येमति पिबे क्षुधार्त्त सुधीर ॥
पीड़न करेणा कभु पुष्पमध्यभाग ।
आत्मार तर्पणहेतु शुधु अनुराग ॥२
वाह्य धन-कनकादि मिथ्यात्वादि रूप ।
आभ्यन्तर-ग्रन्थ-शून्य शान्तिर स्वरूप ।
श्रमण तपस्यारत धाइलोकवासी ।
अति शुद्ध आहारेर हन अभिलाषी ॥
पुष्पोपरि वसि करे मधु अण्वेषण ।
सर्व्वदोष मुक्त हये भ्रमर येमन ॥
गृहस्थेर दत्तखाद्य तथा दोषहीन ।
खुजिते तत्पर हन साधक प्रवीण ॥३
पूर्वोक्त आहार्य्यकथा शुनि शिष्य भाषे ।
करिव ना कारो नाश जीविकार आशे ।
पुष्पेर उपरे थाकि मधु करि पान ।
द्विरेफ करेणा पुष्प कखनउ म्लान ॥
सेइरूप साधुगण प्रतिज्ञा करिया ।
भिक्षा याचे दोषशून्य गृहेते याइया ॥४
मूलतत्त्वकथा साधु हन अवगत ।
सर्व्वेन्द्रिय वशवर्त्ती राखेन सतत ॥

मधुकर यथा भ्रमे भेदबुद्धिहीन ।
जाति कुल भेद तार तथा हय क्षीण ॥
स्थावरादि सर्व्वजीवहिते यत्नवान् ।
तुच्छाहारे परितृप्त हन महाप्राण ॥५

तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
चलितेछि पूर्वरूप करिओ धारणा ॥

॥ इति द्रुम-पुष्पिकाध्ययन समाप्त ॥

दश-वैकालिक-सूत्र।

द्वितीय अध्ययन।

पारेणाको निवारिते वासना याहारा।
सतत अपार दुःख पाइबे ताहारा॥
अनित्य वासनारूप अरिर अधीन।
हये दुःख पान साधु संयमविहीन॥
राज्यरक्षा ना करिले येमन राजार।
दुःख दैन्य शोक ताप आसे वारंवार॥१
त्यागी भोगी भिन्नपथे भवे करे वास।
भोगी भोगे करितेछे सतत प्रयास॥
चीनांशुक वस्त्र आदि नारी अलङ्कार।
धूप पुष्प गन्ध द्रव्य पर्य्यङ्क आधार॥
भोगीर पूर्वोक्त द्रव्य भोगेर साधन।
त्यजिया वासनायुत साधु त्यागी नन॥२
सुरस सुन्दर प्रिय भोग्य राशि राशि।
त्याग करे चिर साधु तेयाग प्रयासी॥
साधुकाछे प्रिय खाद्य कभु वा आसिले।
ग्रहणे विमुख हन ताइ त्यागी वले॥३

आत्मपरसमदृष्टि साधक सुजन।
केमने विपथे यान वलिव एखन॥
भोग्यतरे भ्रान्त चित्त विस्मरि साधन।
संयमेर वहिर्देशे करिछे गमन॥
असंयमे वहु दुःख हय आविर्भाव।
आत्मध्याने नाशे साधु मनेर प्रभाव॥
सेइ स्त्री आमार नय आमि नइ स्त्रीर।
भ्रमपूर्ण उभयेर सम्बन्ध गभीर॥
अनित्य विषय त्यागी मोहज वुझिया।
भोग राग दूर करे ध्यानस्थ हइया॥४
मनेर निग्रहे पूर्व्वे याहा अन्तरङ्ग।
वलियाछि एवे वलि शुधु वहिरङ्ग॥
मुनिवर कर तपः शुभ आतापना।
सौकुमार्य्य त्यागकर आत्मार यातना॥
संयम हइते उहा भ्रष्ट करे नरे।
सेइ हेतु साधुगण हेय वले तारे॥
वासना दुरन्त रिपु दुःखेर आधार।
तेयागिले यावे दुःख असीम अपार॥
कामेर आश्रय द्वेष आर राग मोह।
अपनीत कर सव अति भयावह॥
दृढ़ भावे पूर्व्वकथा स्मरिया चलिवे।
संसारे थाकिया दिव्य आनन्द लभिवे॥५
वड़इ चञ्चल मन स्थिर राखा दाय।
संयम संश्लिष्ट देह छाड़िवारे चाय॥

दृष्टान्त नेहारि साधु हवे स्थिरमति।
बाँधिवे चञ्चल मन प्रकाशि शकति॥
धूमकेतु दीप्तानले करिले प्रवेश।
प्राणिमात्र पाय दुःख असह्य अशेष॥
आगमे रहेछे तार दृष्टान्त अतुल।
बुझिया चलिवे साधु संहाय विपुल॥
अगन्धन सर्प राजी पुड़िते अनले।
तबु नाहि तोले विष शतमन्त्र वले॥
सेइ रूप साधु यम करिया ग्रहण।
मृत्युपणे पाले व्हा त्यजेना कखन॥६
यशस्कामिन् हे क्षत्रिय धिक्कार तोमाके।
जीवन संयत नहे विधिर विपाके॥
भोगरूप विष पिव जीविकार लागि।
उत्क्रान्त गरल पाने हओ अनुरागी॥
धारण अपेक्षा हेन मलिन जीवन।
तोमार संसारे एइ प्रशस्य मरण॥७
राजकन्या राजीमती[१] कुलाभिमानिनी।
परकाशि कुलख्याति-वलेन भामिनी॥
भोगराज उग्रसेन आमारि जनक।
धनमाने सुशासने प्रजार पालक॥
यदुवंश—नरपति समुद्रविजय।
ताँहार आपनि पुत्र अत्युच्च हृदय॥

---

१ परिशिष्टे राजीमतीर उपाख्यान लिपिवद्ध आछे।

एहेन प्रधान कुले कलङ्करोपण।
गन्धन सर्पेर मत अति अशोभन॥
ताइ वलि स्थिर चित्त ह'ये सर्व्वक्षण।
करूण मुनिर काम्य संयम पालन॥८
चञ्चल मनेर गति समीरण प्राय।
सेइ हेतु जीव भ्रमे यथाय तथाय॥
चित्तेर चाञ्चल्य दूर करे ना ये जन।
वहु दोषे दोषी सेइ शास्त्रेर वचन॥
सुन्दर ललना भवे आछे अगणन।
तादेर लागिया घटे कत अघटन॥
नेहारि ललना यदि काममत्त मन।
हय कामावेगे तव चित्तेर स्पन्दन॥
पवन प्रवाहे हड तरुर पतन।
संयम हइते हवे आत्मार पतन॥
ताइ वलि रथनेमि संयमेते व्रती।
संयम सोपाने चित्त स्थिर कर अति॥
ना राखिले चित्त स्थिर प्रमादे पड़िवे।
संसारसागरे पड़ि हावुडुवु खावे॥९
राजार कुमारी सेइ नामे राजीमती।
जनमिया राजकुले अतिधर्म्ममति॥
संयमादि शिक्षा करि पवित्रहृदया।
प्रचारे संयम धर्म विहारे याइया॥
संसारेर मोह हेरि करिया क्रन्दन।
जीवेर मुक्तिर वार्त्ता यथा तथा कन॥

रथनेमि नामे ख्यात क्षत्रिय नन्दन ।
राजीमतीमुखे शुनि संयम वचन ॥
विपथे चलिले करी अंकुश आघाते ।
यथा आने सुचालक निज हितपथे ॥
रथनेमि निजकर्म्मे करे अनुताप ।
राजीमती वाक्यवाणे घुचे याय पाप ॥
चारित्रथ धर्म्मेते हन अतिस्थिरमति ।
चिरअनुरक्त हन संयमेर प्रति ॥१०
विषय वासना ह'ते दूरे थाका दाय ।
समस्त विपद् आने वासना धराय ॥
नरश्रेष्ठ रथनेमि विख्यात जगते ।
राजीमती उपदेश पाइया वनेते ॥
भोगज वासना मोह दुर्वार नेहारि ।
संयमी हलेन तिनि ममता पासरि ॥
एहेन दृष्टान्त हेरि पण्डित सुजन ।
विषय वासना त्यजि भोगमुक्त हन ॥११
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्ण्णरुप करिओ धारणा ॥

इति द्वितीय श्रामण्यपूर्व्विकाध्ययन समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र।

तृतीय अध्ययन।

आगम कथित, सदास्थित, संयमेते।
आभ्यन्तर किम्बा वाह्य मुक्त ग्रन्थहते ॥
स्वपर-रक्षक यारा, तादेर कथित।
अनाचीर्ण दोष करा ना हय उचित ॥१
अनाचीर्ण दोष अति धर्म्मविगर्हित।
बुझि उहा हते साधु हइवे वर्ज्जित ॥
आहारेर काल सदा विचार करिया।
उल्लिखित चारि द्रव्य त्यजिवे स्मरिया ॥
साधुर उद्देश्ये याहा प्रस्तुत हइवे।
अथवा साधुर लागि किनिया लइवे ॥
एइ दुइ द्रव्य सदा बर्ज्जन करिवे।
आमन्त्रणे कोथा नाहि साधुरा याइवे ॥
कोथा हते आनि कोन द्रव्य ना लइवे।
स्नान आर रात्रिकाले भोजन छाड़िवे ॥
पुष्पमाल्य गन्धद्रव्य कर्पूरादि आर।
उत्तापे व्यजन त्याग करिवे पाखार ॥२

तृतीय अध्ययन ।

साधुगणपरित्याज्य प्रचुर विषय ।
त्यजिते करिवे पण छाड़िया संशय ॥
घृत गुड़ आदि द्रव्य करिया सञ्चय ।
राखिवेना निशाकाले साधु महोदय ॥
ना करिवे गृहस्थेर पात्रेते आहार ।
दोषावह उहा बुझि यति शुद्धाचार ॥
राजभोग्य प्रियखाद्य कखन ग्रहण ।
करिवेना भ्रमक्रमे विज्ञ साधु जन ॥
इच्छाक्रमे कृतखाद्य साधु ना लइवे ।
सुखार्थी देह ना कभु मर्द्दन करिवे ॥
प्रक्षालन ना करिवे दन्त साधुजन ।
अंगुलिर सहयोगे भ्रमेओ कखन ॥
ना करिवे कोन प्रश्न गृहस्थ नेहारि ।
"कि प्रकार आछ तुमि" मुखे व्यक्त करि ॥
ना हेरिवे मूर्त्ति निज आदर्शे कखन ।
मुक्ति-हेतु करि साधु सन्न्यासग्रहण ॥३
जुया खेलि नर सदा लभे परितोष ।
बलित्र अधुना ताइ अष्टापद दोष ॥
गृहस्थेर शिक्षादान कभु अष्टापदे ।
ना करिबे मुक्त साधु पड़िया प्रमादे ॥
पाशार साहाय्ये कभु द्यूतक्रिया करि ।
ना लइवे अर्थ साधु नीति परिहरि ॥

तृतीय अध्याय

धारण छत्रेर साधु बर्ज्जन करिवे।
निज परकीय स्वार्थ येहेतु बाड़िवे॥
व्याधिप्रतिकारे कभु तपःरतजन।
करिवेना चिकित्सार आश्रय ग्रहण॥
संयमेते समाहृत सुशील सुजन।
कभु ना पड़िवे जुता यति तपोधन॥
अग्निर आरम्भ दोष वर्ज्जन करिवे।
पालिया पूर्वोक्त नीति साधु सिद्ध हवे॥४
वलिव विस्तारि आर साधुदेर नीति।
पालिवे सतत साधु अति शुद्ध मति॥
ये करे वसति दान साधुरे कखन।
तार दत्त आहार्य्य ना करिवे ग्रहण॥
अतिक्षुद्र खट्टामध्ये पर्य्यङ्के कखन।
वसिवेना करिवेना साधुरा शयन॥
नेहारि साधुरा गृही व्याकुल काजेते।
ना यावे तादेर गृहे विना कारणेते॥
गृहमध्ये कभु किम्वा गृहसन्निधाने।
वसिवेना साधुजन विहीन कारणे॥
करिवेना कभु साधु शरीरघर्षण।
मयला करिते दूर सयत्ने कखन॥५
अन्नादिर सम्पादने सेवा करिवेना।
गृहस्थेर कोनकाले तपःरतमना॥

तृतीय अध्ययन।

निज गुरु वा धर्म्मेर करिवे पूजन।
ना लइवे श्रावकेर विनीत भजन॥
जाति कुल कर्म्म आदि करिया ख्यापन।
करिवेना साधुजन भिक्षार ग्रहण॥
उष्ण जल साधुगण पानार्थे लइवे।
सचित्त शीतल जल वर्जन करिवे॥
पिपासार्त्त वा क्षुधार्त्त हइया कखन।
ना करिवे पूर्व भुक्त द्रव्येर स्मरण॥
क्षुधाते रोगेते साधु आक्रान्त यखन।
ना लइवे श्रावकेर कखन शरण॥६
अनाचीर्ण दोष सदा परीक्षा करिया।
लइवे सतत खाद्य अवस्था बुझिया॥
सजीव मूलक आदा इक्षुखण्ड आर।
करिवेना भ्रमक्रमे साधुरा आहार॥
सद्य मूल काँचाफल बीज साधुगण।
करिवेना वज्रकन्द जीवित ग्रहण॥
ग्रहण करिले इहा साधुरा कखन।
अनाचीर्णदोषे हवे पापेते मगन॥७
निम्नस्थित कथा साधु स्मरिया सतत।
लवणेर व्यवहार हवे अवगत॥
आछे एइ धराधामे विविध लवण।
चिकित्सक रोग नाशे करेण ग्रहण॥

तृतीय अध्ययन ।

साधुरा करिले त्याग कथित लवण ।
अनाचीर्ण दोषमुक्त हवे सर्व्वक्षण ॥
सञ्चल सैन्धव याहा पर्व्वतेते जात ।
रुमाख्य सम्बरि कृष्णा समुद्रसम्भूत ॥
पांशुक्षार याहा हय ऊषर भूमिते ।
कृषक संग्रहि राखे आपन गृहेते ॥
सचित्त लवण साधु कभु ना लइवे ।
अनाचीर्ण दोष हते मुकति पाइवे ॥८
अनाचीर्ण दोष जैनशास्त्रे उल्लिखित ।
आछे वहु महाव्रती साधुर वर्जित ॥
धूपादिप्रदान वस्त्रे अथवा शरीरे ।
कभु ना करिवे साधुजन अकातरे ॥
औषधसेवन - द्वारा निषिद्ध वमन ।
वस्तिकर्म्म विरेचन करिवे वर्जन ॥
नेत्रेते काजल कभु ना पड़े सुजन ।
सौन्दर्य्यवृद्धिर तरे साधुरा कखन ॥
ना करिवे दन्तकाष्ठे साधुरा दातिन ।
ना करिवे तैलद्वारा अङ्गेर मर्द्दन ॥
देहेर सौन्दर्य्येर लागि कभु अलङ्कार ।
ना पड़िवे साधुजन भूषण धरार ॥९
पूर्व्व उल्लिखित सव अयोग्य आचार ।
अनुष्ठान योग्य नहे विदित सवार ॥

तृतीय अध्ययन ।

संयमे सतत युक्त निर्गन्थ सुयति ।
महावीर महाप्राण सदा शुद्ध मति ॥
अप्रतिवद्ध - विहार पवन - सदृश ।
करेन सतत भवे तपः परवश ॥१०
पांचटि आस्रवे अतितत्त्वज्ञ सतत ।
त्रिगुप्तिते सुसंयत षट्काये संयत ॥
जितेन्द्रिय रूजुमति निर्गन्थ याहारा ।
अनाचीर्ण दोषमुक्त हयेन ताहारा ॥
मिथ्यात्व अव्रत आर प्रमाद कषाय ।
इहाई अशुभयोग आस्रव निश्चय ॥
पञ्चास्रवत्यागे सदा वद्धपरिकर ।
हइवेन साधुजन स्वाध्याय तत्पर ॥
मनोगुप्ति वाक्यगुप्ति कायगुप्ति आर ।
त्रिविध विषये नित्य संयम याहार ॥
सर्व्वप्राणि हिंसा त्यजि हइया संयमी ।
त्यजेन पूर्वोक्त दोष हये मुक्तिकामी ॥११
ग्रीष्मे सहे सूर्य्यताप ध्यानस्थ हइया ।
शीते शैत्य भुञ्जे साधु वसन त्यजिया ॥
वर्षाकाले साधुगण देह सुसंयत ।
करिया ना भ्रमे कोथा आत्मध्याने रत ॥१२
साधुगण कोन कार्य्ये हन अग्रसर ।
वलिब अधुना ताहा शुन हितकर ॥

तृतीय अध्ययन ।

करम निर्ज्जरा लागि कष्टेर उदय ।
परीषह नामे ताहा ख्यात विश्वमय ॥
तज्जन्य पिपासा क्षुधा रिपु भयङ्कर ।
सर्व्वदा हयेन साधु दमने तत्पर ॥
त्यजिया विचित्र मोह ध्वंसेर कारण ।
साधुरा तपस्या ध्याने थाके अनुक्षण ॥
दुर्द्दान्त इन्द्रियगण करे दुःखदान ।
जय करि साधु करे दुःख अवसान ॥
शारीरिक मानसिक दुःखेर विनाशे ।
हयेन तत्पर साधु संयमेर आशे ॥१३
त्यजिया दुष्कर दोष अनाचीर्ण आदि ।
आतापन आदि दुःख सहि निरवधि ॥
साधुरा करेन काले त्रिदिवे गमन ।
करमेर अवशेष थाकार कारण ॥
अष्टविध कर्म्म याहा प्रकृत वन्धन ।
मुक्त हये मोक्षपथे करेन गमन ॥१४
देवलोक पुण्यमय अति मनोहर ।
भुञ्जे साधु पुण्यफले सुखेर आकर ॥
कर्म्मक्षये उहा छाड़ि मनुष्य लोकेते ।
आ'से सवे क्षुण्णमने मन देय हिते ॥
संयमतपस्या वले पौर्व्विक करम ।
क्षय करे साधुगण लभि दमशम ॥

तृतीय अध्ययन ।

स्व परेर त्राण हेतु करेण यतन ।
आत्ममुक्ति करि साधु योगे सिद्ध हन ॥१५
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्णरूप करिओ धारणा ॥
॥ इति क्षुल्लिकाचाराध्ययन समाप्त ॥

दश-वैकालिक-सूत्र ।

चतुर्थ अध्ययन ।

सुधर्म्मा नामक गुरु बलेन एकदा ।
जम्बुशिष्ये कथा एक परमशुभदा ॥
हे आयुष्मन् आमाहते करह श्रवण ।
जैनेन्द्रकथित एक सुसत्य वचन ॥
षड्जीवनिकानामे एक अध्ययन ।
केवल ज्ञानेर बले करि आलोचन ॥
बलेछेन तीर्थङ्कर सिद्ध महावीर ।
काश्यपगोत्रीय यिनि स्वभावसुधीर ॥
परे उहा युक्ति द्वारा अति स्पष्टरूपे ।
दियाछेन बुझाइया तिनिई संक्षेपे ॥
धरमप्रज्ञप्ति हय सर्व्वशास्त्रसार ।
पाठकरा हितकर एक्षणे आमार ॥
जिज्ञासे गुरुर काछे जम्बु सुविनीत ।
ज्ञानलाभे समुत्सुक हइया प्रणत ॥
षड्जीवनिकाध्ययन—नियम राशिते ।
धरमप्रज्ञप्ति आछे कोन नियमेते ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

धरमप्रज्ञप्तिपाठ मम हितकर ।
अतएव मोरे उहा बलुन सत्वर ॥
गुरु कन प्रिय शिष्य शुन मन दिया ।
वलिव सकल कथा एवे विस्तारिया ॥
केवल ज्ञानेर बले काश्यप श्रमण ।
महावीर तीर्थङ्कर सत्यपरायण ॥
षड्जीवनिकानाम बुझि अध्ययन ।
प्रकृत धरम तत्त्व करि निरूपण ॥
बुझाइया देन सबे माजितभाषाय ।
धरमप्रज्ञप्ति पाठे ताइ चित्त धाय ॥
शुन शिष्य वलि सेइ जीवेर प्रकार ।
छय रूपे जीव भवे करिछे विहार ॥
पृथ्वीकाय अपस्काय केह तेजस्काय ।
वायुवनस्पतिकाय केह त्रसकाय ॥१
आतपादि द्वारा पृथ्वी आहता निर्जीव ।
तदन्य पृथिवी हय सतत सजीव ॥
अनेक जीवेर वास पृथ्वीर भितरे ।
भिन्न भिन्न आत्मा थाके जीवेर शरीरे ॥
शीतातपे जल हय कखन निर्जीव ।
तद्भिन्न सलिल हय सतत सजीव ॥
अनेक जीवेर वास जलेर भितरे ।
भिन्न भिन्न आत्मा थाके जीवेर शरीरे ॥

चतुर्थ अध्ययन।

माटीजलनिर्वापित निर्जीव अनल।
तद्भिन्न अनल हय सजीव प्रबल॥
अनेक जीवेर वास अनलभितरे।
भिन्न भिन्न थाके आत्मा जीवेर शरीरे॥
जीव शून्य वायु दृष्ट हइवे कखन।
सजीव लक्षित हवे कभु समीरण॥
अनेक जीवेर बास वायुर भितरे।
रहेछे अनेक आत्मा जीवेर शरीरे॥
वनस्पति जीवहीन वह्नि आदि योगे।
तद्भिन्न उहारा हय सजीव भूभागे॥
अनेक जीवेर बास उहार भितरे।
अनेक रहेछे आत्मा जीवेर शरीरे॥
वनस्पति आछे विश्वे अनेकप्रकार।
बलिव उहार भेद करिया विचार॥
अग्रबीज मूलबीज केह पर्णबीज।
बीजरुहा संमूर्च्छिमा केह स्कंदबीज॥
तृणलता सकलेइ वनस्पति - काय।
सबीज सचित्त बलि प्रख्यात धराय॥
बहुबीज भिन्नसत्त्वा इहारा सकल।
अनल प्रभृति द्वारा निर्जीव केवल॥२
बहुविध त्रस प्राणी आछे एजगते।
केहजन्मे अण्ड हते केह पोत हते॥

चतुर्थ अध्ययन ।

जरायु हइते जन्म काहार वा हय ।
रस हते केह स्वेदे काहार उदय ॥
संमूर्च्छने जन्मे केह भूमि भेद करि ।
शय्यादिते उपपात रूप केह धरि ॥
त्रसेर विविध रूप प्रकृत लक्षण ।
वलिव एक्षणे उहा करहे श्रवण ॥
येजीव आसिते पारे प्राणीर सम्मुखे ।
पिछने आसिते पारे देखिया स्वचोखे ॥
देहेर करिते पारे सङ्कोच विकाश ।
कथा वलि येवा करे भावेर प्रकाश ॥
फिरिते पारे ये जीव एदिके ओदिके ।
दुःखेते विभोर हय भय यार थाके ॥
वुझे येवा सकलेर गमनागमन ।
त्रसजीव तारा हय वुझिवे सुजन ॥
इहादेर मध्ये आछे कीट-पतङ्गादि ।
द्वीन्द्रिय केह वा आछे केह त्रीन्द्रियादि ॥
चरिटि इन्द्रियधारी पञ्चेन्द्रिय केह ।
पूर्व्वोक्त नामेते तारा धरे निज देह ॥
तिर्य्यक् नारक देव मनुष्य प्रभव ।
सकलेइ सुख चाय लालसासम्भव ॥
उल्लिखित पूरवेर जीव षष्ठविध ।
त्रसनामे ख्यात हय जानिवे विवुध । ३

चतुर्थ अध्ययन ।

संघटन परितापनादि दण्ड भवे ।
दिवेना स्वयं साधु पृथ्वी आदि जीवे ॥
करावे ना काहा द्वारा दण्डेर विधान ।
ना करिवे दन्डकार्य्ये अनुमतिदान ॥
पूर्ण्ण विधि यथारीति वुझि साधुजन ।
निम्नरूपे अङ्गीकार करिवे पालन ॥
"आजीवन करिवना दण्डेर विधान ।
कायमनोवाक्ये जीव दुःखेर निदान ॥
अपरेर द्वारा जीवे दण्ड नाहि दिव ।
अनुमतिक्रमे दण्डे नाहि उत्साहिव ॥
प्राक्तन सावद्ययोग हइते निश्चित ।
शिष्य वले गुरो ! आमि हलाम निवृत ॥
अतीत दण्डेर कर्त्ता आत्मारे आपन ।
निन्दि गर्हि पाप हते करि विमोचन ॥४
वर्णित एक्षणे हवे महाव्रत पूत ।
साधुपरिज्ञेय इहा आगमलिखित ॥
शिष्यवले गुरो ! पूज्य ! हय महाव्रत ।
प्राणिहिंसादूरकारी जगते पूजित ॥
पूजनीय गुरो ! आमि सकल प्रकारे ।
जीवहिंसा त्यजितेछि थाकि एसंसारे ॥
त्रस स्थावरादि प्राणी साधु ना नाशिवे ।
काहा द्वारा प्राणिनाश नाहि कराइवे ॥

चतुर्थ अध्ययन।

प्राणिनाशे यत्नशीले ना दिवे प्रश्रय ।
सतत प्राणीर प्रति हइवे सदय ॥
त्रित्रिध करण योगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये थाकि आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देई ना सम्मति ।
जीवहिंसा महापाप भावि दिवाराति ॥
जीवहिंसाकारी, आमि, आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥
एसेछि प्रथम निते श्रेष्ठ महाव्रत ।
हिंसावृत्ति हते मुक्त हयेछि कथित ॥
आज हते हवे मोर हिंसार निवृत्ति ।
हृदये आसिवे मोर अहिंसा प्रवृत्ति ॥१
मृषावाद - विनिवृत्तिरूप - महाव्रत ।
द्वितीय स्थानीय इहा आगम कथित ॥
मम पूज्य हे भगवन् ! दोषेर आकर ।
छाड़ितेछि मृषावाद सकल प्रकार ॥
करिवेना साधु क्रोधे लोभे हास्ये भये ।
मृषावाद दोषावह ये कोन समये ॥
वलाइते पर द्वारा मिथ्यार भाषण ।
भ्रमेओ कभुना साधु करिवे यतन ॥
त्रिविधकरणयोगे आमि आजीवन।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

करिणा वा कराइणा देइ ना सम्मति ।
मृषावाद महापाप भावि दिवाराति ॥
प्राक्तन सावद्य योग हइते निवृत्त ।
हइतेछि हे भगवन् ! आमि मर्माहत ॥
मृषावादकारी आमि आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पाप हते करि विमोचन ॥
एसेछि द्वितीय निते श्रेष्ठ महाव्रत ।
मृषावाद हते मुक्त हयेछि कथित ॥२
शिष्य वले गुरो ! आमि त्याग शिक्षा चाइ
तृतीय लइते चाइ महाव्रत ताइ ॥
अदत्तादानेर तरे अति पापाचार ।
त्यजितेछि उहा आमि निम्नोक्त प्रकार ॥
ग्रामे वा नगरे वने करिया गमन ।
अदत्तपदार्थ साधु लवे ना कखन ॥
पदार्थ अनेक आछे अल्प अगणन ।
अचेतन सचेतन विचित्रगठन ॥
छोट वड़ लइवेना अदत्त कखन ।
करावेना परद्वारा अदत्त ग्रहण ॥
अनुमति नाहि दिवे अदत्तग्राहीके ।
अदत्त ग्रहणे दोष कहे सर्व्वलोके ॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन् ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

करिण वा कराइणा देइना सम्मति ।
अदत्तग्रहण पाप भावि दिवा राति ॥
कृत वा कारित याहा वा अनुमोदित ।
पापहेतु हइतेछि प्रतिक्रमरत ॥
अदत्तादानेर दोषे आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥
एसेछि तृतीय निते श्रेष्ट महाव्रत ।
दोष हते मुक्त आमि हयेछि कथित ॥३
मैथुनविरतिरूप आगम कथित ।
चतुर्थ स्थानीय गुरो ! एइ महाव्रत ॥
हे गुरो ! मैथुन हय अति पापाचार ।
त्यजितेछि आमि एवे सकलप्रकार ॥
देवता - मानुष-पशु - समन्धी मैथुन ।
करिवे ना साधु कभु जीवने कखन ॥
करावेना कार द्वारा सम्मति दिवेना ।
मैथुन अत्यन्त पाप करि विवेचना ॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
कराणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
मैथुन सर्व्वथा जने करे अधोगति ॥
हे गुरो ! करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
प्रतिक्रम करितेछि करि मनस्ताप ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

मैथुनजनितदोषे आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥
एसेछि चतुर्थ निते गुरो ! महाव्रत ।
उक्त दोष आमाहते हयेछे विगत ॥४

परिग्रहत्यागरूप आगम कथित ।
पञ्चम स्थानीय गुरो ! एइ महाव्रत ॥
परिग्रह हय गुरो ! अति पापाचार ।
छाड़ितेछि आमि एवे सकलप्रकार ॥
परिग्रह अल्प बहु अणु स्थूल हय ।
सचित्त अचित्त किम्बा ये कोन समय ॥
लइवेना उहा निजे जीवने कखन ।
करावेना नर द्वारा उहार ग्रहण ॥
अनुमति नाहि दिवे परिग्राहि - जने ।
परिग्रह महापाप आगमविधाने ॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
परिग्रह येइ हेतु करे अधोगति ॥
हे गुरो ! करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥
परिग्रह - दोषयुक्त - आत्मारे एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥

चतुर्थ अध्ययन।

एसेछि पञ्चम निते श्रेष्ठ महाव्रत।
परिग्रहदोषमुक्त हयेछि कथित॥५
रात्रिर भोजनत्याग साधुशुद्धाचार।
षष्ठ महाव्रत वलि हयेछे प्रचार॥
रात्रिर भोजन हय अति पापाचार।
त्यजितेछि गुरो! आमि सकलप्रकार॥
स्वाद्य खाद्य पानाहार रात्रिते सुमति।
करिवेना करावेना दिवेना सम्मति॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति।
जीव नाश करि जीव पाय अधोगति॥
हे गुरो! करिया थाकि यदि उक्त पाप।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप॥
रात्रिर भोजनदुष्ट आत्माके एखन।
निन्दि गर्हि पापह'ते करि विमोचन॥
एसेछि लइते षष्ट श्रेष्ठ महाव्रत।
दोष हते मुक्त आसि हयेछि कथित॥६
आत्मार हितेरतरे पञ्च महाव्रत।
रात्रिर भोजन त्याग षष्ठ उल्लिखित॥
ग्रहण करिया एवे आमि अभाजन।
आगम-विधान-मते करिव भ्रमण॥

चतुर्थ अध्ययन ।

महाव्रत युक्त भिक्षु भिक्षुकी वा भवे ।
सप्तदश - संयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादशविधाने यारा तपस्यानिरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म शत ॥
दिवसेर आगमने किम्वा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत ह्ले ॥
पृथ्वी भित्ति शिला लोष्ट्र वस्त्र वा शरीर ।
धूलिद्वारा समाच्छन्न निरखि सुधीर ॥
हस्त पाद् काष्ठ किम्वा कालिञ्ज अंगुली ।
शलाका शलाकायुत हस्तद्वारा भुलि ॥
लिखिवेना घाटिवेना भेदिवेना तारा ।
ऐरूप करावेना कभु अन्य द्वारा ॥
कर्म्मरत काहाकेओ दिवेना सम्मति ।
पालिवे पूर्व्वोक्त प्रथा जैनधर्म्ममति ॥
त्रिविध करणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
जीवनाश करि जीव पाय अधोगति ॥
हे गुरो ! करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥
पूर्व्वोक्त-दोषेते युक्त आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥१

चतुर्थ अध्ययन ।

संयत साधक भिक्षु भिक्षुकी वा भवे !
सप्तदश संयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादशविधाने यारा तपस्या - निरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म शत ॥
दिवसेर आगमने किम्वा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत हले ॥
जलेर जीवेर हिंसा कभु करिवेना ।
थाकिवे अहिंसापथे करि विवेचना ॥
तुषार वरफजल कूपस्थित जल ।
शिशिर कुयाशा हिम वर्षार सलिल ॥
जलसिक्त देह वस्त्र कभुना स्पर्शिवे ।
वारंवार स्पर्श करि नाहि निंड़ाइवे ॥
झाड़िवेना मारिवेना कदापि आछाड़ ।
शुकावेना वारंवार शुकावेना आर ॥
मानिया चलिवे साधु पूरव पद्धति ।
करिवेना करावेना दिवेना सम्मति ॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइना देइना सम्मति ।
जीवनाश हेतु लोक पाय अधोगति ॥
हे गुरो ! करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

पूर्व्वोक्त दोषेते युक्त आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥२
महाव्रतयुक्त भिक्षु भिक्षुकीवा भवे !
सप्तदशसंयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादशविधाने यारा तपस्यानिरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म,शत ॥
दिवसेर आगमने किम्वा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत हले ॥
अङ्गार अनल उल्का भष्मार्चि उल्लुक ।
ऊर्ध्व-मार्गे क्षेपिवेना विशुद्ध पाचक ॥
घाटिवेना ज्वालावेना निवावे ना यति ।
अन्य द्वारा कभु उहा करावेना व्रती ॥
तादृशकरमे हेरि कारे अग्रसर ।
सम्मति दिवेना कभु साधक प्रवर ॥
त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
याहाद्वारा पाय लोक अति अधोगति ॥
हे गुरो करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥
पूर्व्वोक्त दोषेते युक्त आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥३

चतुर्थ अध्ययन ।

महाव्रतयुक्त भिक्षु भिक्षुकी वा भवे ।
सप्तदशसंयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादशविधाने यारा तपस्यानिरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म शत ॥
दिवसेर आगमने किम्वा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत हले ॥
चामर व्यजन किम्वा तालवृन्त-योगे ।
तालपत्र भग्नपत्र शाखार प्रयोगे ॥
भग्नशाखा मयूरेर पाखा सहकारे ।
अथवा मयूर पाखा समन्वित करे ॥
वस्त्र वा वस्त्रेर अंश करि संचालन ।
अथवा प्रयोगकरि सहस्त वदन ॥
निजदेह किम्वा वाह्य द्रव्य समुदय ।
याहाते सजीव प्राणी सदा वद्ध हय ॥
करिवेना उहादेरे फुत्कार व्यजन ।
करावेना अन्य द्वारा उहा सम्पादन ॥
तादृशकरसे हेरि कारे अग्रसर ।
सम्मति दिवेना कभु साधकप्रवर ॥
त्रिविधकरण-योगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आसि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
याहा द्वारा पाय लोक अति अधोगति ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

हे गुरो ! करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥
पूर्व्वोक्त दोषेते युक्त आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥४
महाव्रत युक्त भिक्षु भिक्षुकी वा भवे ।
सप्तदश - संयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादश - विधाने यारा तपस्यानिरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म शत ॥
दिससेर आगमने किम्बा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत हले ॥
करिवे ना हिंसा कभु वनस्पतिकाये ।
वीजेर उपरे, वीजस्थित द्रव्य चये ॥
अंकुरस्थ द्रव्य किम्बा अंकुर कथित ।
क्षुद्रवृक्ष कोन द्रव्य उहार आश्रित ॥
दूर्व्वादि हरित किम्बा द्रव्य तदाश्रित ।
छिन्न वृक्ष फल-फुल शाखा समन्वित ॥
सजीव उहारा किम्बा द्रव्य तदाश्रित ।
अण्डादि काष्ठादि किम्बा कीटादिसंयुत ॥
इहादेर उपरेते करिवे सुजन ।
गमन दाँड़ान वसा सर्व्वथा वर्ज्जन ॥
चालावेना स्थापिवेना दिवेना सम्मति ।
मानिया चलिवे साधु धरम पद्धति ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

त्रिविधकरणयोगे थाकि आजीवन ।
कायमनोवाक्ये कभु आमि अभाजन ॥
करिणा वा कराइणा देइना सम्मति ।
याहा द्वारा पाय लोक अति अधोगति ॥
हे गुरो करिया थाकि यदि उक्त पाप ।
करितेछि प्रतिक्रम करि मनस्ताप ॥
पूर्व्वोक्त दोषेते युक्त आत्माके एखन ।
निन्दि गर्हि पापहते करि विमोचन ॥५
महाव्रतयुक्त भिक्षु भिक्षुकी वा भवे ।
सप्तदश - संयमेते युक्त सर्व्वभावे ॥
द्वादशविधाने यारा तपस्यानिरत ।
प्रतिहत प्रत्याख्यात पापकर्म्म शत ॥
दिवसेर आगमने किम्वा रात्रिकाले ।
एकाकी जाग्रत सुप्त सभागत हले ॥
त्रसकाय - जीवहिंसा कभु ना करिवे ।
जीवहिंसा महापाप साधुरा वुझिवे ॥
त्रसकाय जीवगण वहु नाम धरे ।
वर्णिव उहार नाम एवे सुविस्तारे ॥
कीट कुन्थु पिपीलिका-पतङ्ग वा थाके ।
हस्ते पादे जंघा-वाहु-उदर-मस्तके ॥
वस्त्र झाटा गुच्छे पीटे उन्दुक दण्डके ।
पादप्रोच्छने कम्वले पात्रे संस्तारके ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

अन्योपकरणे यदि उहारा वा थाके ।
यदि उहा साधुगण निज नेत्रे देखे ॥
निरखिया उहादेरे एकत्र करिवे ।
निरापद स्थाने साधु लइया याइवे ॥
सुविधाजनकस्थाने यतने राखिवे ।
असह्य संघर्ष दुःख कभु नाहि दिवे ॥६

अध्ययन चतुर्थेते आछे बहु कथा ।
जीवेर प्रकार भेद कवितोय गाथा ॥
जीवाजीव-स्वरूपादि उहाते विचारि ।
उपदेश धर्म्मफल चारित्र प्रचारि ॥
दियाछेन ग्रन्थकर्त्ता साधुरे चेतना ।
उल्लेखि विशेषरूपे जीवेर वेदना ॥
असंयत चले जीव सावधान नय ।
पापेते तत्पर सदा अति दुःखमय ॥
त्रस-स्थावरादि जीवे हिंसे सर्वक्षण ।
बद्ध हय पापकर्म्मे जीव अगणन ॥
परिणामे दुःख पाय अशेष प्रकार ।
नरकेर पथे याय विस्मरि विचार ॥१
दौड़ाइया अयतने नर नाशे शते ।
त्रस-स्थावरादि जीव पापकार्य्ये रत ॥
पापकार्य्ये बद्ध हय जीव करि भ्रम ।
परिणामे अतिदुःख पाय नराधम ॥२

चतुर्थ अध्ययन ।

वसि अयतने जीव स्थावरादि शत ।
नाश करे दुराचार नराधम यत ॥
पापे वद्ध हये सदा दुःख भयङ्कर ।
परिणामे पाय सदा पापासक्त नर ॥३
अयतने दिवारात्रि करिया शयन ।
नाशे त्रसस्थावरादि जीव नरगण ॥
पापवद्ध हये भवे विवेकविहीन ।
परिणामे पाय दुःख पापेते मलिन ॥४
हंसकाक जम्बुकादि खाय ये प्रकार ।
से प्रकारे खेये खाद्य विविध प्रकार ॥
चञ्चलप्रकृति नर वहादेर मत्त ।
नाशे स्थावरादि जीव जगते सतत ॥
पापवद्ध नर सदा विवेक - विहीन ।
परिणामे भुञ्जे क्लेश पापी पुण्यहीन ॥५
याहारा कखन साधु भाषार प्रयोग ।
करे नाइ दुराचार करि धन भोग ॥
याहा ताहा सदा वले वुद्धिहीन नर ।
त्रसस्थावरादि जीव नाशिछे विस्तर ॥
परिणामे पापवद्ध हये सर्व्वक्षण ।
अति दुःख पाय सदा भवे नरगण ॥६
वद्ध हये हिंसा आदि पापे सर्वक्षण ।
कि रूपे धर्म्मेर काज करे नरगण ? ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

चलिते थाकिते पाप अवश्य करिवे ।
वसिते शुइते पाप भक्षणे हइवे ॥
शरीरेर सञ्चालन करिवे ज्हाते ।
स्थगित किरुपे हिंसा हवे नरइते ॥७
हिंसा भिन्न जीवगण कोन कार्य्य करे ।
हिंसा पापे वद्ध नर अवनीमाझारे ॥
भ्रमणे शयने नर किम्वा अवस्थाने ।
भक्षणे करिछे पाप केवा कत जाने ॥
प्रतिकार किवा नर जानेना धराय ।
साधुमुखे कभु सेइ तत्त्व जाना याय ॥
कष्टप्रद भिक्षुव्रत साधुरा लइया ।
चलिवे अहिंस साधु सतर्क हइया ॥
इतस्ततः हस्त पद कभु ना फेलिवे ।
संयमे तत्पर हये साधु दौड़ाइवे ॥८
ये साधु प्राणीके सव देखे समज्ञाने ।
हिंसा आदि आस्रवेर तत्पर दमने ॥
जितेन्द्रिय थाके सदा तपस्या लइया ।
आगमोक्त विधिपाले सतर्क हइया ॥
पृथ्वी आदि जीव हेरि आपन समान ।
सुख दुःखे हय भागी प्रशास्तपराण ॥
सेइ भवे त्यजि पाप करे विचरण ।
हइवेना तार पाप-कर्म्मेर - वन्धन ॥६

चतुर्थ अध्ययन ।

पालन करिले दया साधु सिद्ध हय ।
सुज्ञानेर प्रयोजन तबे केन रय ? ॥
एइरूप शङ्का सदा साधुर हइबे ।
जीवदया कार्य्ये, ज्ञान सफल बुझिवे ॥
एइरूपे बुझे साधु विचार करिया ।
पवित्र उपाय कन सन्तोष लभिया ॥
प्रथमेते ज्ञानलाभ साधुरा करिबे ।
जीवरक्षा हेतु परे दया प्रकाशिवे ॥
अन्धतुल्य हले नर किरूपे चलिवे ।
पाप पुण्य केमने वा विचार करिवे ? ॥१०
ज्ञानलाभे कि उपाय शास्त्रकारमते ।
वर्णिव एक्षणे तार तत्त्व प्रकाशिते ॥
कल्याण स्वरुप दया पवित्र परम ।
इहाके बुझिते पारे पड़िया आगम ॥
असंयम अतिपाप दुःखेर कारण ।
पापेर चरम फल नरकगमन ॥
संयम ओ असंयम वहे भिन्न फल ।
हितकर पथे याय साधुरा केवल ॥
स्वकीय हितेर तरे संयमे थाकिया ।
भुञ्जे साधु चिरसुख प्रफुल्ल हइया ॥११
पृथ्वीकाय आदि जीव ना जाने येजन ।
हिरण्यादि अजीव ये बुझेना कखन ॥

चतुर्थ अध्ययन ।

ताहाके रक्षिते पारे किरुपे सेजन ।
केमनेवा से करिवे संयमे यतन ॥१२
जीवाजीव-ज्ञाने यवे तत्त्वज्ञान लभे ।
संयम वुझिते पारे साधु सर्व्वभावे ॥१३
ज्ञानेते करिया कर्म्म, धरि मनोवल ।
साधुरा लभिछे ताइ क्रियाय सुफल ॥
जीवाजीव-तत्त्वे यवे अभिज्ञ हइवे ।
नरकादि जीवगति वुझिते पारिवे ॥१४
कर्म्मेर विचित्र गति जीव प्राप्त हय ।
नरकादि वहुविध अति दुःखमय ॥
जानि साधु कर्म्मफल जीवेर सतत ।
पापपुण्य वन्ध मोक्ष वुझे समाहित ॥१५
पापपुण्य वन्ध मोक्षे लभि शुद्ध ज्ञान ।
माया मुक्त हत साधु स्थिर करे प्राण ॥
एजगते देवतार किम्वा मानुषेर ।
दुःखफल वुझे योगी सकल भोगेर ॥१६
देवतार मानवेर सारशून्य भोग ।
वुझिवे यखन साधु लभि आत्मयोग ॥
घृणाभावे देखिवेक विचित्र विषय ।
थाकिवेना क्रोध मान आदि विषमय ॥
आभ्यन्तर वाह्य द्रव्य आदि भोगचय ।
वहार संयोग साधु छाड़िवे निश्चय ॥१७

चतुर्थ अध्ययन ।

संसारे संयोग आछे विविध प्रकार ।
वाह्य आर आभ्यन्तर अलीक असार ॥
मस्तक - मुण्डन साधु वाह्यतः करिवे ।
भावाशक्ति दूर करि स्वगृह त्यजिवे ॥१८
द्रव्यभाव मुण्डनेते हये शुद्ध मति ।
गृहत्याग करि याय मुक्ति-कामी यति ॥
हिंसा आदि-रिपु बल नाशि साधु धाय ।
धर्म्मपथे सम्बरादि पालिया धराय ॥१९
उतकृष्ट सम्बर धर्म्म लभिया साधक ।
मिथ्यादृष्टि-प्राप्त कर्म्म, रजः अनर्थक ॥
आत्माते संलग्न याहा वेदना दायक ।
आत्मा हते सुविछन्न करे साधु लोक ॥
दृढ़ रूपे आत्ममुक्ति कर्म्म तजः हते ।
करि सुख भूञ्जे साधु विशुद्ध जगते ॥२०
मिथ्या कर्म्मरजः दूरे त्यजिया साधक ।
त्यजे मोह आवरण, शमादि नाशक ॥
दिव्य-ज्ञान लभे साधु, ज्ञेय विषयेर ।
अनन्त अशेष दृश्य वस्तु समूहेर ॥२१
साधुर हृदये यबे पूर्ण ज्ञानोदय ।
सम्पूर्ण दर्शन शक्ति साधु प्राप्त हय ॥
जिन साधु हन जेता रागेर द्वेषेर ।
केवली विज्ञानी हन बुझि तत्त्व ढेर ॥

चतुर्थ अध्ययन।

चतुर्द्दश-रज्जू—मित लोक सुविस्तार।
अलोक अनन्त साधु जानेन अपार ॥२२
लोक अलोकेर जानि तत्त्व साधुजन।
काय मनो देह वृत्ति करेन दमन॥
अचल-पर्व्वत-मत दृढ़ - बद्ध - मन।
सुस्थिर अवस्था एक साधु प्राप्त हन ॥२३
निरोधिया चित्त साधु योगेर प्रभावे।
अचल-पर्व्वत-मत स्थिरचित्त यबे॥
सर्व्वविध कर्म्म क्षय करि तपोबले।
कर्म्म रजः हते सदा चिर मुक्त हले॥
महान् पुरुष रूपे धरार भूषण।
निर्व्वाणेर शुभपथे करेन गमन ॥२४
कर्म्मक्षय करि साधु कर्म्म मुक्त हन।
आत्मार सिद्धिर पथे करेन गमन॥
त्रिलोक उपरे थाकि योगी योगरत।
लभे सिद्धि चिरन्तन नूसुर-बन्दित ॥२५
अक्षर सुखेर आशा करे येई जन!
भावि सुख लाभे यार लालायित मन॥
अतिक्रमि शुभवेला करेन शयन।
शरीर शोभाय जले अङ्ग प्रक्षालन॥
असाधु वलिया भवे कीर्त्तित येजन।
सुगति जानिओ तार ना हवे कखन ॥२६

চতুর্থ অধ্যয়ন।

ক্ষুধা বা পিপাসা সদা জয় করি অতি।
ক্ষমা সংযমেতে যার বদ্ধ মতি গতি॥
তপস্বী সরল তিনি লভেন সুগতি।
পালিয়া সর্ব্বদা শাস্ত্র পূতরীতি নীতি॥২৭
বৃদ্ধ কালে কাহারও না থাকে শকতি।
ত্যজিয়া সংযম ক্ষমা লভেন দুর্গতি॥
ঈদৃশ বার্দ্ধক্য কালে যেজন সংযত।
ব্রহ্মচর্য - সংযমেতে তপস্যায় রত॥
চলে যান তিনি ক্ষিপ্র অমরের ধামে।
মৃত্যুকালে, উক্ত আছে প্রসিদ্ধ আগমে॥২৮
লভিয়া চারিত্র ধর্ম্ম দুর্লভ জগতে।
সমদৃষ্টি পাত করি সাধক জীবেতে॥
কভু না করিবে হিংসা প্রমাদের বশে।
ধ্বংস শীল জীব হয়ে পাপের পরশে॥২৯
তীর্থঙ্কর মহাপূজ্য সাধক যাহারা।
দিয়াছেন উপদেশ হিতার্থে তাহারা॥
স্মরি সেই উপদেশ ত্যজি স্বকল্পনা।
বলিতেছি পূর্ব্বরূপ করিও ধারণা॥

ইতি ষড় জীবনিকা নামাধ্যয়ন সমাপ্ত।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

अध्ययन पञ्चमेर नाम पिन्डैषणा ।
उहार सम्यक् व्याख्या करिब अधुना ॥
थाकेना शरीर सुस्थ भोजन-व्यतीत ।
भोजन नियम मुनि पालिवे नियत ॥
आहार्य-ग्रहणे आछे वहुविध-नीति ।
पालन करिवे साधु उहा यथारीति ॥
धर्म्मकाय आहारेर विधान मानिवे ।
आहार्य्य-विषय सदा विचार करिवे ॥
भिक्षार समये मुनि हये अनाकुल ।
गमन करिवे पथे ना हवे व्याकुल ॥
स्थिरचित्त हये सदा पिण्ड शब्दादिते ।
विधिमत अनुष्ठान करि निज हिते ॥
आहार्य्य पानीय द्रव्ये परिपाटी-रूपे ।
करिवेक गवेषणा मुनि मुक्त पापे ॥१

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

भिक्षार समय हले साधुरा केमने ।
याइवेन शुद्धाचार-गृहस्थ - भवने ॥
वर्णिव अधुना सेइ प्रकृत विधान ।
पालि याहा साधुगण हवे फुलप्राण ॥
गमन करिवे साधु पथे अति धीरे ।
उद्वेग-रहित हये मुख्य-भिक्षा-तरे ॥
ग्रामे वा नगरे भिक्षा करिते ग्रहण ।
शान्त हये स्थिर चित्ते करिवे गमन ॥२
गमन-समये साधु शरीर प्रमाण ।
निरखिवे अग्रवर्त्ती गमनेर स्थान ॥
पृथ्वीकाय अपस्काय वनस्पतिकाय ।
गमनसमये प्राणी बहु देखा याय ॥
वाचाइया उहादेर प्राण मूल्यवान् ।
चलिवे साभीष्ट-पथे शास्त्रेर विधान ॥३
ऊर्ध्व काष्ठ गर्त्त आदि उच्चनीचस्थान ।
कर्द्दम-संयुक्त पथ करिवे वर्जन ॥
पाषाण वा काष्ठ युक्त पथे साधुगण ।
ना याइवे, अन्यपथे करिवे गमन ॥
ना थाकिले अन्यपथ सेपथे चलिवे ।
जीवरक्षा करि साधु सतर्के याइवे ॥४
पूरव कथित स्थाने पतित हइया ।
पाद प्रस्खलने किम्बा वेदना पाइया ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

स्थितत्रस-स्थावरादि प्राणिगण प्रति ।
साधुरा करिवे हिंसा अति रूष्टमति ।।५
संयत सुसमादित साधक सुजन ।
ना करिवे उक्त पथे कदापि गमन ।।
ना पाइले भिन्न पथ उपायविहीन ।
यावे सन्तर्पणे पथे साधक प्रवीण ।।६
धूलिमय पादद्वय हले साधुगण ।
कि कि द्रव्य त्यजि सदा करेन गमन ।।
वलिव उहार कथा अति विस्तारित ।
पालिया चलिवे साधु व्रते समाहित ।।
अङ्गारक क्षारराशि किम्वा तुषचय ।
गोमये राखिले पद धूलि-राशिमय ।।
धूलिमध्ये रहियाछे यत जीवगण ।
अवश्य मरिवे स्पर्शे वुझि तपोधन ।।
धूलियुक्त पद द्वारा साधु अहर्निश ।
करिवेना अतिक्रम पूर्व्वोक्त जिनिष ।।७
वर्षार वर्षण हेरि विज्ञ साधुजन ।
नेहारि धराय कभु तुषार पतन ।।
धूमाछन्न चारिदिक् अन्धकारे घेरा ।
महावाते काँपे जीव हये दिशाहारा ।।
असंख्य पतङ्ग पात, साधु निरखिया ।
कोथा ना याइवे शुध भिक्षार लागिया ।।८

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

निषेध गमने कोथा साधुर एक्षणे ।
वर्णना करिव ताहा आगम वचने ॥
याइवे ना कभु साधु वेश्यागृह पाशे ।
कलुषित सेइ स्थान पापेर परशे ॥
अष्टाङ्गमैथुनत्याग, ब्रह्मचर्य्य नाम ।
याहार आश्रये साधु हन सिद्धकाम ॥
वेश्याद्वारे उपजिवे चित्तेर विकार ।
परिणामे त्यजिवेक साधु शुद्धाचार ॥
जितेन्द्रिय साधु हन ब्रह्मचर्य्यरत ।
ध्यान-जप-परायण थाकेन सतत ॥
सेइ हेतु साधुजन वेश्यागृह-पाशे ।
याइवेना कोन काले कार्य्य-व्यपदेशे ॥९
वेश्यागृहे साधुजन करिले गमन ।
पुनः पुनः संसर्गेते हइवे पतन ॥
पीड़ा विराधना हय साधुर निश्चय ।
द्रव्य-चारित्रे जन्मे अत्यन्त संशय ॥१०
मोक्षार्थी एकान्तवासी संयत साधक ।
वेश्यागृह जानि सदा दुर्गति-कारक ॥
वर्ज्जन करिवे उहा बहु दूर हते ।
ना याइवे कदापिओ वेश्यार गृहेते ॥११
नव प्रसविनी गाभी कुक्कुर बलद ।
बालकेर क्रीड़ास्थान घोटक द्विरद ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

रणभूमि भयङ्कर कलहेर स्थान ।
त्यजिवेन दूरहते साधु महाप्राण ॥१२
जात्यादिर अभिमान साधु ना करिवे ।
त्यजि हास्य परिहास गम्भीर थाकिवे ॥
क्रोधादि दुरन्त रिपु जानि साधुलोक ।
तेयागिवे सदा याहा आने दुःखशोक ॥
स्पर्शादि इन्द्रिय दोप करिया दमन ।
तपस्याय रत हन साधु महाजन ॥१३
प्रयोजन बोधे किम्बा लाभेर आशाय ।
चलिवेना द्रुत पदे साधुरा कोथाय ॥
चलिते चलिते कथा काहार काछेते ।
अथवा काहार काछे हासिते हासिते ॥
याइवे ना साधुवर तपस्या निरत ।
राखिवेना भेदज्ञान साधु हितव्रत ॥
एजन प्रसाद वासी कुटीरे ए थाके ।
एजन ब्राह्मण जाति शूद्र वा अमुके ॥
उहार सुमिष्ट स्वर कर्कश उहार ।
परम सुघ्राणं एइ पुष्प मनोहर ॥
एरूप विचारि साधु कोथा ना चलिवे ।
विधिहीन हले साधु विपदे पड़िवे ॥१४
यखन भिक्षार लागि बाहिरे याइवे ।
साधुजन वक्ष्यमाण वस्तु ना हेरिवे ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

जानाला वा चित्रपट, गृहभित्ति, द्वार।
तस्कर-विहितसिंद, जलेर आगार॥
शङ्का स्थान बुझि उहा वर्ज्जन करिवे।
भ्रमक्रमे भिक्षाकाले कभु ना हेरिवे॥१५
राज्येर उन्नति तरे अति दृढ़ मन।
कोतयाल शेठ आर नरपतिगण॥
किरूप काहार शान्ति, कि दण्ड कहार।
एइ कार्य्यों करा यावे, किरूप विचार॥
मन्त्रणा करिया स्थिर करे येइ स्थाने।
लोकेर अज्ञात सारे अत्यन्त गोपने॥
क्लेशकर सेइ स्थान करिवे वर्ज्जन।
दूरहते हिततरे विज्ञ साधु जन॥१६
अभोज्य सूतक युक्त गृहेते गमन।
करिवेना कभु साधु भिक्षार कारण॥
आसिओ ना मोर गृहे इहा ये बलिवे।
साधुजन तार गृहे कभु ना याइवे॥
यथा गेले मने जन्मे अप्रीतिर भाव।
यावे ना सेखाने साधु सरलस्वभाव॥
यथा गेले हय प्रीत मानव-सकल।
भिक्षार्थे याइवे तथा मने राखि बल॥१७
गृह द्वार ढाका आछे चिक पर्दा द्वारा।
विना [illegible]शे उठावेना कखन साधुरा॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

श्रावकेर रुद्ध द्वार साधुरा भवने ।
आज्ञापेये खुलिवेना विशेष कारणे ॥१८
मलमूत्र त्याग करि पुनः भिक्षाकाले ।
मल ओ मूत्रेर वेग साधुर हइले ।
करिवेना वह्नादेर वेगेर धारण ।
ना हवे द्वितीय वारे नियम लङ्घन ॥
आज्ञाक्रमे गृहस्थेर जीव शून्य स्थान ।
खुजिया लइवे साधु पावे परित्राण ॥१९
यावे ना भिक्षार लागि किरूप गृहेते ।
वर्णिव अधुना ताहा जैनशास्त्र-मते ॥
ये घरे दरजा नीचा घोर अन्धकार ।
सूक्ष्मकीट दृष्ट कभु ना हय काहार ॥
ये ये स्थाने नेत्रशक्ति नष्ट हये याय ।
प्रवेश साधुर नय उचित तथाय ॥२०
याइवे किरूप गृहे कोथा ना याइवे ।
कोन गृह हते साधु फिरिया आसिवे ॥
वर्णिव एक्षणे सेइ नियम प्रधान ।
शुनिले साधुरा हवे प्रफुल्लपराण ॥
गृहे वा गृहेर द्वारे विक्षिप्त थाकिले ।
सजीव कुसुम वीज आर्द्र भूमि-तले ॥
लेपनेर जले द्वार गियाछे भिजिया ।
याइवे ना तथा साधु भिक्षार लागिया ॥२१

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

क्षुद्र वृष मेष आर कुकुर बालक ।
गृह द्वारे यदि थाके प्रवेशबाधक ॥
हटाइया पद द्वारा करि उल्लंघन ।
करेना प्रवेश गृहे साधुरा कखन ॥२२
दोषहीन गृहे साधु भिक्षार्थी याइया ।
करिवे किरूप कार्य्य कहिव वर्णिया ॥
हेरिया स्त्रीजन कभु श्रावकेर घरे ।
करिवेना स्थिरदृष्टि स्त्रीचक्षु उपरे ॥
उहा द्वारा अपरेर मनेर वेदना ।
कदापि जन्मिते पारे करिवे धारणा ॥
नाना रोग द्वारा कभु साधु कष्ट पाय ।
पूर्व्वोक्त कारणे साधु नारी ना ताकाय ॥
दानकारि-स्थित स्थान नयने हेरिवे ।
अति दूरे कभु साधु दृष्टि ना करिवे ॥
चक्षु विस्तारित करि देखिवेना धन ।
गृह परिच्छद आदि साधुरा कखन ॥
ना पाइले साधु भिक्षा फिरिवे तखन ।
करिवे ना दीन वाक्य कभु उच्चारण ॥२३
अवस्थार तारतम्य सम्यक् जानिया ।
भिक्षा योग्य स्थान कोथा देखिवे बुझिया ॥
उत्तम मध्यम किम्वा के हय अधम ।
भिक्षा दाने शक्ति कार आछे कि रकम ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

विचारि पूर्व्वोक्त तत्त्व लये अनुमति ।
भिक्षार निर्द्दिष्ट स्थाने यान सिद्ध-यति ॥२४
दाँड़ाइवे कोनस्थाने सुविज्ञ साधक ।
वर्णिव एक्षणे ताहा मङ्गलकारक ॥
परिमित-स्थान हेरि साधु दाँड़ाइवे ।
स्नान-स्थान पायखाना कभु ना हेरिवे ॥२५
जितेन्द्रिय साधु सदा करिवे वर्ज्जन ।
वक्ष्यमाण स्थानगुलि स्मरि प्रवचन ॥
भूमिभाग याहा हय जीव-पूर्ण सदा ।
जलपूर्ण पथ नाला यथा करे कांदा ॥
हरित वर्णेर यथा थाके वनस्पति ।
सजीव वृक्षेर वीज यथा करे स्थिति ॥२६
गृहद्वारे उपस्थित भिक्षार कारण ।
यदि देखे कोन भिक्षु, साधु तपोधन ॥
आनिले साधुर लागि पानीय आहार ।
उहा हते लइवेना अग्राह्य सवार ॥
लइवार योग्य याहा ग्रहण करिवे ।
वर्ज्जनीय वस्तु साधु साग्रहे त्यजिवे ॥२७
गृहिणी कखन भिक्षा आनिवार काले ।
भिक्षा हते किछु यदि क्षिपे भूमितले ॥
घटिले एमन कर्म्म गृहस्थेर वाड़ी ।
वलिवे तखन साधु दात्रीके नेहारि ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

अयोग्य तोमार भिक्षा लइवत्ता आज ।
करिवना कभु आमि धर्म्महीन काज ॥२८
प्राणी वीज वनस्पति हरित-वरण ।
पाद - द्वारा ये गृहिणी करेन मर्द्दन ॥
साधुर भिक्षार लागि जीवेर संहार ।
करिते प्रयासी नित्य छाड़ि शुद्धाचार ।
असंयमी सेइ यदि भिक्षा दिते आसे ।
कभुना लइवे भिक्षा याहा धर्म्म नाशे ॥२९
जीवयुक्त पात्र मध्ये आहार्य्य ये राखे ।
तुच्छ वोध करि सदा षड्जीवे देखे ॥
निक्षेपे अदेय वस्तु प्राणीर उपरे ।
सञ्चालित करे येवा सजीव पुष्पेरे ॥
जीवयुक्त जलदाने हय अग्रसर ।
लवेना ताहार भिक्षा साधकप्रवर ॥३०
सजीव सलिले दात्री यदि करे स्नान ।
सञ्चालित करि जल नाशे जीव प्राण ॥
आत्ममुखे आकर्षण करे लय जल ।
आहार्य्येर सह देय भिक्षुके केवल ॥
ना करिवे कभु साधु से भिक्षा ग्रहण ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा वलिवे तखन ॥३१
भिक्षाकाले यदि करे गृही प्रक्षालन ।
जीवयुक्त जले हस्त दाता वा भाजन ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

हस्तादि अर्पित भिक्षा दूषित वुझिवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा साधक वलिवे ॥३२
विन्दु विन्दु जल क्षरे यार हस्त हते ।
सजीव सलिल रय याहार करेते ॥
धूलि वा कद्दमभय करतल यार ।
हस्तमध्ये यार थाके हिङ्ग पांशुक्षार ॥
हरिताल मनःशिला किम्वा रसाञ्जन ।
हस्तेते रहेछे यार समुद्र-लवण ॥
सेइ हस्ते भिक्षा दिले कभु ना लइवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा वलिया चलिवे ॥३३
धातु, पीत, श्वेत माटी फिटकारी आर ।
आम ओ तण्डुल, पिष्ट, थाके करे यार ॥
हरितादि द्रव्य, शाक, भृष्ट द्रव्य चय ।
मसल्या-जड़ित-हस्त, यदि दृष्ट हय ॥
व्यञ्जन समूहे युक्त, अलिप्त वा यार ।
करतल, दृष्ट हय कालेते भिक्षार ॥
सेइ हस्ते भिक्षा दिले लवेना कखन ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा वलिवे तखन ॥३४
अन्नादि-अलिप्त हस्ते दाता वा भाजने ।
भिक्षा देन श्रावकेरा नित्य साधुगणे ॥
भिक्षा दान परे जले, करे प्रक्षालन ।
यदि हस्त दाता, भ्रमे अथवा भाजन ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

ताहार निकट हते आहार्य्ये ग्रहण ।
कभु ना करिवे जैन साधु विचक्षण ॥३५
जीवशून्य द्रव्य द्वारा, यदि लिप्त हय ।
भाजन वा हस्त हाता, भिक्षार समय ॥
उहांदेर द्वारा गृही भिक्षा यदि देय ।
यदि ताहे अन्य कोन दोष नाहि रय ॥
सेइ भिक्षा साधुगण सादरे लइवे ।
सर्व्वदा भिक्षार रीति साधुरा स्मरिवे ॥३६
एक सङ्गे दुइ व्यक्ति भोजने तत्पर ।
हेनकाले कोन साधु यदि अग्रसर ॥
भिक्षार प्रार्थना करि दांड़ाय सम्मुखे ।
एक जन भिक्षादाने शुधु इच्छा राखे ॥
ना लइवे सेइ भिक्षा कभु साधुजन ।
द्वितीय व्यक्तिर भाव बुझिवे तखन ॥३७
एक सङ्गे दुइ व्यक्ति भोजने वसिया ।
भिक्षादाने इच्छा करे भिक्षुक देखिया ॥
यदि अन्य कोन दोष ना थाके तखन ।
सेइ भिक्षा साधु जन करिवे ग्रहण ॥३८
अपरेर संगृहीत, लये गर्भवती ।
मिठाई मिष्टान्न द्रव्य पानीय प्रभृति ॥
भोजने प्रवृत्त यदि मनेर हरषे ।
आकण्ठ पूरिया खाय सन्तानेर आशे ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

सेइ भक्ष्य द्रव्य हते आनि कोनजन ।
किछुमात्र देय यदि साधुरे कखन ॥
सेइ भिक्षा ना करिवे साधुरा ग्रहण ।
खाद्य-शेष दिले शुधु लवे साधुजन ॥३६
दाँड़ाइया यदि कोन पूर्णगर्भा नारी ।
भिक्षादान-काले वसे नियम विस्मरि ॥
अथवा आसीना पूर्व्वे दाँड़ाइया परे ।
आतिथ्य आश्रम धर्म्म पालिवार तरे ॥
पानीय मिष्टान्न द्रव्य याहा तार आछे ।
समुत्सुक हये दाने, याय साधु काछे ॥
अयोग्य तादृश भिक्षा कभु ना लइवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा, साधक बलिवे ॥४०।४१
बालक बालिका यदि स्तन्यपान रता ।
परम सुखेते थाके क्रोड़े विराजिता ॥
माता किम्बा अन्य नारी स्तन्य दुग्ध दाने ।
सन्ताने पालिछे स्नेहे वसि फुल्ल मने ॥
नेहारि सहसा एक भिक्षुक सुजन ।
छाड़िया अपत्य यदि करेन गमन ॥
भिक्षा दिते साधु जने पानीय भोजन ।
स्तन्यहारा शिशु किन्तु आरम्भे क्रन्दन ॥
निरखि शिशुर दुःख कभु साधु जन ।
ना करिवे नारी हते से भिक्षा ग्रहण ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

वलिवे तोमार भिक्षा अग्राह्य आमार ।
भुलिया गियाछ तुमि यति व्रताचार ॥४२।४२
दोषयुक्त पानाहार वहुविध आछे ।
शङ्कार कारण उहा साधुदेर काछे ॥
उद्‌गमादि दोषयुक्त किम्बा दोषहीन ।
शङ्कार कारण याहा, बुझेना प्रवीण ॥
ना लइवे सेइ भिक्षा गृहस्थ भवने ।
बलिवे शङ्कित भिक्षा लइव केमने ॥
अभिप्रेत नहे भिक्षा वलि साधु जन ।
शङ्का स्थान परित्यजि करिवे गमन ॥४४
सचित्त जलीय कुम्भ शिला काष्ठासन ।
मृत्तिका चिक्कण वस्तु-आवृत भाजन ॥
तार मध्ये साधुतरे यदि खाद्य राखे ।
लवेना से भिक्षा साधु नेहारि स्वचोखे ॥
ढाका भिक्षा-पात्र खुलि भिक्षार समये ।
भिक्षा दिते चाय केह तत्त्व ना बुझिये ॥
वलिवे अयोग्य भिक्षा विधि-वहिर्भूत ।
लइवना इहा-मोर नहे अभिप्रेत ॥४५।४६
आहार्य्य, पानीय गृही खाद्य, स्वाद्य, आदि ।
प्रस्तुत करिया राखे दान हेतु यदि ॥
जाने यदि साधु इहा निज-बुद्धिवले ।
गृहस्थेर मुखे किम्बा उच्चारित हले ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

सेइ भिक्षा-द्रव्य, साधु लवेना कखन ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा बलिवे तखन ॥४७।४८
एइ रूप, यदि गृही पुण्येर लागिया ।
स्वाद्य, खाद्य, पानाहार, प्रस्तुत करिया ॥
साधुगणे दिते चाय हये हृष्ट मन ।
लइवेना सेइ भिक्षा साधुरा कखन ॥
अभिप्रेत नहे भिक्षा बलिया तखन ।
द्वार छाड़ि चले यावे जैन-साधुगण ॥४६।५०
कृपणेर जन्य खाद्य, स्वाद्य, वा पानीय ।
प्रस्तुत हयेछे गृहे, ताहादेर प्रिय ॥
जाने यदि, साधु इहा, निज बुद्धिवले ।
गृहस्थ काहार मुखे श्रुत वा हइले ॥
इष्ट नहे एइ भिक्षा बलि साधुजन ।
द्वार छाड़ि अन्यस्थले करिवे गमन ॥५१।५२
कोन गृही खाद्य, स्वाद्य, पानीय अशन ।
राखे यदि कराइते साधुर भोजन ॥
स्वयं जानिया साधु, मुखे वा काहार ।
शुने यदि उक्त कथा, विरुद्ध आचार ॥
दोषयुक्त पानाहार, कभु ना लइवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा दातारे बलिवे ॥५३।५४
दधि भात मिलाइया ये खाद्य हइवे ।
क्रय करि ये ये खाद्य गृहस्थ आनिवे ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

अयोग्य आहार याहा आधा-कर्म्म-दोषे ।
स्व ग्राम हइते याहा आहृत वा आसे ॥
साधुर उद्देश्ये यदि कभु पाककाले ।
रन्धन पात्रेते पुनः आर द्रव्य दिले ॥
हइवेक भ्रमक्रमे ये खाद्य प्रस्तुत ।
श्रावकेर गृहे याहा विधान वर्जित ॥
निजेर साधुर जन्य एकत्र मिश्रित ।
खाद्य याहा कोन गृहे हइवे प्रस्तुत ॥
ना करिवे कभु साधु से खाद्य ग्रहण ।
दोषयुक्त पानाहार करिवे वर्ज्जन ॥५५
भिक्षार ग्रहणे कभु, शङ्कार उदये ।
जिज्ञासा करिवे साधु संयत हृदये ॥
कि प्रकार समुद्भव काहा द्वारा कृत ।
काहार उद्देश्ये इहा हयेछे रक्षित ॥
जानिया प्रकृत तत्त्व संयत सुजन ।
निःशङ्के आहार शुद्ध करिवे ग्रहण ॥५६
पानाहार खाद्य स्वाद्य यदि भ्रमवशे ।
सजीव कुसुम वीज वनस्पति मिशे ॥
कल्पित नहे ए भिक्षा वलि तपोधन ।
चले यावे अन्य स्थाने भिक्षारकारण ॥५७।५८
अशन पानीय खाद्य, स्वाद्य वा राखिले ।
जलोपरि पिच्छल वा काइयुक्त जले ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

लइवेना सेइ द्रव्य कभु साधुजन ।
कल्पित आहार्य्य नहे वलिवे तखन ।।५९।६०
पानाशन खाद्य स्वाद्य अग्निर उपरे ।
रक्षित पूरवे आछे गृहस्थ-आगारे ।।
उक्त अग्नि स्पर्श करि यदि भ्रमक्रमे ।
आहार्य्य पानीय देय सरल साधुके ।।
ना लइवे उहा कभु विज्ञ साधुजन ।
अकल्पित खाद्य त्याज्य वलिवे तखन ।।६१।६२
चुल्ली मध्ये देय यदि पाचक हइया ।
अग्निर निर्व्वाण-भये काष्ठ वाड़ाइया ।।
खाद्येर जलीय अंश शोषण भयेते ।
वाहिर करिते थाके, काष्ट आँखा हते ।।
यदि वा सहसा हय अग्निर निर्व्वाण ।
भयेते चुल्लीते काष्ठ करे वा प्रदान ।।
अग्नितापे पात्रजल उथलिया पड़े ।
उहा हते किछु जल राखे अन्याधारे ।।
ये पात्रे व्यञ्जन छिल ताहा आनि पुनः ।
राखे यदि अन्य पात्रे गृहस्थ कखन ।।
पूर्व्वोक्त विधानेकृत पानीय भोजन ।
ना लइवे विज्ञ साधु भ्रमेओ कखन ।।
आँखार उपरे खाद्य राखिया यतने ।
भिक्षा दिते वहा ह'ते यदि किछु आने ।।

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

खाद्य-जल-वृद्धि-भये अग्निर उत्तापे ।
डहाते किञ्चित् जल यदि वा निक्षेपे ॥
करिवेना कभु साधु से खाद्य - ग्रहण ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा वलिवे तखन ॥६३।६४
वर्षाकाले पारापारे कोन स्थाने यदि ।
लम्बा काष्ठ, वड़ शिला, जमा इष्टकादि ॥
देखे साधु कम्पमान, गमन - समये ।
साधु तथा याइवेना जीवहिंसा-भये ॥
ये पथ प्रकाशशून्य अन्तःसार-हीन ।
जितेन्द्रिय याइवेना सेपथे कखन ॥६५।६६
निर्गमन सिड़ि पीठ चोकी वा खाटिया ।
कीलक कखन दात्री ऊद्र्ध्वेते तुलिया ॥
हर्म्म्यादि उपरे उठि साधुर कारण ।
आहार्य्य पानीय यदि करे आनयन ॥
अति दूरे आरोहण करि सिड़ि-योगे ।
हयेन पतित यदि भूमि निम्न-भागे ॥
हस्त पाद भग्न हये हिंसे पृथ्वी जीवे ।
पृथिवी आश्रित किम्वा अन्य जीवे भवे ।
एत वड़ दोष साधु जानिले कखन ॥
उच्चाहृत भिक्षा कभु ना करे ग्रहण ॥६७।६८
सूरण प्रभृति कन्द कटुपत्र शाक ।
विदारिका आदि मूल, काँचा वा आर्द्रक ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

कांचा घीया शाक, तालफल आदि ।
प्रलम्ब तुलसी, आम साधु सत्यवादी ॥
अनिष्टकारक जानि करिवे वर्ज्जन ।
सर्व्वेन्द्रिय-समाहित साधु तपोधन ॥७०
आपणेर कुलचूर्ण तिलपापड़ी आर ।
छातु, द्रवगुड़, पिठा मोदक काहार ॥
दोकाने विक्रीयमाण धूलिपूर्ण यदि ।
स्थापित रहेछे याहा दीर्घकालावधि ॥
ना लइवे कभु साधु जिनिप कथित ।
वलिवे दात्रीके नहे आहार्य्य कल्पित ॥७१।७२
ग्रन्थियुक्त सीताफल बहु काँटायुत ।
अनिमिष, फल विल्व अस्थिक कथित ॥
तेन्दुरुकी फल किम्वा वल्लादिर फल ।
इक्षुखण्ड ना लइवे साधु सत्यवल ॥
पूर्व्वोक्त फलेर केन निषेध-वचन ।
निम्ने तार हेतु वाद हवे प्रकटन ॥
फलादिते खाद्य थाके अति अल्पसार ।
अवशिष्ठ फेलि करे जीवेर संहार ॥
पूर्व्वोक्त आहार्य्य कभु साधु ना लइवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा दात्रीके वलिवे ॥७३।७४
वर्णादि संयुत जल किम्वा तद्रहित ।
गुड़-घट-धौतजल सुस्वाद - वर्जित ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

पिष्टक तण्डुल वारि अधुना वा धौत ।
पानीय तादृश साधु करिवे वर्ज्जित ॥७५
चिर धौत शङ्काशून्य, ये तण्डूल-जल ।
स्वबुद्धि-प्रत्यक्ष-ज्ञात, श्रुत वा विमल ॥
सर्व्वदोष-शून्य याहा साधुरा बुझिवे ।
सेइ जल अतियत्ने ग्रहण करिवे ॥ ७६
जीवशून्य, परिणत यद्यपि उदक ।
करिवे ग्रहण उहा निर्भय साधक ॥
यदि शङ्का थाके ता'ते लइवे आस्वाद ।
विनिश्चये दूर हवे साधुर प्रमाद ॥७७
निश्चय - करण विधि जलेर एखन ।
एइ स्थले स्पष्ट रूपे हइवे वर्णन ॥
येये साधु गृहि-गृहे विनय - सहित ।
वलिवे निम्नोक्त कथा आगम-विहित ॥
दिन जल मोरे किछु हस्तेर उपर ।
कल्पित मानस शङ्का घुचाइते मोर ॥
योग्य यदि बुझि उहा आस्वाद करिया ।
ग्रहण करिव उहा स्वभय त्यजिया ॥
कटु वा दुर्गन्ध युक्त उदक असार ।
तृष्णादूरे हइवे ना समर्थ आमार ॥७८
कटु वा दुर्गन्धयुक्त, यदि केह जल ।
तृषित भिक्षुर काछे आने मन्द-फल ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

तृष्णार निवृत्ति याहा करिवारे नारे ।
वलिवे ईदृश जल दिओना आमारे ।
दात्री हते हेन जल ना करि ग्रहण ।
अभिप्रेत नहे इहा वलिवे तखन ॥७९
तन्मनस्क अन्यभावे थाकि साधुजन ।
भ्रमे यदि उक्त जल करेण ग्रहण ॥
ना करिवे पान उहा तृषार्त्त हइया ।
करावेना समर्पण अन्यके भुलिया ॥८०
एकान्त निर्जीव स्थान करि निरीक्षण ।
निक्षेपिवे त्याज्य जल, करिया यतन ॥
निजेर वसतिस्थाने करि आगमन ।
प्रतिक्रम करिवेक सिद्ध तपोधन ॥८१
ग्रामान्तरे भिक्षा लभि साधक संयत ।
पिपासादि द्वारा हले अति अभिभूत ॥
भोजनेर इच्छा यदि मने हय तार ।
साधुर वसति सेथा ना थाके आवार ॥
भित्तिमूल मठादि वा खुजिया लइवे ।
धूलि आर बीजादिर वर्ज्जन करिवे ॥८२
प्राज्ञ साधु भूस्वामीर आदेश लइया ।
ईर्य्या प्रतिक्रम करि मुखे वस्त्र दिया ॥
यथारीति हस्तादिर करिया मार्ज्जन ।
करिवे संयत हये आहार ग्रहण ॥८३

অথ পংচম অধ্যয়ন প্রথম উদ্দেশ ।

ভক্ষণ সময়ে হয় যদি খাদ্যচয় ।
কণ্টক-কঙ্কর-অস্থি-তৃণ-কাষ্ঠময় ॥
অখাদ্য অপর-বস্তু খাদ্যে থাকে যদি ।
কিরূপে ওহার ত্যাগ করিবেন সুধী ॥৮৪
হস্ত দ্বারা ত্যাজ্য দ্রব্য ঊর্দ্ধ্বে ওঠাইয়া ।
নিক্ষেপ করেনা সাধু নিয়ম ভুলিয়া ॥
থুথু ফেলি ত্যাজ্য বস্তু না করে বর্জ্জন ।
হস্ত-যোগে কোন স্থানে রাখে সাধুজন ॥৮৫
শ্রাবক-আলয়ে সাধু জীবশূন্য স্থানে ।
ত্যক্তদ্রব্য মাটি দ্বারা ঢাকিয়া যতনে ॥
ঈর্য্যা পথিকের সূত্রে জ্ঞানী সাধুজন ।
করেণ তথায় বসি সুপ্রতিক্রমণ ॥৮৬
আহার্য্য পাত্রেরসহ বাসস্থানে আসি ।
যদি সাধু খাইবারে হন অভিলাষী ॥
আহারের স্থান যত্নে পরীক্ষা করিবে ।
মত্থএণবংদামীতি গুরুকে বলিবে ॥
সবিনয় প্রবেশিয়া গুরুর সদন ।
ঈর্য্যাপথিকের সূত্র করিবে পঠন ॥
পাঠ করি পূর্ণ্ণ মন্ত্র সাধু অকপট ।
করিবেক কার্য্যোৎসর্গ গুরুর নিকট ॥৮৭।৮৮
কাযোৎসর্গ ভিক্ষুকের বলিব এখন ।
যাহাতে ভিক্ষুর দোষ হইবে খণ্ডন ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

पानाहारे यातायाते अतिचार दोष ।
वुझिया देखिवे साधु लभिया सन्तोष ॥
उद्वेग - रहित - साधु सरल - हृदय ।
स्थिर चित्ते गुरु काछे कहे समुदय ॥
भिक्षार ग्रहणे साधु येरूप करेछे ।
उहाते किरूप दोष साधुर घटेछे ॥
इत्यादि विषय साधु गुरुके वलिवे ।
गुरु सने आलोचना साधुरा करिवे ॥८९।९०
अज्ञाने वा विस्मरणे सम्बन्धे भिक्षार ।
पूर्व्वे कर्म्म परकर्म्म ना करि विचार ॥
दोषयुक्त हले साधु स्मरि निज भ्रम ।
आलोचिया करिवेक शुभ प्रतिक्रम ॥
कार्य्योत्सर्गे वसि साधु करिवे चिन्तन ।
वक्ष्यमाण कथा साधु करि उच्चारण ॥९१
सम्यग्दर्शन ज्ञान ओ चारित्र-साधने ।
स्थित - साधुदेर देह-धारण-कारणे ॥
मोक्षेर साधन जन्य अहो जिनगण ।
करेन अपापावृत्ति नित्य प्रदर्शन ॥९२
नमो अरिहंताणं मन्त्रे करिया प्रणति ।
लोगस्स उज्जो अगरे मन्त्रेर संस्तुति ॥
चतुर्विंश - परिमित सयत्ने पड़िवे ।
स्वाध्याय करिया साधु विश्राम लभिवे ॥९३

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

निर्जरादि-लुब्ध साधु विश्राम करिया ।
निम्नोक्त करिवे चिन्ता स्वहित लागिया ॥
"अनुग्रह प्रकाशिया आमार उपर ।
यदि कोन साधुवर तपस्या-तत्पर ॥
लइतेन किछु खाद्य आहार्य्या हइते ।
पारिताम भवार्णव आमि उत्तरिते ॥९४
भोजनेर काले साधु स्नेह-प्रीत-प्राण ।
करिवेक यथाक्रमे साधुके आह्वान ॥
भोजनेइच्छुक केह थाकिले सेखाने ।
तत्पर हइवे साधु एकत्र भोजने ॥९५
निमन्त्रणे साधु खाद्य नाहि लय यदि ।
रागादि रहित हये त्यजि मक्षिकादि ॥
नीचे खाद्य ना फेलिया हस्त मुख द्वारा ।
प्रकाश-प्रधान-पात्रे खाइवे साधुरा ॥९६
शास्त्रोक्त विधाने प्राप्त मोक्षेर साधक ।
अपरेर जन्य कृत देहेर धारक ॥
तिक्त कटु अम्लयुक्त अथवा मधुर ।
कषाय लवणयुत भिक्षान्न साधुर ॥
समभावे पूत - मने साधक लइवे ।
मधु-घृत-समतुल्य भाविया खाइवे ॥९७
अरस विरस किम्बा व्यञ्जन संयुत ।
तद्रहित अकथने कथने अर्पित ॥

अथ पंचम अध्ययन प्रथम उद्देश ।

आर्द्र शुष्क कुलचूर्ण आर सिद्ध माप ।
अल्पमात्र विधिदत्त, शुद्ध यवमास ॥
निन्दिवेना अवहेलि उक्त खाद्य चये ।
अनिदानजीवी साधु संयत थाकिये ॥
खटिका चर्पटिकादि विना याहा प्राप्त ।
संयोजन आदि दोष हते याहा मुक्त ॥
सेइ रूप खाद्य साधु बुझिया लइवे ।
विशुद्ध आहार्य्य साधु सादरे भुञ्जिवे ॥९८।९९
स्वार्थहीन भिक्षादाता निःस्वार्थ भिक्षुक ।
जगते दुर्लभ अति उभये भावुक ॥
निःस्वार्थ ये भिक्षा देय निःस्वार्थे ये लय ।
परकाले शुभगति दोंहे प्राप्त हय ॥१००
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्व-कल्पना ।
वलितेछि पूर्वरूप करि ओ धारणा ॥

इति पंचम पिण्डैषणाध्यनेर प्रथमोद्देशावचूर्णि समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र।

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश।

तर्ज्जनीर द्वारा पात्र निःशेष मुछिया।
तर्ज्जनी-संलग्न खाद्य आस्वाद लइया॥
दुर्गन्ध सुगन्ध एक ना करि विचार।
पूर्व्वोक्त विधिते प्राप्त निर्दोष आहार॥
संयत साधक उहा भोजन करिवे।
उहा हते कदापिओ किछु ना त्यजिवे॥१
स्वाध्याय भूमिते किम्वा आवासे आसिया।
स्वाध्याय आवासे किम्वा गमन करिया॥
निकटस्थ मठादिते अत्यल्प आहार।
करि यदि प्राणरक्षा ना हय काहार॥
ताहा हले कि करिवे साधु महाशय।
वर्णित हइवे तार विधान-निचय॥२
आहारेर पुनर्व्वार हले प्रयोजन।
कि करिवे साधुवर कहिव एखन॥

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

प्रथमोक्त विधि किम्बा वक्तव्य विषये ।
करिवेक गवेपणा समाहित हये ।।३
भिक्षाकाले साधुगण भिक्षाय याइवे ।
भिक्षाशेषे यथास्थाने फिरिया आसिवे ।।
स्वाध्याय भिक्षादि कार्य्य निर्द्दिष्ट समये ।
करिवेक साधुजन संयत - हृदये ।।४
अकाले श्रावक गृहे भिक्षार लागिया ।
याइतेछे एक साधु देखिते पाइया ।।
बलितेछे अन्य साधु ताहाके विनये ।
याओ तुमि भिक्षा लाभे केन असमये ।।
विचार करना तुमि निज कालाकाल ।
योहाते शास्त्रेर दृष्टि रहेछे विशाल ।।
करितेछ इहा द्वारा आत्मार पीड़न ।
ग्रामादिर निन्दा-कथा वलि सर्व्वक्षण ।।५
पूर्व्व उक्त दोष साधु अकाल भ्रमणे ।
बुझिया केमने चले वलित्र एखने ।।
भिक्षाकाले भिक्षातरे साधुरा याइवे ।
यथाशक्ति पुरुपार्थ प्रयोग करिवे ।।
अलाभे भिक्षार साधु चिन्ता ना करिवे ।
आराधना करि कष्ट यतने सहिवे ।।६
भक्षण - कारणे पथे अनेक प्रकार ।
शोभना-शोभन प्राणी हेरि शुद्धाचार ।।

অথ পংচম অধ্যয়ন দ্বিতীয়োদ্দেশ।

যাইবে না কভু সাধু সম্মুখে আহার।
না দিয়া উহারে কষ্ট করিবে বিহার।।৭
গৃহস্থ ভবনে গত ভিক্ষার্থী কখন।
বলিবেনা ধর্ম্মকথা লবেনা আসন।।৮
অর্গল পরিখা দ্বার কপাট ধরিয়া।
থাকিবেনা দাঁড়াইয়া ভিক্ষার্থে আসিয়া।।৯
দরিদ্র কৃপণ নর, বিপ্র বা শ্রমণ।
ভিক্ষার্থে শ্রাবক গৃহে করে আগমন।।
ভিক্ষার্থী সাধক যেয়ে গৃহস্থের দ্বারে।
দেখে যদি সেই সব শ্রমণাদি নরে।।
অতিক্রমি উল্লঙ্ঘনে সাধক সুজন।
করিবেনা গৃহমধ্যে প্রবেশ কখন।।
দৃষ্টিপাত করি দ্বারে ভিক্ষুক উপরে।
দাঁড়াইয়া থাকিবেনা গৃহস্থ আগারে।।
যথাগেলে ভিক্ষুকের হয় অদর্শন।
দাঁড়াইবে একধারে পূত সাধুজন।।১০।১১
উল্লঙ্ঘি অপর ভিক্ষু সম্মুখে বা গেলে।
ভিক্ষুক, দাতার কাছে সাধু দাঁড়াইলে।।
লাভে বিঘ্ন উভয়ের উপস্থিত হয়।
দান ক্লেশ পায় গৃহী অপ্রীত -হৃদয়।।
প্রবচন - লঘুতার হয় আবির্ভাব।
যাহা দ্বারা নষ্ট হয় সাধুর প্রভাব।।

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

सेइ हेतु मुनिवर भिक्षार समये ।
दाँड़ाइवे एकधारे संयत हइये ॥१२
भिक्षाय निषेध दान भिक्षुक पाइया ।
निवर्तित हइयाछे साधुरा हेरिया ॥
आहार पानीय द्रव्य साग्रहे लइवे ।
संयत साधक परे चलिया याइवे ॥१३
कमल कुमुद किम्वा फल मल्लिकादि ।
सजीव आनिया दात्री छिन्न करे यदि ॥
तादृश आहार्य्य आर पानीय गृहीर ।
अकल्पित साधुदेर आगम विधिर ॥
सेइ हेतु उहा दिले साधु ना लइवे ।
अभिप्रेत नहे भिक्षा विनये वलिवे ॥१४।१५
मल्लिका उत्पल पद्म पुष्प अगणन ।
सजीव मर्द्दन करि गृहिणी कखन ॥
आहार्य्य पानीय द्रव्य प्रस्तुत करिया ।
भिक्षा दिते आसे कभु सुनीति भुलिया ॥
वलिवे अग्राह्य भिक्षा नहे अभिप्रेत ।
लइते ना पारे साधु विधान वर्जित ॥१६।१७
उत्पलेर कन्द शालु कन्द पलाशेर ।
उत्पल नालिका इक्षुदण्ड वा पद्मेर ॥
कन्द रम्य मृणालिका सचित्त पल्लव ।
सर्षप नालिका किवा वृक्ष तृणोद्भव ॥

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

अपरिणता हय यदि अस्रणक ।
प्रवाल वा वनस्पति हरितवर्णक ॥
कुमुद वा पर्ण्णवल्लि वर्ज्जन करिवे ।
भिक्षा ना लइया साधु चलिया याइवे ॥१८ १६
असिद्ध वंश-वरेला श्रीपर्णी वदर ।
वर्ज्जन करिवे साधु यतिव्रतधर ॥२०
कांचा निम्ब ना खाइवे तिलेर पापड़ी ।
संयत सज्जन साधु नियम विस्मरि ॥२१
शीतल सचित्तोदक पिष्टक तन्डुल ।
तिलेर पिष्टक कांचा सरिषाखइल ॥
पुर्व्वोक्त पदार्थ साधु वर्ज्जन करिवे ।
आहारेर विधि साधु मानिया चलिवे ॥२२
कपित्थ वा विजोरेका फल वा मूलक ।
मूलक कन्देर फली, अपक्व, साधक ॥
अशस्त्रपरिणत्त वा, कभु ना खाईवे ।
भ्रमेतेउ मने मने कभु ना चाहिवे ॥२३
विभीतक फल, किम्बा फल प्रियालेर ।
यवादिर चूर्ण, किम्बा चूर्ण वदरेर ॥
भिक्षा द्वारा लब्ध, हले साधु, सत्यपण ।
असिद्ध वा सचेतन करिवे वर्ज्जन ॥२४
मुनि उच्च नीच कुले याइवे संयत ।
सामूहिक शुद्ध भिक्षा पाइवे सतत ॥

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

याइवेना उच्चकुले नीच कुल त्यजि ।
उच्च नीच कुले यावे, मुनि भिक्षाभोजी ।।२५
दीनता विहोनमुर्त्ति करिया धारण ।
करेण जोविकावृत्ति मुनि अन्वेपण ।।
कभु ना हयेन तिनि दुःखदैन्यमय ।
योग्याहार ना मिलिले प्रशान्त हृदय ।।
लोभहीन आहारेर भावि परिणति ।
शुद्धाहार अन्वेपणे निरत सुयति ।।२६
आहार्य्यवाहुल्य थाके तदि श्रावकेर ।
गृहमध्ये वहुविध खाद्य स्वाद्य ढेर ।।
ना देय आहार्य्य कुंत गृहस्थ कृपण ।
मुनिके मनेर भ्रमे यदि वा कखन ।।
करिवे ना इथे राग साधु महामति ।
खाद्य दान गृहस्थेर येहेतु स्वकृति ।।
गृहस्थेर देय भिक्षा ना करि विचार ।
लइवे आहार्य्य करि क्रोध परिहार ।।२७
ना, देय प्रत्यक्षदर्शी गृहवासी यदि ।
शय्यासन वस्त्राहार किम्वा पानीयादि ।।
भ्रमक्रमे नीति भुलि, तंहार कारण ।
करिवेना क्रोध मुनि यति तपोधन ।।२८
भिक्षार्थी साधकवर कार गृहे गेले ।
स्त्री-पुरुष युवा वृद्ध वन्दना करिले ।।

অথ পংচম অধ্যয়ন প্রথম উদ্দেশ।

না চাহিবে ভিক্ষা কভু বিশিষ্ট সাধক।
চাহিলে হইবে দোষ বিপরিনামক॥
যাচনা করিলে যদি ভিক্ষা নাহি দেয়।
বলিবে না কটু বাক্য কদাপি কোথায়॥২৯
না হইবে ক্রুদ্ধ সাধু বন্দনা অভাবে।
করিবেনা, অহঙ্কার, রাজাদির স্তবে॥
ভগবদাজ্ঞা সাধু যে করে পালন।
অখণ্ড সাধুতাযুক্ত তাহার জীবন॥৩০
সরস আহার্য্য যাহা মদর্থে আনীত।
দেখাইলে তাহা স্বয়ং আচার্য্য পূজিত॥
লইবেন ভাবি তাহা করিয়া গোপন।
রাখে কোন সাধু যদি করিতে ভক্ষণ॥৩১
আত্মার্থে কল্মষকারী, লুব্ধ সেইজন।
করে পাপ বহুবিধ করিতে ভোজন॥
না জন্মে আহৃত খাদ্যে সন্তোষ যাহার।
না হয় ধৈরজ ত্যাগে, মুকতি তাহার॥৩২
আহার্য্য পানীয় লভি বিবিধ প্রকার।
পথে খেয়ে ঘৃতযুক্ত উত্তম আহার॥
বিরস বিবর্ণ খাদ্য আনয়ন করে।
গুরুর নিকটে কোন সাধু অকাতরে॥৩৩
পূর্ণরূপ কার্য্য করি সাধু অকাতরে।
বক্ষ্যমাণ চিন্তা সাধু পুষিছে অন্তরে॥

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

एई रूप कार्य्य साधु करे कि कारण ।
ताहार प्रकृत तत्त्व करिब वर्णन ॥
करुण धारणा मोर प्रति साधुगण ।
मोक्षार्थी हइया एई संयमी सुजन ॥
लाभालाभ प्रीत, करि असार सेवन ।
साधारण स्वार्थे हय सन्तोष प्रवण ॥३४
सम्मान सुख्याति, साधु पूजार कारणे ।
माया शल्य आदि पाप करेन जीवने ॥३५
केवल्यादि साक्षियुक्त साधक प्रवर ।
आत्मार संयम रक्षा करिते तत्पर ॥
ना पिवेन सुरा किम्वा माद्य रसचय ।
मेरकादि विगर्हित द्रव्य समूदय ॥३६
अधार्मिक चौर साधु मद्य पान करे ।
भावे यदि मोर कर्म्म अज्ञात संसारे ॥
ऐहिक वा पारत्रिक दोषदर्शी तार ।
समुद्धार आमा हते शुन सविस्तार ॥३७
मद्य-पायी साधुदेर आसक्ति ओ प्रीति ।
मद्ये वाड़े, हय परे स्वपर अख्याति ॥
मद्याभावे अशान्तिर वृद्धि हय अति ।
असाधुता निरन्तर वाड़े, अधोगति ॥ ३८
मद्यपायी सुदुर्मति स्वीय कर्म्मभीत ।
चौरेर सदृश हय उद्विग्न सतत ॥

অথ পঞ্চম অধ্যয়ন দ্বিতীয়োদ্দেশ।

ক্লিষ্টসত্ব, হইয়াও, মরণ-কালেতে।
সংবরের আরাধনা করেনা ভ্রমেতে॥ ৩৯
তথাবিধ মদ্যপায়ী না পূজে কখন।
ভক্তিভরে করযোড়ে আচার্য্য শ্রমণ॥
দুষ্ট শীল তারে জানি গৃহবাসিগণ।
নিন্দাকরে নিরন্তর তাকে আজীবন॥ ৪০
দুর্গুণ ধারণ করে মদ্যপায়ী জন।
অনায়াসে করে শুভ-সদ্গুণ বর্জন॥
ক্লিষ্টসত্ব ইহ্যা ও মরণ কালেতে।
সংবরের আরাধনা করেনা ভ্রমেতে॥ ৪১
মেধাবী তপস্যা করে ত্যজে স্নিগ্ধ রস।
মদিরা-প্রমাদ-শূন্য সাধু অনলস॥
আমি হই সুতাপস এইরূপ ভাবি।
কদাপি উৎকর্ষ বোধ করেনা মেধাবী॥ ৪২
যাহা হয়, জ্ঞানশালি—সাধুপুজিত।
করম নির্জরারূপ, তত্ব-সমন্বিত॥
মোক্ষের কারক, সেই, গুণের আধার।
সংযম, কীর্ত্তিব, আমি অতি শুদ্ধাচার॥
ধার্ম্মিক,সুজন প্রাজ্ঞ, যতি তপোধন।
আমাহতে উহা এবে করুন শ্রবণ॥৪৩
ধরি গুণ অপ্রমাদি, সাধু মহাজন।
করেন মরণ-কালে দুর্গুণ বর্জন॥

अथ पंचम अध्ययन द्वितीयोद्देश ।

संवर-धरम साधु करेन पूजन ।
निज-हित—प्रदशुभ मुक्तिर-कारण ॥ ४४
साधु यारा गुणवान् आचार्य प्रवरे ।
पूजा करे तारा भक्ति-श्रद्धासहकारे ॥
सेवाकरे गृहस्थेरा परम यतने ।
संयमी साधुके दृढ-भक्तियुक्त मने ॥ ४५
जप, तपः, व्रत, रूप, भाव वा आचार ।
प्रभृति-गुणेते हीन यार व्यवहार ॥
कपटता करि साधु निजे गुणवान् ।
अपर निकटे सदा देखाईते चान ॥
देवतार मध्ये तार अतिनीच स्थान ।
लब्ध हवे काले ईहा आगमविधान ॥ ४६
देव-भाव-प्राप्त साधु पापि—देवरूपे ।
लभेन जनम परे कपटता पापे ॥
वुभिते अक्षम तवु कि कारणे आमि ।
पाईतेछि हेन फल निम्नपथगामि ॥ ४७
देव लोक ह'ते साधु भ्रष्ट भवे हन ।
छागभापा वले नित्य वोवार मतन ॥
तिर्यग् ओ नारकी योनि काले प्राप्त हय ।
जैन धर्म्म प्राप्ति तार दुर्लभ निश्चय ॥४८
वलेछेन महावीर साधक प्रवर ।
ऊपदेशच्छले ताई आगम विस्तर ॥

অথ পংচম অধ্যয়ন দ্বিতীয়োদ্দেশ ।

অণুমাত্র, নিরখিয়া, নিত্য সাধুজন ।
মিথ্যাছল কপটতা করেন বর্জন ॥ ৪৯
আহার শুদ্ধির তত্ত্ব উত্তম জানিয়া ।
সংযত-সাধক-হ'তে শিক্ষিত হইয়া ॥
উত্তম সংযমী সাধু গুণশুদ্ধাচার ।
জিতেন্দ্রিয় হয়ে সদা করিবে বিহার ॥৫০
তীর্থঙ্কর মহাপুজ্য সাধক যাহারা ।
দিয়াছেন উপদেশ হিতার্থে তাহারা ॥
স্মরি সেই উপদেশ ত্যজি স্বকল্পনা ।
বলিতেছি পূর্ব্বরূপ করিও ধারণা ॥

ইতি পংচম পিণ্ডৈষণাধ্যয়নের দ্বিতীয়োদ্দেশাবচূর্ণি সমাপ্ত ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ षष्ठ अध्ययन ।

ज्ञान ओ दर्शने युक्त, तपस्या संयमे ।
आसक्त, विशिष्ट श्रुतधर, धराधामे ।।
साधुर तरण-योग्य—उद्याने, संस्थित ।
धर्म्मोपदेश प्रदाने नियत प्रवृत्त ।।
ईदृश, आचार्य वरे करयोड़े कन ।
राजवृन्द, राजामात्य क्षत्रिय ब्राह्मण—
अधुना प्रभो जैनेन्द्र, पूज्य आपनार ।
धर्म्मक्रिया कलापादि, चले कि प्रकार ? १।२।
राजादि कर्त्तृक पृष्ट, साधु जितेन्द्रिय ।
आचार्य-प्रवर, अति प्रशान्त-हृदय ।।
शास्त्र-ज्ञाने विचक्षण, जीवहितेरत ।
सर्व्वदाई आसेवन-सुखेते संयुत ।।
स्थिरचित्त, संयमेते रत, तपोधन ।
पुण्यमयी धर्म-कथा करेन वर्णन ।। ३

अथ षष्ठ अध्ययन ।

चारित्र्य धर्म्मे वा मोक्षे कामना संयुत ।
वाह्य-आभ्यन्तर-ग्रन्थि रहित, सतत ॥
साधुदेर एवे शुन क्रिया-कलापादि ।
भीम दुराश्रय, सेई अन्त हते आदि ॥ ४
दुष्कर, संयम धर्म्म, उहार आचार ।
पाईवेना, प्रवचने, कखन काहार ॥
संयम-भजनकारी, मुमुक्षु, सुजन ।
याहारा रहेछे विश्वे, तादेर कारण ॥
एखाने आचार धर्म्म येरूप वर्णन ।
जिन मतभिन्न शास्त्रे पावेना कखन ॥ ५
द्रव्यभावे समासक्त हये संसारेर ।
व्याधि-हीण रोगयुक्त वालक वृद्धेर ॥
देश विराधना-त्यागे अखण्ड, सतत ।
सर्व्व विराधना त्यागे अति अस्फुटित ॥
ये ये गुण राशि हय कर्त्तव्य धारणे ।
शुन मन दिया ताहा वलिव एक्षणे ॥ ६
वक्ष्यमाण अष्टादश स्थानेर आश्रय ।
करिया वालकेराओ अपराधी हय ॥
प्रमादवशतः यदि एक दोष रय ।
निर्गन्थ धरम हते साधु भ्रष्ट हय ॥ ७
दोषेर निदान, सेई अष्टादशस्थान ।
बर्णण करिब एबे शुन पुण्यवान् ॥

अथ षष्ठ अध्ययन ।

जीवेर विरोधी हय द्वादशस्थस्थान ।
छय व्रत, छय काया, दोषेर निदान (१२)
अकल्पनीय पिण्डेर कभु आहरण, (१३)
गृहस्थ-भाजन हते खाद्येर ग्रहण, (१४)
पालङ्के शयन, किम्वा आसन ग्रहण, (१५)
अकारणे गृहि-गृहे, समुपवेशन, (१६)
(१७) जलेते प्रमादे स्नान, शोभाय निरत, (१८)
अष्टादश-स्थान एवे हल उल्लिखित ॥ ८
साधक श्री वर्द्धमान, प्रथम स्थानीय ।
वलेछेन अहिंसाके सूक्ष्मरूपे ज्ञेय ॥
आधा-कर्म्मा-परिभोग कृतादि रहित ।
अहिंसाई सूक्ष्मा वलि हयेछे कथित ॥
सर्व्वभूत-विषयेते संयम-पालन ।
अहिंसा व्रतेर हय प्रधान लक्षण ॥ ९
ज्ञाता-ज्ञात, पृथ्विकाय—आदि यत प्राणी ।
त्रस आर स्थावरादि ना करिवे हानि ॥
निजे वा परेर द्वारा हत्या ना करावे ।
यथारीति जीवकुले यतने पालिवे ॥ १०
वाँचिते सकल जीव अभिलाष करे ।
मरिते कभु ना चाय, विश्वचराचरे ॥
साधुगण जीवभाव करि निरीक्षण ।
प्राणि-वधयोग्य कार्य करेन वर्ज्जन ॥ ११

অথ ষষ্ঠ অধ্যয়ন।

নিজের পরের জন্য ক্রোধভয়যুত।
বলিবে না মিথ্যা কথা হিংসুকে সংযত॥
অপরের দ্বারা কভু অনৃত ভাষণ।
বলাবেনা সাধুগণ ভ্রমেও কখন॥ ১২
এজগতে সর্ব্ব সাধু কর্ত্তৃক নিন্দিত।
সর্ব্বত্র সকলে জানে ভাষণ অনৃত॥
অনৃত ভাষণে হয় বিশ্বাসের নাশ।
সাধু ছাড়িবেক, মিথ্যা কথন প্রয়াস॥ ১৩
সচেতন যাহা হয় অচিত্ত, অথবা।
যাহা কিম্বা মূল্যমাপে অত্যল্পবহুবা॥
দণ্ডের শোধনে তাহা লইবেনা যতি।
বিনাদেশে কখনও অতি শুদ্ধমতি॥
পুর্ব্বোক্ত, অদত্ত বস্তু, যতি তপোধন।
দোষকর, অপবিত্র, বুঝিয়া তখন॥
নিজে স্বীয় প্রয়োজনে না করে গ্রহণ।
গ্রহণ করাতে পরে না করে যতন॥
পরের গ্রহণে কভু না দেন প্রেরণা
গ্রহণের অনুমতি কাহার থাকেনা॥ ১৫
দুর্গতির হেতুভূত, ব্রহ্মচর্য্যনাশ।
দুরাশ্রয়, প্রমাদ বা, পাপের বিকাশ॥
না করেন ভ্রমক্রমে বিস্মরি সুনীতি।
চারিত্রাতিচারে ভীত, তপোরত যতি॥ ১৬

অথ ষষ্ঠ অধ্যয়ন।

মৈথুন—সংসর্গ হয়, পাপের কারণ।
মহাদোষ উহা দ্বারা হয় প্রবর্দ্ধন॥
নির্গন্থ বুঝিয়া সদা অধর্ম্ম মৈথুন।
সর্ব্বভাবে, যথারীতি, করেন বর্জ্জন॥১৭
মহাবীর বাক্যে রত, সাধু মহোদয়।
রাত্রিতে রাখেনা কাছে নিম্নদ্রব্যচয়॥
তূল, ঘৃত, দ্রবগুড়, সামুদ্র লবণ।
যাহা হয় অচেতন কিম্বা সচেতন॥১৮
তীর্থঙ্কর, গণধর, ব্রহ্মচর্য্য-রত।
মনেতে ধারণা, হেন করেন সতত॥
সঞ্চয়ের লোভ-হেতু করে যে সঞ্চয়।
গৃহস্থ বলিয়া তারে সর্ব্বলোকে কয়॥
প্রব্রজিত সাধুবর না করে সঞ্চয়।
ত্যাগধর্ম্মে রত সাধু লোভমুক্ত হয়॥১৯
সংযম লজ্জার্থে, সাধু পাদের পুঞ্জন।
বস্ত্র, পাত্র, কম্বলাদি করেন ধারণ॥
সতত সংযত-চিত্ত, প্রাজ্ঞমুনিগণ।
মূর্চ্ছাদি-রহিত হ'যে ভোগে রত হন॥২০
বস্ত্রাদির ব্যবহার, সাধুরা করিবে।
পরিগ্রহ নহে উহা নিশ্চয় জানিবে॥
কারণবশতঃ উহা ব্যবহৃত হয়।
আসক্তিই পরিগ্রহ, নাহিক সংশয়॥২১

অথ ষষ্ঠ অধ্যয়ন ।

যোগ্য ক্ষেত্রে, যোগ্যকালে, আগম-বিধানে ।
বস্ত্রাদি-সহিত যুক্ত, হন সাবধানে ॥
জীবিকা-নির্ব্বাহ-কল্পে তৎপর হইয়া ।
পরিগ্রহ লন সাধু মমতা ত্যজিয়া ॥
ধর্ম্ম-কার্য্যে রত, সাধু জ্ঞাততত্ত্বসার ।
করেনা মমতাবুদ্ধি দেহেতে তাহার ॥২২
অহো কি বিস্ময়কর, সাধুর বিধান ।
শ্রবণে উল্লাসে মগ্ন সবার পরাণ ॥
দোষের অভাব, গুণ-বৃদ্ধিহেতু, আর ।
চিত্তস্থিরকারী তপঃ-কর্ম্মের প্রচার ॥
করেছেন, তীর্থংকরগণ এধরায় ।
সাধুদের ধর্ম্মে, ভাবি—শুভ কামনায় ॥
অনুকূল বৃত্তি হয় সংযম—রক্ষণ ।
দ্রব্যভাবে একবার আহার্য্যগ্রহণ ॥
নিত্যতপঃকর্ম্ম উহা বলে সাধুজন ।
ইহাতে সংশয় কারো হয়না কখন ॥২৩
ত্রস ও স্থাবর প্রাণী অতি সূক্ষ্ম দেহ ।
রাত্রিতে ভোজনে ব্যস্ত ঘুরে অহরহ ॥
দিবাতে সাধক জীব দেখিবারে পায় ।
সাবধানে চলে তাই, জীবের রক্ষায় ॥
না হেরিয়া উহাদের রাত্রিতে ভোজন ।
কেমনে করিবে সাধু করি বিচরণ ॥২৪

অথ ষষ্ঠ অধ্যয়ন।

সবীজ, জলার্দ্র, খাদ্য আর সূক্ষ্ম প্রাণী।
ভূমিতে পতিত যারা, সাধক সুজ্ঞানী॥
পারে বরং দিবসেতে বর্জ্জন করিতে।
রাত্রিকালে কিরূপেতে পারিবে চলিতে॥২৫
মহাবীর উচ্চারিত, হিংসারূপ পাপ।
আত্মবিরোধনা আদি অতি মনস্তাপ॥
নিরীক্ষণ করি সাধু রাত্রির ভোজন।
ভ্রমক্রমে কদাপিও না করে গ্রহণ॥২৬
ত্রিবিধ করণ যোগে, সংযত সাধুরা।
তপঃসমাহিত-কায়মনোবাক্য দ্বারা॥
করেনাকো হিংসা কভু পৃথ্বী জীবগণে।
তত্পর থাকেন সদা জীবের রক্ষণে॥২৭
পৃথ্বীকায়—জীবগণ—হিংসক মানব।
তদাশ্রিত—বহুবিধ—দৃশ্যাদৃশ্য সব॥
ত্রস-স্থাবরাদি-জীবদিগকে সততঃ।
হিংসাকরে পাপমতি, জগতে নিয়ত॥২৮
দুর্গতি বর্দ্ধক, অতি হিংসা দোষ ঘোর।
আচরি কিরূপ ফল হইবে সাধুর॥
বুঝি তার পরিণাম, সাধু আজীবন।
পৃথ্বীকায়—জীবে হিংসা করিবে বর্জ্জন॥২৯
ত্রিবিধ করণ যোগে সংযত সাধুরা।
তপঃ সমাহিতকায়মনো বাক্য দ্বারা॥

अथ षष्ठ अध्ययन ।

हिंसा ना करिवे कभु जलकायगणे ।
तत्पर थाकिवे सदा जीवेर रक्षणे ॥३०
जलकाय—जीवगण—हिंसुक मानव ।
तदाश्रित—वहुविध—दृश्यादृश्यसव ॥
त्रस स्थावरादि जीवदिगके सतत ।
हिंसा करे पापमति जगते नियत ॥३१
दुर्गति वर्द्धक अति हिंसा दोष घोर ।
आचरि किरुप फल हइवे साधुर ॥
वुझि तार परिणाम साधु आजीवन ।
जलकाय जीवे हिंसा करिवे वर्ज्जन ॥३२
चारिदिके तीक्ष्णधार अस्त्र ये प्रकार ।
हस्तेते ग्रहणे कष्ट हय दुर्निवार ॥
सेईरुपे पापकर अग्निप्रज्वालन ।
करिते चाहेना साधु धर्म्मपरायण ॥३३
पश्चिम उत्तर पूर्व्व ऊद्ध्वाधः दक्षिण ।
सर्व्वदिके, अग्निकरे दाह्येर दहन ॥३४
प्राणीर आघात हेतु, अग्नि दुराशय ।
एविषये काहारओ नाहिक संशय ॥
आलो हेतु, शीतनाशे, अग्नि प्रज्वालन ।
करिवेना कोन काले साधुरा कखन ॥३५
दुर्गतिवर्द्धक, अति हिंसा-दोष घोर ।
आचरि किरुप फल हइवे साधुर ॥

अथ षष्ठ [illegible]

बुझि तार परिणाम साधु आजीवन ।
अग्नि-प्रज्वालन-क्रिया करिबे बर्ज्जन ॥३६

ताल वृन्त आदि द्वारा शरीरे ब्यजन ।
वहु-पाप-दोषयुक्त, वहिर मतन ॥
बुझिया विशेषरूपे साधक सुजन ।
कभु ना करेन भ्रमे बायुर सेबन ॥३७

वृक्षशाखा हेलाइया, तालवृन्ते, पत्रे ।
व्यजन करेना साधु अभिप्राय मात्रे ॥
अपर जनेर सुखे साधुरा कखन ।
ना करेन धर्म्मतरे काहाके ब्यजन ॥३८

पाद प्रक्षालनकर गामछा, कम्वल ।
बस्त्र, पत्र, हय याहा साधुर सम्वल ॥
उहा द्वारा व्यजनादि करेना कखन ।
राखेन यतने उहा शुधु तपोधन ॥४६

दुर्गति बर्द्धक अति हिंसा दोष घोर ।
आचरि किरुप फल हइवे साधुर ॥
बुझि तार परिणाम साधु आजीवन ।
वायु-सञ्चालनक्रिया करिवे बर्ज्जन ॥४०

त्रिविध करण योगे संयत साधुरा ।
तपः समाहित, कायमनो वाक्य द्वारा ॥
हिंसा ना करिवे कभु वनस्पति काये ।
करिबे उहारे रक्षा मनप्राण दिये ॥४१

अथ षष्ठ अध्ययन ।

बणस्पतिकायगण-हिंसुक मानव ।
तद्राश्रित वहुविध दृश्यादृश्यसव ।।
बहुविध त्रस—जीबदिगके सतत ।
हिंसा करे पापमति जगते सतत ।।४२
दुर्गति वर्द्धक, अति हिंसा दोष घोर ।
आचरि किरूप फल हइबे साधुर ।।
बुझि तार परिणाम साधु आजीवन ।
बनस्पति काये हिंसा करिवे वर्ज्जन ।।४३
त्रिविध-करण-योगे संयत साधुरा ।
तपः समाहित-कायमनो वाक्य द्वारा ।।
हिंसा ना करिवे कभु भ्रमे त्रस-काये ।
करिवे उहारे रक्षा मनप्राण दिये ।।४४
त्रस-काय जीवगण हिंसुक—मानव ।
तद्राश्रित वहुविध दृश्यादृश्य सब ।।
वहुविध त्रसकाय दिगके सतत ।
हिंसा करे पापमति जगते नियत ।।४५
दुर्गति बर्द्धक, अति हिंसा दोष घोर ।
आचरि किरूप फल हइबे साधुर ।
बुझि तार परिणाम साधु आजीवन
त्रस काय जीव हिंसा करिबे बर्ज्जन । ४६
चारि प्रकारेर खाद्य, अभक्ष्य यतिर ।
बिरुद्ध सतत उहा आगम विधिर ।।

अथ षष्ठ अध्ययन।

तेयागिया पाप खाद्य सदा मुनिगण।
संयम-धरम-पुण्य करिबे पालन ॥४७
ना लइबे वस्त्र, पात्र, खाद्य किंवास्थान।
अकल्पित उक्त याहा कभु मतिमान्॥
कल्पनीय याहा भवे साधुरा लइबे।
योग्यायोग्य सर्व्वस्थले बुझिया देखिबे ॥४८
नित्य आमन्त्रित पिण्ड, क्रीत वा आहृत।
श्रावक श्राविका द्वारा साधु जन्य कृत॥
एमन आहार्य्य करे ये अनुमोदन।
स्थावरादि वधे तिनि द्रव्य साधु हन ॥४९
निमन्त्रित उद्देशिक क्रीत पानाहार।
ग्रहणेर योग्य नहे करिया विचार॥
महासत्त्व, धर्म्मजीवी, संयम-प्रधान।
ना करि ग्रहण उहा करेन वर्ज्जन ॥५०
कांसार बाटी वा थाला, पात्रे वा मृण्मय।
पानाहारे, सदाचार भ्रष्ट, साधु हय ॥५१
पूर्व्वोक्त भोजन पात्रे, करिया आहार।
शीतल सचित्त जले करि परिष्कार॥
प्रक्षालन माज्र्जनेते वारिकाय हाय।
जीवन त्यजिछे कत संख्या करा दाय॥
गृहीर पात्रेते ताइ भोजने निरत—
जनेर, संयमहानि दृष्ट हय कत ॥५२

অথ ষষ্ঠ অধ্যয়ন ।

আহার করিলে পাত্রে গৃহীর কখন ।
পরে গৃহী প্রক্ষালনে নাশে জীবগণ ॥
পুরঃ কর্ম্ম আহারের প্রারম্ভে সতত ।
পাত্র প্রক্ষালনে গৃহী নাশে জীব শত ॥
এহেন দূষিত কর্ম্ম ঘৃণিত সবার ।
গৃহি পাত্রে সাধুলোক করেনা আহার ॥৫৩
আসন, পর্য্যঙ্ক, কুর্সী, গৃহস্থ-কল্পিত ।
সিংহাসন কিম্বা মঞ্চ অতি সুশোভিত ॥
উল্লিখিত দ্রব্যোপরি সাধুরা কখন ।
বসিবেনা শুইবেনা করিবে বর্জ্জন ॥৫৪
তীর্থংকর বাণী যারা পালনে তৎপর ।
নির্গ্রন্থ সংযমী সদা সজ্জন প্রবর ॥
আসন্দী পালঙ্ক গদী বেতের আসনে ।
কভু না বসিবে তারা সুখের কারণে ॥৫৫
আসন্দী পর্য্যঙ্ক আদি আসন প্রচয় ।
প্রকাশ-রহিত হয়, জীবের আশ্রয় ॥
উৎপীড়ন ঘটে সদা বসিলে আসনে ।
ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র জীবদের ভবে সর্ব্বক্ষণে ॥
বুঝি মুনি দোষ হেতু সিদ্ধ তপোধন ।
আসন্দী পালঙ্ক আদি করেন বর্জ্জন ॥৫৬
গৃহস্থের গৃহে যদি বসে শুদ্ধাচার ।
মিথ্যাত্ব-অর্জনে তাঁর হয় অনাচার ॥৫৭

षष्ठ अध्ययन ।

वसिले गृहस्थ—घरे कत अनाचार, ।
साधुर भाग्येते घटे वर्णिव एवार ।।
वसुन एखाने एई आज्ञा भंग करि,
ब्रह्मचर्य्य सदाचार नाशे ब्रह्मचारी,
निषिद्ध प्राणीर वध-हेतु साधुजन ।
संयम हारान शुभ सदा सर्व्वक्षण ।।
प्रतिकूल वार्त्तालापे क्रोध उपजय ।
गृहस्थेर घरे वसा कभु भाल नय ।।५८
इन्द्रियादि निरीक्षणे गृहस्थ भवने ।
काम भावे नाश पाय ब्रह्मचर्य्य मने ।।
उत्फुल्ल लोचन नारी करि दरशन ।
वहुभय, पतनेर, हय सर्व्वक्षण ।।
कुभाव वर्द्धनकारी स्थान अशोभन ।
दूर हते साधुवर करिवे वर्ज्जन ।।५९
अभिभूत, जरा द्वारा वृद्ध साधुगण ।
व्याधि द्वारा समाक्रान्त तपः परायण ।।
पूर्व्वोक्त त्रिविधभावे हये समन्वित ।
वसिवेन गृहिगृहे शास्त्रेर कल्पित ।।
भिक्षाटने असमर्थ साधु शक्तिहीन ।
वसेन भिक्षार्थी लभि गृहस्थ भवन ।।६०
नीरोग रोगी वा साधु अभिलाषी स्थाने ।
हइवे आचारभ्रष्ट आचार विहने ।।

षष्ठ अध्ययन ।

जलकाय-जीव आदि-हिंसार कारण ।
संयमेर नाशे हय साधुर पतन ।।६१
सुपिर ओ पोली भूमि-स्थित नदी जले ।
द्वीन्द्रियादि सूक्ष्मजीव यथातथा चले ।।
स्नानकाले वहुजन जल आलोड़ने ।
चालित काहारे करे डूवाय काहारे ।।६२
जीवेर रक्षार हेतु व्रतपरायण ।
वर्ज्जन करेन साधु स्नान आजीवन ।।
शीतल उत्तप्त जले ना करिया स्नान ।
दारुण अस्नान व्रत करेन रक्षण ।।६३
चन्दनादि कल्क लोध्र कुंकुम केसर ।
नानाविध गन्धयुक्त द्रव्य वा अपर ।।
ना करि लेपन देहे ना करि मार्ज्जन ।
साधु करे आमरण स्नानेर वर्ज्जन ।।६४
केशेर मुण्डन सह मनेर मुण्डन ।
करि चिरतरे ये वा करे विहरण ।।
दीर्घ केश नखयुक्त, विरत मैथुने ।
एहेन साधुर शोभा कोन प्रयोजने ? ६५
शारीरिक शोभा वृद्धि करिवार तरे ।
दारुण अशुभ भिक्षु करम आचरे ।।
पूर्व्वोक्त करम फले, वन्धनेर तरे ।
पतित हतेछे भव दुस्तर सागरे ।।६६

षष्ठ अध्ययन ।

तादृश भीषण कर्म्म—हेतुभूत हय ।
शरीरेर शोभावृद्धि सकल समय ॥
शारीरिक शोभा द्वारा यतिर अशेष ।
चिरोर मालिन्य दोष हय समावेश ॥
स्वकीय वा अपरेर रक्षक सुजन ।
विभूषासेवाय, कभु नाहि रत हन ॥
तीर्थङ्कर पूर्व्वरूप धारणा करिया ।
दियाछेन उपदेश प्रसन्न हइया ॥६७
संयम ओ सरलता-गुण विभूषित ।
यथार्थ-तत्त्वेते ज्ञानी साधक पूजित ॥
अशान्त-आत्माके शान्त पवित्र करिया ।
निरमल भावनाय आसक्त थाकिया ॥
पुराकृत पापचय करेन विनाश ।
नव पापार्जने थाके नाहि अभिलाष ॥६८
प्रवल, मानव रिपु, क्रोध, दुर्निवार ।
वशीकृत, सुविजित हयेछे याहार ॥
वन्ध हेतु, मोहकर-ममता असार ।
तेयागिया सदा यारा करेन विहार ॥
धनधान्य आदि कत आछे नानाकारे ।
परिग्रह आभ्यन्तर वाह्य चराचरे ॥
विरत सतत यारा परिग्रह ह'ते ।
आत्मार वन्धनमुक्त सतत करिते ॥

षष्ठ अध्ययन ।

इहलोक सुखप्रद - कुविद्या विहीन ।
परलोक हितकरी विद्याय प्रवीण ॥
षट्काय जीवेर सदा रक्षक याहारा ।
शारदीय चन्द्र तुल्य राजेन ताँहारा ॥
ताँहादेर कर्म्मफल हय अवसान ।
सिद्धि मार्गे चले यान लभि देवयान ॥६६
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
बलितेछि पूर्व्व रूप करिओ धारणा ॥

इति षष्ठ धर्मार्थकामाध्ययन समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

सप्तम अध्ययन ।

शब्दावधारणे आछे भाषा चतुर्विध ।
स्वरूप - निर्णये रत हवेन विबुध ॥
सत्य-व्यवहारिकेर शुद्ध ये प्रयोग ।
उहातेइ करिवेन चित्तेर नियोग ॥
असत्य, सर्व्व प्रकारे मिथ्या सत्ययुत ।
वलिवेना भापा द्वय नीति वहिर्भूत ॥१
भाषा याहा सत्य किन्तु, पीड़ाप्रदायिनी ।
अव्यक्तव्य याहा भवे अश्लीलरूपिणी ॥
सत्य मिथ्यायुक्त भापा, पश्चीते कथित ।
मिथ्या याहा शास्त्रमते हय अभिहित ॥
तीर्थङ्कर मते याहा व्यवहृत नय ।
सेइ भाषा वलिवेना प्राज्ञ महोदय ॥२
ये भाषा मिश्रित नहे सत्य ओ मिथ्याय ।
पापहीन, सत्य याहा कोमल धराय ॥
प्रशस्त सुमिष्ट सेइ भाषा चमत्कार ।
असन्दिग्ध वलिवेन साधक उदार ॥३

सप्तम अध्ययन ।

कर्कश वा पापपूर्ण सदा-कालव्यापी ।
मोक्ष-प्रतिकूल याहा सत्य ओ यद्यपि ॥
एहेन भाषाय उक्ति नीति बहिर्भूत ।
कभु ना करिबे धीर जैन - धर्मरत ॥४
आसितेछे एइ नारी गाहिछे सङ्गीत ।
तथामूर्त्ति भाषा रूपे हयेछे वर्णित ॥
तथामूर्त्ति भाषा किम्वा नहे तथ्यमय ।
वाक्य ये वा वले सेइ पापयुक्त हय ॥
मिथ्या वाक्य वला सदा अभ्यास याहार ।
तार कथा सुधी माझे कि वलिव आर ॥५
तथामूर्त्ति भाषा हय किन्तु सत्ययुत ।
पापेर कारण हय तथ्य - विरहित ॥
दृष्टान्त उहार निम्ने वर्णिव एक्षणे ।
मर्म्मार्थ बुझिवे तार साधु निज ज्ञाने ॥
"संसारेर वहुविध विघ्नेर कारणे ।
याइव आगामी कल्य वलिव सेखाने ॥
अवश्यइ हवे कृत कार्य्य टि आमार ।
कल्य वा करिव आमि समाप्ति इहार ॥
एइ साधु सेवारत धर्म्मपरायण ।
करिवे अवश्य सेवा आमार एखन" ॥६
भविष्यते शङ्कायुक्त, ये भाषा कथने ।
किम्वा भीतिप्रदा याहा, भूत वर्त्तमाने ॥

सप्तम अध्ययन ।

तेयागिया सेइ भापा धीर साधुवर ।
वलिवेन शुद्ध भापा साधनातत्पर ॥७
अज्ञात त्रिकाले अर्थ आछे ये भापार ।
विचारिया ज्ञात नहे किम्वा तत्त्व तार ॥
"निश्चित एरूप उहा" प्रकाशि गौरवे ।
अङ्गीकार करि उहा कभु ना वलिवे ॥८
शङ्का यदि हय, भापा कखन वलिते ।
भव्य वर्त्तमान काले अथवा अतीते ॥
"एरूप हइवे भापा" अङ्गीकार करि ।
कभु ना वलिवे साधु भावार्थ विस्मरि ॥९
भव्य वर्त्तमान काले अथवा अतीते ।
त्रिकालेइ शङ्काशून्य ये भापा वलिते ॥
"एइरूप एइभापा" निर्भये वलिवे ।
कोनरूप दोपे साधु लिप्त ना हइवे ॥१०
ये भापा आघात देय पञ्चमहाभूते ।
निष्ठुर अत्यन्त याहा असह्य जगते ॥
यदिओ से भापा नरे, सत्य वलि कय ।
वलिवेना सेइ भापा साधु महोदय ॥११
क़ानाके साधक कभु वलिवे ना काना ।
छिन्न मुष्के क्लीव नामे कभु वलिवेना ॥
व्याधित जनेरे साधु वलिवे ना रोगी ।
चौर्य्य कार्य्ये रत जने वलिवे ना दागी ॥१२

সপ্তম অধ্যয়ন।

ইহা ভিন্ন অন্য অর্থে ভাষা ব্যবহারে।
যদি বা কাহার মন মর্ম্মাহত করে॥
আচার ও ভাবদোষ-তত্ত্বজ্ঞ সুযতি।
বলিবেনা সেই ভাষা অতি শুদ্ধমতি॥১৩
মূর্খকে হালিক কিম্বা জারজকে গোল।
দুর্ভগ, কুকুর, নামে অথবা ছিনাল॥
ডাকিবেনা সাধু কভু সত্যব্রতপণ।
যাহাতে আঘাত মনে পায় নরগণ॥১৪
বলিবে না সাধু কভু অবাচ্য বচন।
হে আর্য্যিকে হে প্রার্থিকে করি সম্বোধন॥
পিপিমা মাসিমা, অম্ব দুহিতঃ কখন।
পুত্র পৌত্রী ভাগিনেয়ী করি উচ্চারণ॥১৫
হলে হলে অন্যে ভট্টে বসুলে স্বামিনি।
হে হোলে অথবা গোলে অথবা গোমিনি॥
সাধুজন না করিবে উক্ত সম্বোধন।
আবাসে পথেতে সদা নেহারি স্ত্রীজন॥১৬
উচ্চারি স্ত্রীলোক-নাম সাধুরা কহিবে।
দেবদত্তে ধর্ম্মব্রতে বলি সম্বোধিবে॥
বিস্মরি প্রকৃত নাম গোত্র উল্লিখিবে।
প্রশস্য কাশ্যপ গোত্রে ইত্যাদি বলিবে॥
গুণ দোষ বিচারিয়া বয়স জাতির।
আধিপত্য ধনৈশ্বর্য্য বস্তু প্রভৃতির॥

सप्तम अध्ययन ।

धर्म्मशीले धर्म्मव्रते करि सम्बोधन ।
आलाप करिवे साधु यति तपोधन ॥१७
डाकिवेना पितादिके वलिया आर्यक ।
प्रपितामहादि के वा कखन प्रार्य्यक ॥
पितृव्य मातुल पुत्र पौत्र भागिनेय ।
व्राप सम्बोधन सदा साधु-वर्जनीय ॥१८
हे भो भर्त्ता, अन्य, गोमिन, हल सम्बोधिया ।
स्वामिन् वसुल, वा होल गोल उच्चारिया ॥
पुरुपेर सह साधु सत्यपरायण ।
करिवे ना कोन स्थाने कभु आलापन ॥१९
यथायोग्य देश काल गुणादि वुझिया ।
नाम वा गोत्रेर नाम उल्लेख करिया ॥
साधु स्वीय प्रयोजने आलाप करिवे ।
एकवार वहुवार दोप नाहि हवे ॥२०
दूर देशे अवस्थित पञ्चेन्द्रिय प्राणी ।
स्त्री पुरुष वुझिवारे अक्षम ये मुनि ॥
पथे कदा कहिवारे हले प्रयोजन ।
ए हय अमुक जाति वलिवे तखन ॥२१
पशु, पक्षी, सरीसृप किम्वा नरगण ।
हेरि मुनि वलिवेना निम्नोक्त वचन ॥
नाशयोग्य एइ प्राणी किम्वा स्थूलकाय ।
मेदयुक्त एइजीव कालप्राप्त प्राय ॥२२

सप्तम अध्ययन ।

हेरि स्थुल मनुष्यादि पथे वा भवने ।
वलिवे साधकवर निम्नोक्त वचने ॥
मांसल एजीव: इनि प्रफुल्ल हृदय ।
इनि हन स्थूल देह इनि महाकाय ॥२३
दोहनेर योग्या गाभी एरा दमनीया ।
रथेर वाहन योग्य वलद् वलिया ॥
कारकाछे भ्रमक्रमे यखन तखन ।
आलापन ना करिवे कभु साधुजन ॥२४
धेनुके रसदा नामे साधुरा डाकिवे ।
दमनीय वृषगणे युवक कहिवे ॥
नेहारि वलद् छोट हस्व नाम दिवे ।
किम्वा महल्लक नामे वड़के डाकिवे ॥
वड़वलीवर्द्द साधु पथेते हेरिया ।
डाकिवे ताहाके निम्न नाम उच्चारिया ॥
रथेर वाहन योग्य सकल समय ।
एजीव संवहनीय नाहिक संशय ॥२५
वलिवेना साधुजन प्रवेशि उद्याने ।
उद्यान इहार नाम काहार सदने ॥
पर्वते उठिया साधु इहारा भूधर ।
वलिवेना कभु भ्रमे साधक प्रवर ॥
नेहारि प्रकाण्ड वृक्ष अति ऊर्द्ध्वगति ।
अति वड़ एइ वृक्ष वलिवेना यति ॥२६

सप्तम अध्ययन ।

प्रासाद तोरण स्तम्भ परिघा अर्गल।
अरहट्ट याहा द्वारा तुले कत जल ॥
तरणी प्रभृति सृष्टियोग्य एइ वृक्ष।
वलिवेना कखनओ साधक सुदक्ष ॥२७
काष्ठासन काष्ठपात्र हाल वा मयिका।
दलद शकट तुम्ब घानी वा गण्डिका ॥
ये वृक्षे प्रस्तुत हय तादेरे कखन।
वलिवेना नाम कभु साधक सुजन ॥२८
रथादि, पर्यङ्क आदि, कपाट आसन।
गृहद्वार येइ वृक्षे हइवे गठन ॥
जीवेर नाशक भाषा सेइ वृक्ष नामे।
कभु ना वलिवे साधु कखनओ भ्रमे ॥२९
उद्यान पर्व्वत किम्बा वन तरुवर।
दर्शन करिया साधु गमन तत्पर ॥
किरूप भाषाय प्राज्ञ तादेरे वलिवे।
निम्ने ताहा वलितेछि अवश्य शुनिवे ॥३०
जातिमन्त दीर्घवृन्त सुन्दर दर्शन।
महालय शाखायुक्त, एइ तरुगण ॥
प्रशाखा - विशिष्ट हय एइ वृक्षराशि।
वलिवे साधकवर स्वभाव प्रकाशि ॥३१
पक्क हेरि आम्र फल-आदि, कोनस्थाने।
पक्क इहा पाकभक्ष्य वलिवेना जने ॥

सप्तम अध्ययन ।

काटिवार योग्य इहा पक्क मध्यभाग ।
कोमलता युक्त इहा हवे दुइभाग ॥
एइरूप कथा साधु कभु ना वलिवे ।
अहिंसा पालने सदा सतर्क थाकिवे ॥३२
असमर्थ आम्र वृक्ष फलेर धारणे ।
इहारा अनेक फल धरे एइक्षणे ॥
ग्रहणेर कालयोग्य फल धरे एरा ।
सुकोमल फल धरि रहेछे इहारा ॥
पथे साधु पूर्व्वरूप नेहारि पथिके ।
पथ परिचय सूत्रे वलिवे ताहाके ॥ ३३
शाल्यादि ओषध पक्क, नील ए शवय ।
काटन रोपण योग्य धान्यादि निचय ॥
भाजिवार योग्य इहा वालभक्ष्य हय ।
वलिवेना उक्तरूपे साधु सहृदय ॥ ३४
पथ प्रदर्शन आदि कार्य्ये साधुगण ।
निम्नरूपे वलिवेक अति विचक्षण ॥
प्रादुर्भूत हइयाछे हेथा कत धान ।
निष्पादनप्राय इहा कर प्रणिधान ॥
आरओ रहेछे कत निष्पन्न निर्गत ।
निर्वात शीर्षक इहा किम्वा विपरीत ॥
सञ्जात तण्डुल आदिसार एइस्थाने ।
रहियाछे वलिवेक पथेर भापणे ॥ ३५

सप्तम अध्ययन ।

"संखड़ी नामक क्रिया पितृदेव तरे ।
करिते इच्छुक आमि" वलिवेना कारे ।।
चौरके वधेर योग्य साधु वलिवे ना ।
दुस्तर सुतर नदी कभु कहिवेना ।। ३६
संखड़ीके वलिवेक संकीर्णा संखड़ी ।
चौरके वलिवे साधु प्राण रक्षाकारी ।।
प्रयोजने हये पृष्ट नदीर विषय ।
वलिवे नदीर तीर्थ समतल - मय ।।३७
साधुदेर वर्जनीय धराय सतत ।
प्रवर्त्तन निवर्त्तन आदि दोष यत ।।
नेहारि तटिनी कभु साधु तपोधन ।
वलिवेना नदी पूर्णा भ्रमेओ कखन ।।
सन्तरण योग्या नदी अथवा नदीर ।
जल पेय, वलिवेना तटस्थ प्राणीर ।।३८
वलिवे सलिलराशि नेहारि नदीर ।
जलपूर्णा नदी एइ अगाध गम्भीर ।।
अतिशय वेगशील इहार उदक ।
विस्तृत रहेछे जल, स्वस्वार्थे साधक ।।३९
परेर निमित्त कृत किम्वा क्रियमाण ।
पापयुत कार्य जानि भावी वर्त्तमान ।।
उहार सम्बन्धे कभु काहारे कखन ।
पापवाक्ये वलिवे ना साधु तपोधन ।।४०

सप्तम अध्ययन।

निम्नरूपे कथाच्छले काहाके कखन।
वलिवेना निम्नरूप सावद्य वचन॥
सभादि सुन्दर रूपे सम्पन्न हयेछे।
पाकादिते भालपाक पाचक करेछे॥
वनादि सुन्दर भावे हयेछे कर्त्तित।
कृपणेर धन वेश हइयाछे हृत॥
सुन्दर भावेते तारा सेखाने आहवे।
प्राणत्याग करियाछे निजेर गौरवे॥
असावाद्य वाक्य यदि वले साधुगण।
हइवेना कोन दोष शास्त्रेर वचन॥
निम्नरूपे यदि साधु कभु कथा वले।
असावद्य भाषा वलि वुझिवे सकले॥
"साध सेवा भालरूपे हयेछे हेथाय।
ब्रह्मचर्य्ये परिपक्क ए साधु धराय॥
स्नेहेर वन्धन साधु करेछे छेदन।
उपसर्ग दूरीकृत हयेछे एखन॥
पण्डितेर हइयाछे अद्य सुमरण।
असावाद्य रूपे गण्य पूर्व्वोक्त वचन"॥ ४१
निषेधेर अपवाद हइवे एखाने।
अभिहित साधुदेर चेतना कारणे॥
रोगिजन्य पक्क याहा, प्रयत्न लइया।
पक्क इहा वलिवेना साधुरा वुझिया॥

सप्तम अध्ययन ।

कर्त्तित व्रणादि हेरि प्रयत्न सहित ।
छिन्न किम्वा शुधु छिन्न हइवे कथित ॥
सुन्दरी कन्यका हेरि साधुरा वलिवे ।
दीक्षिता सुकन्या एइ पालनीया हवे ॥
कृत कर्म्म हेरि साधु वलिवे तखन ।
कर्म्महेतु एइ कार्य हयेछे एमन ॥
शरीरे काहार हेरि प्रहार दारुण ।
प्रगाढ़ प्रहार किम्वा गाढ़ साधु कन ॥४२
अन्तराय आदि दोप-प्रसंग-कारणे ।
निम्नरूपे वलिवे ना साधुरा कथने ॥
स्वभावतः मनोरम इहा दृष्टिकोणे ।
वहुमूल्ये क्रीत इहा अतुल भुवने ॥
सर्वत्र सुलभ इहा वहुगुण युत ।
प्रीतिकर नहे इहा लोकेर वाञ्छित ॥४३
"वलिव सकल कथा एखन उहाके ।
वल सव कथा तुमि एखाने आमाके" ॥
वलिवेना एइरुप येहेतु कखन ।
करिते पारेना केह स्पष्ट उच्चारण ॥
स्वर व्यञ्जनादि योगे वक्तव्य विपय ।
धराधामे काहारओ वला साध्य नय ॥
सेइजन्य प्राज्ञ कथा वुझिया देखिवे ।
मृपावादादि सावद्य अवश्य त्यजिवे ॥४४

सप्तम अध्ययन।

प्रीतिकर नहे किन्तु याहा दोषयुत।
ना हय कथने उहा साधुर उचित॥
वलिवेना निम्नरूपे साधु तपोधन।
स्मरिवेक सदा सत्य आगमवचन॥
"सुविक्रीत वा सुक्रीत क्रेय वा अक्रेय।
एइ पण्य सकलेर एवे ग्रहणीय॥
समान थाकिवे मूल्य किनिले इहार।
त्यागकरा सेइ हेतु मङ्गल तोमार॥४५
पण्य वस्तु क्रय काले अथवा विक्रये।
इहा कि अल्प वा बहु मूल्य पृष्ट हये॥
वलिवे साधक एइ विषये आमार।
वलिवारे कोनकथा नाहि अधिकार॥४६
प्रज्ञाशील साधु क्रभु असंयत जने।
वलिवेना निम्नरूपे कखन भाषणे॥
"एइ स्थाने कर तुमि समुपवेशन।
एइ स्थाने एस, हेथा थाकिओ एखन॥
सञ्चयादि कर हओ निद्रार्थे शायित।
ग्रामे याओ उपरेते हओ अवस्थित"॥४७
विश्वमाझे आछे बहु घृणित असाधु।
किन्तु तारा अभिहित हय वलि साधु॥
असाधुके साधुजन साधु ना वलिवे।
साधुके सतत यति साधुइ कहिवे॥४८

सप्तम अध्ययन।

ज्ञान दर्शन सम्पन्न सतत संयमी।
तपस्याय रत सदा मोक्षपथगामी॥
एहेन साधुके सर्व्व-साधक सुजन।
साधु वलि डाकिवेन शास्त्रेर वचन॥४६
देवतार मनुष्येर तिर्य्यक् जातिर।
संग्राम नेहारि साधु संयत सुधीर॥
वलिवेना अमुकेर हउक विजय।
अमुकेर ना हउक संग्रामेते जय॥५०
अधिकरणादि दोष - हेतु साधुवर।
घर्म्म द्वारा अभिभूत हये कलेवर॥
कखनओ वलिवेना निम्नोक्त वचन।
दोषेर कारण सव करिया चिन्तन॥
"मलय मारुत आदि, हइवे वर्षण।
शीतोष्ण, कुशलराज्ये, सुभिक्ष एखन॥
कखन वातादि हवे हवेना कखन।
उपसर्ग याहा छिल हयेछे दमन" ॥५१
मिथ्यावाद-लाघवादि दोषेते मातिया।
मेघ नभः मानवादि आश्रय करिया॥
वलिवेना मनुष्यके देव. देव कथा।
दोष समाविष्ट ताहा छाड़िवे सर्व्वथा॥
किरूपे वलिवे मेघ ऊर्द्ध्वस्थित हेरि।
वलितेछि शुन साधु दोष परिहरि॥

सप्तम अध्ययन ।

"उन्नत पयोद उहा ऊर्द्ध्व अवस्थित ।
मेघराशि एइक्षणे हइबे वर्षित ।।५२
आकाशके अन्तरिक्ष, सुरेर सेवित ।
वलिबेक धनिजने तारा ऋद्धियुत ।।५३
सावद्या ये भापा किम्वा या अनुमोदिनी ।
निश्चय कारिणी याहा परोपघातिनी ।।
वलिवेना सेइ भाषा किम्वा हास्यकथा ।
क्रोध लोभ भये कभु मानव सर्व्वथा ।।५४
स्ववाक्य-विशुद्धि किम्वा सवाक्येर शुद्धि ।
वुझिया लइवे साधु विकाशि स्ववुद्धि ।।
दोपेर आकार याहा सेरूप कखन ।
सतत संयत मुनि करेन वर्ज्जन ।।
परिमित दोपहीन संयत वचन ।
वलि हय साधु मध्ये प्रशंसाभाजन ।।५५
दोष गुण विचारज्ञ दुष्ट भाषा त्यागी ।
पट्काय प्राणीते नित्य संयमानुरागी ।।
श्रमण भावेते ह'ये यतनतत्पर ।
हितमनोहारी वाक्य वले साधुवर । ५६
सुसमाहितेन्द्रिय, ये परीक्षित भाषी ।
अगत, कपाय चारि, याहार, मनीपी ।।
द्रव्याभाव-द्वय-मुक्त, पुर्व्वपाप त्यागी ।
इहलोक परलोक पुजे मोक्षरागी ।।५७

सप्तम अध्ययन ।

तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना।
वलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ॥

इति सप्तम वाक्य शुद्धयध्ययन समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ अष्टम अध्ययन ।

आचारे प्रकृत निष्ठा लभि साधुजन ।
भिक्षुर कर्त्तव्य याहा करिबे पालन ॥
आपनादिगके आमि उहाइ कहिब ।
दृष्टान्त सहित उहा प्रकाश करिब ॥
शिष्यवर्ग गोतमादि बलेन एखन ॥
उहा क्रमे आमा हते करुण श्रवण ॥
पृथिवी उदक अग्नि वायु वनस्पति ।
सबीज प्रभृति, त्रस आछे नानाकृति ॥
महर्षि वर्णित उहा आगम कथित ।
इहा हय वर्द्धमान मुखे उच्चारित ॥ २
साधुजन षड्जीवेर हितेर लागिया ।
अहिंसक हबे, कायमनोवाक्य दिया ॥
अहिंसाय वर्त्तमान ये साधु प्रवर ।
संयमी हयेन तिनि तपस्यातत्पर । ३

अष्टम अध्ययन।

त्रिविध करण किम्वा त्रिविधयोगेते।
विशुद्ध संयत मुनि तत्पर ध्यानेते॥
मृत्तिका इटेर खण्ड भित्ति शिलातीर।
भेदन घर्षण कभु करिवेना धीर। ४
वसिवेना साधुजन सजीव माटीते।
अथवा सचित्तधूलि-पुर्ण आसनेते॥
भूस्वामीर अभिमत साधक लइवे।
यतने मार्ज्जित करि आसने वसिवे॥ ५
करिवेना पान साधु सलिल, संयत।
सचित्त उदकहिम-शिला-वृष्टिजात॥
त्रिदण्ड उद्धृत जल किम्वा उष्णोदक।
लइवेन जीवहीन अहिंसा साधक॥ ६
भिक्षाकाले वृष्टिपाते भिजिले शरीर।
वस्त्रादि वा हस्त द्वारा मुछिवेना नीर॥
निरखि स्वकीय देह जलसिक्तमय।
करिवेना कभु स्पर्श साधु सहृदय॥ ७
लौहपिण्ड युक्त अग्नि, अगार प्रभृति।
काष्ठेर अग्रस्थ वह्नि अर्चि वा सज्योति॥
करिवेना साधूजन उहा निर्वापण।
उत्तेजन संघट्टन अथवा कखन॥ ८
तालवृन्त किम्वा पाखा लइया साधुरा।
अथवा पद्मेर पत्र; वृक्षशाखा द्वारा॥

अष्टम अध्ययन ।

व्यजन करे ना साधु आपन शरीरे ।
वाह्ये वा पुद्गले, कभु सुख लाभ तरे ॥६
कदम्वादि वृक्ष आर दर्भ आदि तृण ।
काटिवेना छिड़िवेना फलादि कखन ॥
शस्त्राघात-शून्य वीज साधु तपोघन ।
ना चाहिवे मने मने भ्रमेअ कखन ॥ १०
वननिकुञ्ज - मध्ये साधु दूर्वादिते ।
प्रसारित शाल्यादिर उत्पन्नवीजेते ॥
अनन्त शरीर धारि-सचित्त सलिले ।
वसिवेना काइमध्ये तृणाग्रस्थ जले ॥ ११
वाक्ये कार्य्ये साधुवर त्रसप्राणिगणे ।
वर्ज्जन करिवे हिंसा सदा प्रयतने ॥
कर्म्माधीना एइ पृथ्वी सकलेइ कय ।
भाविले अवश्य हवे वैराग्य उदय ॥ १२
नेहारिया वक्ष्यमाण अष्ट सूक्ष्म प्राणी ।
सतर्के वसिवे शुवे दौड़ाइवे मुनि ॥
प्रत्याख्यान परिज्ञा वा ज्ञपरिज्ञा वले ।
अष्टसूक्ष्मभावगति समस्त वुझिवे ॥
सर्व्वभूते साधुगण दयाशील हन ।
इहाते नाहिक कारो संशय कखन ॥१३
दया-परवशे साधु जिज्ञासा करिवे ।
कि कि हय अष्ट सूक्ष्म प्राणी एइ भवे ॥

अष्टम अध्ययन ।

मेघावी ओ विचक्षण वलिवे तखन ।
अष्ट सूक्ष्म कि कि प्राणी करिया वर्णन ॥१४
स्नेह सूक्ष्म पुष्पसूक्ष्म, प्राणि-सूक्ष्म त्रय ।
उत्तिङ्ग पणक सूक्ष्म, वीज सूक्ष्म छय ॥
सप्तम हरितसूक्ष्म अष्ट अण्ड हय ।
उक्त अष्टसूक्ष्म साधु करेन निश्चय ॥१५
अष्टविध सूक्ष्म ज्ञान लभि साधुजन ।
सर्व्वभावे सुसम्मत अप्रमत्त मन ॥
सर्वेन्द्रिय समाहित करि तपोधन ।
काय मनोवाक्ये जीव करेन रक्षण ॥१६
शेषोपधि, कालभूमि, शय्या काष्टासन ।
अथवा उच्चार भूमि तृणमय स्थान ॥
सचित्त अचित्त कि ना परीक्षा करिते ।
भाल रूपे देखिवेक साधु शुद्ध चिते ॥१७
विष्ठा मूत्र नाकमल देहमल - चय ।
निर्जीव भूमिते साधु फेलिवे निर्भय ॥१८
पर गृहे प्रवेशिया साधु शुद्धज्ञान ।
पान वा भोजन हेतु करि अवस्थान ॥
गवाक्षादि ताकाइया कभु ना देखिवे ।
प्रयोजने परिमित सुवाक्य वलिवे ॥
दिवेना आपन मन चिर साधुवर ।
काहार सुन्दर अति रूपेर ऊपर ॥१९

अष्टम अध्ययन ।

करि भालमन्द कथा सतत श्रवण ।
यहु कार्य्य विश्वमाझे हेरि भिक्षु जन ॥
विघ्नकारी, दृष्ट श्रुत सेसब विषय ।
वलिवेना कार काछे संयत-हृदय ॥२०
साधकेर श्रुत दृष्ट गोचर विषय ।
वलिवेना कार काछे साधु महोदय ॥
उपघातकारी हय "से चौर इत्यादि" ।
गृहि योग वाल्क्रीड़ा, गृहरक्षा आदि "॥
उपरोक्त उभयेर करिबे वर्ज्जन ।
ना करिबे गृहस्थेर सम्बन्ध रक्षण ॥२१
सर्वगुण युक्त खाद्य इहा चमत्कार ।
पापयुक्त एइ खाद्य अति कदाहार ॥
पृष्ठ वा अपृष्ट हये स्वयं साधक ।
वलिवेना भालमन्द पापेर जनक ॥२२
साधक लोलुप लाभे उत्तम भोजन ।
करिवेना, धनिगृहे - भिक्षार्थे गमन ॥
भालमन्द ना भाविया ज्ञात वा अज्ञात ।
परगृहे याइवेन साधक संयत ॥
औद्देशिक क्रीत खाद्य सचित्त आहृत ।
लइवेना साधुवर हइया आहूत ॥२३
पद्मिनी पत्रेते जल यथा बद्ध नय,
पद्मपत्रे स्थित हये सकल समय ;

अष्टम अध्ययन ।

गृहि संगे तथा हय सम्बन्ध अस्थिर ।
राखे ना साधकवर सम्बन्ध गभीर ॥
अणुमात्र वस्तु कभु उन्नत-हृदय ।
निजेर हितेर लागि करेना सञ्चय ॥
चराचर संरक्षणे साधक सुजन ।
जितेन्द्रिय संयमेते प्रतिवद्ध हन ॥२४
विपाक-प्रतिपादक, क्रोधेर सतत ।
वीतराग वाक्य शुनि साधुरा संयत ॥
रुक्षवृत्ति परितुष्ट अल्पाहारी हवे ।
कदापिओ कार प्रति क्रोध ना करिवे ॥२५
श्रुति सुखप्रद शब्दे वेनु वीणादिर ।
करिवेना प्रेमराग साधक सुधीर ॥
दारुण कर्कश स्पर्श शरीर उपरे ।
पड़िले सहिवे ताहा साधु अकातरे ॥२६
क्षुधा वा पिपासा साधु शीतोष्ण अरति
विपम कर्कश शय्या नानाविध भीति ॥
अव्यथित फुल्लमने अवश्य सहिवे ।
देहे दुःख महाफल स्मरण करिवे ॥२७
अस्तमित दिवाकरे प्रभात पूरवे ।
मनेओ आहार्य्य वस्तु साधु ना चाहिवे ।
वलिवेना कोन कथा अलाभे भिक्षार ।
अल्पभाषी अल्पभोजी साधु शुद्धाचार ।

अष्टम अध्ययन ।

स्थिर साधु आहारेते येकोन प्रकार ।
तृप्ति वोध करिवेक हइया उदार ॥
अल्प लाभे भिक्षास्थले येये साधुजन ।
निन्दिवेना देय किम्बा दाताके कखन ॥२९
करिवेना निन्दा साधु कभु अपरेर ।
तेयागिवे चिरतरे प्रशंसा निजेर ॥
शक्तिशाली आमि विज्ञ प्रवीण पण्डित ।
एइरूप श्रुतज्ञाने हवेना गर्व्वित ॥
उच्च जाति तीक्ष्णवुद्धि आमि तपोरत ।
करिवेना एइरूप गर्व्व समाहित ॥३०
राग ओ द्वेषेर साधु हये वशीभूत ।
ज्ञातसारे अज्ञाने वा यदि पापेरत ॥
मूल ओ उत्तरगुण विराधना ह'ले ।
घटिवे अनर्थ वहु अवश्य वुझिले ॥
अधार्म्मिक पद त्यजि साधक प्रवर ।
आत्मसंवरणे साधु हइवे तत्पर ॥३१
सर्व्वदा प्रकटभाव, निर्म्मल हृदय ।
जितेन्द्रिय असंसक्त साधु महोदय ॥
सावद्य योगज, करि, घृण्य अनाचार ।
गुरुर निकटे करे प्रकाश उहार ॥
किछुमात्र उहा हते ना करे गोपन ।
कोनरूप अपलाप करे ना कखन ॥३२

अष्टम अध्ययन ।

करिवेना व्यर्थ श्रेष्ठ आचार्य्य वचन ।
विनीत साधक कभु भ्रमेओ कखन ॥
गुरुवाक्य यथारीति करिया श्रवण ।
करिवे वचनकर्म्मे उहार पालन ॥३३
जीवन अनित्य भवे, ज्ञानादि विषय ।
साधुर सिद्धिर पथ, करिवे निश्चय ॥
शतवर्ष आयु साधु केवल पाइवे ।
वुझि इहा भोगहते निवृत्त हइवे ॥३४
मानसिक वल आर दैहिक दृढ़ता ।
क्षेत्रकाल विचारिया श्रद्धा नीरोगता ॥
आत्माके संयम मार्गे नियुक्त करिवे ।
साधुर कामना सिद्धि अवश्य घटिवे ॥३५
यत दिन व्यापि जरा ना करे पीड़ित ।
यत कालावधि व्याधि नाहय वर्द्धित ॥
क्षीण शक्ति नाहि हय इन्द्रिय समूह ।
धर्म्म आचरिवे साधु त्यजि मायामोह ॥३६
क्रोध मान माया लोभ एइ दोष चारि ।
सर्व्वदाइ मानवेर अति पापकारी ॥
समाहित आत्महिते पापेर वर्द्धक ।
त्यजिवे चारिटि दोष संयत साधक ॥३७
क्रोध प्रीति नाश करे, विनयघ्न मान ।
मित्र हन्त्री माया; लोभ सर्व्व विनाशन ॥३८

अष्टम अध्ययन ।

क्षान्ति द्वारा, क्रोध रिपू विनाश करिवे ।
मार्द्दव, प्रकाशि मान, स्ववशे आनिवे ॥
सरलता-भावद्वारा मायाके जितिवे ।
लोभके सन्तोष द्वारा आयत्ते आनिवे ॥३९
असंयत क्रोध मान दुर्व्वार जगते ।
वर्द्धमान माया लोभ आछे सकलेते ॥
चारिटि कषाय नामे उहारा कथित ।
क्लेशकारी मनुष्येर अधर्म्म जड़ित ।
पुनर्जन्म-रूपतरु - मूल सिञ्चे हाय ।
कुभाव सलिल द्वारा सतत कषाय ॥४०
विनयादि गुणयुक्त-साधक सुजने ।
चिर-सुदीक्षित-साधु तुषिवे पूजने ॥
ना छाड़िवे साधु शील, आठार हाजार ।
तपोरत साधुजन भूषण धरार ॥
स्वीय अङ्गोपाङ्ग, साधु कछप मतन ।
सुरक्षित करिवारे करिवे यतन ॥
परम धरम कार्य्य तपस्या संयम ।
ताहाते देखावे साधु अति पराक्रम ॥४१
करेन निद्राके साधु अति अनादर ।
अट्टहास परिहारे हयेन तत्पर ॥
अनृत भाषण हते हयेन विरत ।
थाकेन साधक सदा स्वाध्यायेते रत ॥४२

अष्टम अध्ययन ।

अनलस साधुजन क्षान्ति आदि कत ।
श्रमण-धरमे सदा थाकेन संयुत ॥
श्रामण्य-धर्म्मेते युक्त हयेन यखन ।
लभेन तखन साधु श्रेष्ठ ज्ञान धन ॥४३
इहलोक परलोक हितेर जनक ।
ज्ञानादि लभेन यिनि सुगति कारक ॥
यतने सेवेन यिनि अति फुल्लमने ।
आगम - प्रवीण वृद्ध वहुदर्शी जने ।
सेइ साधु तपोरत उदार - हृदय ।
गुरु काछे जिज्ञासेन अर्थ विनिश्चय ॥४४
सुसंयुत करि साधु हस्त पाद काय ।
परम दुर्व्वारेन्द्रिय करिया विजय ॥
गुरुर आदेश लये संयत साधक ।
वसिवेन गुरु काछे विनय पूर्व्वक ॥४५
वन्दनादि असुविधा हेतु साधुजन ।
वसिवेना गुरु पार्श्वे पृष्टे वा कखन ॥
गुरुर सम्मुखे साधु ऊरुर उपर ।
राखिवे ना अन्य ऊरु साधक प्रवर ॥४६
वलिवे ना, साधु, कथा पृष्ठ ना हइले ।
कहिवेना कोन कथा कथनेर काले ॥
करिवेना परोक्षेते दोषेर कीर्त्तन ।
वलिवेना सकपट अनृत वचन ॥४७

अष्टम अध्ययन ।

अप्रीतिजनक याहा, क्रोधेर कारक ।
उभयेर विरोधिनी अहित जनक ॥
तादृश भाषाय वला निषिद्ध शास्त्रेर ।
वलिवेना उक्त भाषा आकर दोषेर ॥४८

दृष्ट, अल्प परिमित, सन्देह रहित ।
स्वरादिते पूर्ण याहा साधु प्रकटित ॥
अनुच्च अनीच स्वरे याहा उच्चारित ।
उद्वेग रहित, याहा सदा परिचित ॥
सेइ रूप भाषा सदा सचेतन मुनि ।
वलिवेन सविनये मङ्गलदायिनी ॥४९

स्त्रीलिङ्गादि ज्ञाने पटु आचार धारक ।
प्रकृति प्रत्यय आदि प्रयोग-कारक ॥
यदि करे कथा छले वाक्येर स्खलन ।
उपहास ना करिवे ताहारे कखन ॥५०

यात्राकाले शुभाशुभ नक्षत्रेर नाम ।
स्वप्नजात भालमन्द किवा परिणाम ॥
वशीकरणादि योग मंत्रादि औषध ।
वलिवेना गृहि-पृष्ठ साधक सुवोध ॥५१

प्रस्रवन आदि युक्त शुद्ध वासस्थान ।
पर हेतु सुनिर्मित प्रकृत भवन ॥
पर द्वारा व्यवहृत शय्या आसनादि ।
स्त्री पशु वर्जित स्थान प्रयोजन यदि ॥

अष्टम अध्ययन ।

व्यवहारे नाहि दोष जानिवे सर्वथा ।
महावीर उक्त इहा आगमेर कथा ॥५२
शय्या आसनादि याहा हय प्रयोजन ।
जनशून्य स्थाने साधु करिवे स्थापन ॥
वलिवेना तथा थाकि नारीर विषय ।
करिवेना गृहस्थेर साथे परिचय ॥
साधु सङ्गे सदा करि साधु-परिचय ।
निर्दोष आलापे साधु काटावे समय ॥५३
कुक्कुट—शिशुर भय विड़ाल हइते ।
सेइ हेतु भीत शिशु थाके दिवाराते ॥
ब्रह्मचारी सेइरूप नारीर शरीर ।
इहाते प्रभीत हन साधक सुधीर ॥५४
चित्रयुक्त भित्ति किम्वा स्वलंकृता नारी ।
कभु ना देखिवे साधु संयम पासरि ॥
यथा दृष्टि त्यजे जन शीघ्र सूर्य्य हेरि ।
दर्शने विरत तथा साधु हेरि नारी ॥५५
हस्तपाद ये नारीर हयेछे कर्त्तित ।
कर्ण ओ नासिका हते यिनि विवर्ज्जित ॥
शत वर्ष वयःक्रम अतिवृद्धा नारी ।
कभु ना हेरिवे ताके यति ब्रह्मचारी ॥
युवती नारीर कथा कि वलिव आर ।
दर्शने अनिष्ट हवे जानिवे उहार ॥५६

अष्टम अध्ययन ।

नारीर संसर्ग आर सरस भोजन ।
नख केश प्रभृतिर सत्कार साधन ॥
तालपुट - विषतुल्य वुझि साधुजन ।
पूर्व्वोक्त कुकर्म मुनि करिवे वर्ज्जन ॥५७
शिरः नयनादि अङ्ग प्रत्यक्ष विन्यास ।
मधुर वचने स्त्रीर कटाक्ष विकाश ॥
कभु ना हेरिवे उहा यति ब्रह्मचारी ।
वुझि उहा काम राग प्रवर्द्धनकारी ॥५८
शब्द रूप रस गन्ध-स्पर्श, गुणान्वित ।
पुद्गल समूह हय अनित्य कथित ॥
परिणाम वुझि साधु मनोज्ञ विषये ।
करिवेना प्रेमराग, समासक्त हये ॥५९
पुद्गलेर परिणाम विविध प्रकार ।
शब्दादि विषये सदा अवस्थान तार ॥
एक रूप त्यजि पुन अन्य रूप धरे ।
पुद्गल अनित्य विश्वे सतत विचरे ॥
वुझि साधु त्यजि क्रोध लालसा भीषण ।
विहार करेन करि आत्मार चिन्तन ॥६०
प्रमादा - विरति रूप कर्द्दम हइते ।
ये श्रद्धा वाहिर करि मानव जगते ॥
गृहावास तेयागिया साधुत्व आचरे ।
सेइ श्रद्धा हय श्रेष्ठ गुणेर स्वीकारे ॥

अष्टम अध्ययन ।

सेइ श्रद्धा आर गुण गुरुर सम्मत ।
पालिवेन साधुवर अति शुद्ध चित ॥६१
अनशन आदि तपः संयम पालन ।
आगमेर पाठरूप स्वाध्याय करण ॥
पूर्व्वोक्त विधान साधु करिते पालन ।
सतत विशुद्ध चित्ते—करेन यतन ॥
इन्द्रिय कषाय आदि चतुरङ्ग सेना ।
अवरोधि देय तारे कतइ यातना ॥
तपस्याय अरि जिति वीरेर मतन ।
साधक करेन सदा स्वपर-रक्षण ॥६२
अग्नितापे रजतेर मल दूर हले ।
विशुद्ध रजत पाय मानव सकले ॥
सेइ रूप योगिवर स्वाध्याय निरत ।
शान्तिप्रिय धर्म्मवली अतिशुद्धचित ॥
तपस्या - निरत हये पूर्व्व कर्म्म मल ।
दूर करि शुद्ध हन वन्धन प्रवल ॥६३
कृष्णमेघ अन्तर्हित ह'ले ये प्रकार ।
हिमांशु विराजे लभि सुन्दर आकार ॥
सेइरूप पूर्व्वेर गुणेते संयुत ।
परीषह आदि दुःख सहने निरत ॥
श्रुत ज्ञानी जितेन्द्रिय ममता-विहीन ।
दरिद्र साधक-वर आगम प्रवीण ॥

अष्टम अध्ययन ।

कर्म्मरूप मेघराशि हले तिरोधान ।
ज्ञानालोके दीप्त हन अति पुण्यवान् ॥६४
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ॥

इति अष्टम आचार प्रणिध्यध्ययन समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ नवम अध्ययन ।

प्रथमोद्देश ।

अभिमान क्रोध माया प्रमाद वशतः ।
गुरुर निकटे येये हइया वञ्चित ॥
ग्रहणा-विनय-शिक्षा, करि-वारे नारे ।
दुर्गुणे साधुके सदा अधोगति करे ॥
वंशेर यखन हय फलेर सञ्चार ।
येमन तखनि हय विनाश उहार ॥
तेमनि दुर्गुणे हय गुणेर संहार ।
ग्रहणा विनय-शिक्षा-हय ना ताहार ॥१
सत्प्रज्ञा-विहीन, गुरु, मने करि भ्रमे ।
अप्राप्त वयस्क गुरु, निर्वोध आगमे ॥
एइ रूप भावि यारा गुरु अनादरे ।
गुरुर दुर्नाम कथा सर्व्वदा प्रचारे ॥
ताहारा गुरुके करे अति दुःखदान ।
उहादेर शान्ति लाभे नाहि कोन स्थान ॥२

नवम अध्ययन ।

प्रथम उद्देश ।

कर्म्मेर वैचित्र्य हेतु वयोवृद्ध जन ।
हृदयेते मन्द बुद्धि करेन धारण ॥
आवार जगते हेरि अत्यल्प वयसे ।
केह धरे तीक्ष्ण बुद्धि श्रुत-ज्ञानवशे ॥
सेइ जन्य कारो हय अति शुद्धाचार ।
दया दाक्षिण्यादि गुण विराजे काहार ॥
करिवेना अनादर साधुरा गुरुरे ।
येहेतु मनेर दुःख वाढ़े अनादरे ॥
अनल येमति भष्म करिछे इन्धन ।
अनादर भष्म करे गुणके तेमन ॥३
सर्पके ये दुःख देय करि क्षुद्र ज्ञान ।
क्रोधोन्मत्त भुजङ्गम नाशे तार प्राण ॥
सेइ रूप येइ जन दुःख करे दान ।
अत्यल्प वयस्क जीवे भुलिया विधान ॥
दुःख भोगी जीव तार नाशेर कारण ।
हइवे निश्चित इहा शास्त्रेर वचन ॥
सेइ रूप यारा करे निन्दा अतिशय ।
अत्यल्प-वयस्क हेरि आचार्य्ये निर्दय ॥
मन्दबुद्धि तारा हये द्वीन्द्रियादि जाति ।
असार संसारे भ्रमे दुःखे दिवाराति ॥४

नवम अध्ययन ।

प्रथम उद्देश ।

काहार जीवन नाश हइते अधिक ।
कि करे भुजग लभि क्रोध समधिक ॥
आचार्य्यश्री अप्रसन्न हले साधुजन ।
मिथ्यात्व अज्ञाने हन पापेर भाजन ॥
अपमाने येवा देय गुरुके वेदना ।
मोक्षलाभ तारपक्षे शुधु विडम्वना ॥५
ज्वलन्त आगुने येवा विचरण करे ।
जन्माय ये लोक क्रोध अवाध्य सर्पेरे ॥
जीवितार्थी येवा करे सर्प विप पान ।
हाराय ताहारा यथा आपन पराण ॥
तेमनि गुरुके येवा करे अपमान ।
अनायासे मने तार करे दुःखदान ॥
ताहार हवे ना मोक्ष भवे कोनकाले ।
विनाश ताहार हवे निश्चय अकाले ॥६
मन्त्रवले भुजङ्गम दंशेना कुपित ।
दाहशक्ति छाड़े वह्नि मन्त्रवलयुत ॥
मारिते पारे ना कभु हलाहल विप ।
हते पारे पूर्व्वरूप भवे अहर्निश ॥
अवज्ञा गुरुके करि मोक्ष ना पाइवे ।
कर्म्मेर वन्धने साधु विपदे पड़िवे ॥७

नवम अध्ययन ।

प्रथम उद्देश ।

गुरुके ये मने करे अवज्ञा भाजन।
पाहाड़ फेलिवे सेइ मस्तके आपन ॥
केशरीके जागाइवे ध्वंसेर कारण।
तीक्ष्णधारे करिवेक मुष्टि - प्रहरण ॥८
यदि ओ फाटिया याय कदापि पाहाड़ ।
पड़िया मस्तकोपरि जगते काहार ॥
नाहि खाय सिंह, कारे हइया विव्रत ।
नाहि काटे तीक्ष्ण धार मुष्टिकृत हात ॥
सम्भव हइते पारे, लइव मानिया।
मोक्ष नाइ गुरुजने अवज्ञा करिया ॥६
जानिओ आचार्य्यपाद अप्रसन्न हले ।
अवज्ञाय हइवे ना मोक्ष कोन काले ॥
अवाध सुखेर तरे अभिकांक्षी यारा ।
गुरुके प्रसन्न सदा करिवे ताहारा ॥१०
घृतादि आहुति-पूत ज्वलन्त आगुन ।
यथा नमे आजीवन साग्निक ब्राह्मण ॥
सेइ रूप वहु ज्ञाने ज्ञानी साधुजन ।
आचार्य्यके भक्तिभरे करेन पूजन ॥११
शिखान धरमशास्त्र-यिनि शुद्धाचार।
प्रदर्शिवे सुविनय निकटे ताहार ॥

नवम अध्ययन ।

प्रथम उद्देश ।

काय मनोवाक्ये सदा भक्ति योड़ करे ।
प्रणत मस्तक करि सेविवे तांहारे ॥१२
लज्जा दया संयमे वा ब्रह्मचर्य्य पूत ।
कर्म्ममल दूरकारी नृकल्याणे रत ॥
मुमुक्षु जीवेर कर्म्म मलापनयने ।
मोरे देन उपदेश याहारा भुवने ॥
पूजि आमि हितकारी सेइ गुरुजन ।
भक्तिर सहित सदा करि शुद्ध मन ॥१३
तपन मरीचिमाली प्रभाते येमति ।
सम्पूर्ण भारत करे समुज्ज्वल अति ॥
आगम स्वरूप-श्रुत - बुद्धियुक्त हये ।
सुर मध्ये इन्द्र यथा तथा विराजिये ॥
जीवादि परम तत्त्व करिया प्रकाश ।
आचार्य्य करेन पूर्ण शिष्य अभिलाष ॥१४
पवित्र कार्तिकी पौर्णिमासे समुदित ।
नक्षत्र - तारका - गणे हये परिवृत ॥
विमल-वारिद-मुक्त सुधांशु आकाशे ।
शोभित येमन हये सुषमा विकाशे ॥
सेइरूप गणी पूज्य सिद्ध - तपःरत ।
शोभा पान भिक्षुमध्ये हये विराजित ॥१५

नवम अध्ययन ।

प्रथम उद्देश ।

गुणेर आकर यारा महर्षि सुजन ।
श्रुत-शील-बुद्धि-युक्त, समाधि मगन ॥
मोक्षेर कारण तारे श्लाघ्य तपोधन ।
ज्ञानादि लाभेर तरे करिवे पूजन ॥
सन्तोषिवे ताँहादेरे प्रकाशि विनय ।
धर्म्मार्थी शिष्येर इहा कर्त्तव्य निश्चय ॥१६
निद्रादि प्रमाद शून्य मेधावी साधक ।
शुनि गुरुपूजाफल मोक्षप्रदायक ॥
गुरुर सेवाय सदा थाकेन तत्पर ।
आराधिया वहु गुण लभेन सत्वर ॥
गुरुर कृपाय परे मुकति कारक ।
सर्व्वश्रेष्ठ सिद्धि लाभ करेन साधक ॥१७
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ॥१८

इति नवम विनय समाधि-अध्ययनेर प्रथमोद्देशावचूर्णि समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ नवम अध्ययन ।

द्वितीय उद्देश ।

वृक्ष मूल हते हय स्कन्धेर उदय ।
शाखार उत्पत्ति पुन स्कन्ध ह'ते हय ॥
समुद्भव शाखाहते हय प्रशाखार ।
क्रमे हय पुष्प फल रसेर सञ्चार ॥१
धर्म्मकल्प - वृक्षमूल, तेमनि विनय ।
उहार प्रधान रस विमुक्ति निश्चय ॥
साधक विनये लभे शीघ्र यथोचित ।
पत्ररूप कीर्त्ति आर पुष्परूप श्रुत ॥२
क्रूद्ध मूर्ख जड़ जीव मृगेर मतन ।
ना शुने कखन कारो स्वहित वचन ॥
जात्यादिर मानेमत्त, कर्कश वचन ।
अविनयी, असंयमी, माया मत्त मन ॥
नदीर स्रोते ते क्षिप्त काष्ठ ये प्रकार ।
तरङ्गेर प्रभावेते घुरे वारंवार ॥

নবম অধ্যয়ন

দ্বিতীয় উদ্দেশ।

তথা তারা অবিনীত-আত্মার প্রভাবে।
জন্ম মৃত্যু বীচি মধ্যে ঘুরে ভবার্ণবে ॥৩
বিনয়ে বিশেষ - রূপে উপদেশ পেয়ে।
কুপিত হয়েন যিনি অবিনীত হয়ে॥
স্বর্গীয়া লক্ষ্মীর হেরি গৃহে আগমন।
দণ্ড দ্বারা বাধা দেন তিনি অভাজন ॥৪
রাজাদি বাহক অশ্ব গজ আদি যত।
অবিনয়ে ভার বহি দুঃখ পায় কত ॥৫
রাজাদি বাহক অশ্ব গজ আদি যত।
বিনয় গুণেতে খ্যাতি ঋদ্ধি পায় কত ॥৬
অবিনীত-আত্মা নারী পুরুষ জগতে।
জর্জ্জরিত হয় কভু চাবুক আঘাতে॥
নাকাদি কর্ত্তিত হয়ে কদাকার হয়।
জীবন যাপন করে অতি দুঃখময় ॥৭
অবিনয়ী কটু বাক্য শুনে সদা হায়।
সর্ব্বদা পীড়িত হয় ক্ষুধা পিপাসায়॥
অতি দীন কান্তিহীন পরাধীন তারা।
দেখায়ায় অবিনয়ে হয় লক্ষ্মী ছাড়া ॥৮
সুবিনীত আত্মা ভবে নরনারী চয়।
সম্পত্তি সুখ্যাতি সুখ লভে দৃষ্ট হয় ॥৯

नवम अध्ययन।

द्वितीय उद्देश।

अमर गुह्यक यक्ष सेवकेर न्याय।
हइया अविनीतात्मा अति दुःख पाय ॥१६
अमर गुह्यक यक्ष विनीत यरहारा।
सम्पत्ति सुख्याति सुख भवे पाय तारा ॥११
उपाध्याय आचार्य्येर शुश्रूषा तत्पर।
तांदेर आदेश पालि यारा अग्रसर॥
शिक्षा वृद्धि ताहादेर हइवे अचिरे।
जलेरँ सेचन द्वारा वृक्ष यथा वाड़े ॥१२
इहलोके भोग-लाभे धावित हइया।
निजेर परेर हित चिन्तन करिया॥
असंयत गृहिगण थाकि एधराय।
हयेन तत्पर शिल्प-चित्रादि शिक्षाय ॥१३
गर्भेश्वर राजपुत्र आदि मुग्धकाय।
नियुक्त हइया सदा शिल्पादि शिक्षाय॥
कषाघात उत्सनादि रज्जुर बन्दन।
परिताप सुदारुण पान सर्व्वक्षण ॥१४
शिल्प शिक्षा पाइवारे ताहारा गुरुके।
वन्धादि कारक जानि पूजे इहलोके॥
सत्कारे वस्त्रादि द्वारा साञ्जलि प्रणाम।
करे फुल्लहये आज्ञा पाले अविराम ॥१५

नवम अध्ययन ।

द्वितीय उद्देश ।

आगम वा मोक्षरूप अनन्त हितेर ।
कामनाय, साधु भिक्षु हये अग्रसर ।
गुरुके करिवे भक्ति मोक्षेर कारण ।
विनीत आचार्य्य वाक्य करिवे पालन ॥१५
आचार्य्य शय्यार नीचे स्वशय्या पातिवे ।
आचार्य्येर पिछे थाकि सर्व्वदा चलिवे ॥
वसि नीचे आचार्य्येर आसन स्थापिवे ।
नम्र हये सविनये चरण वन्दिवे ॥
बद्धाञ्जलि हये सदा साधक विनीत ।
गुरुके पूजिवे हये भक्ति श्रद्धान्वित ॥१७
स्वदेह पात्रादि द्वारा गुरुर शरीरे ।
पात्रे वा आघात करि वलिवे अचिरे ॥
हे पूज्य आमार दोष क्षम कृपा करि ।
करिवना एइरूप विनय विस्मरि ॥१८
अशिष्ट वलद करे रथेर वहन ।
आरादण्डे बद्ध हये काष्ठेते येमन ॥
आगम शास्त्रेते अज्ञ कर्त्तव्यविहीन ।
तथा शिष्य दुष्टवुद्धि परमार्थहीन ॥
आचार्य्यादि अभिहित हये वारंवार ।
सम्पादन करे कार्य्य कर्त्तव्य ताहार ॥१९

नवम अध्ययन ।

द्वियीय उद्देश ।

गुरुर सेवाय रत शिष्य तपोधन ।
करे सदा गुरु आज्ञा आग्रहे पालन ॥
आकार इङ्गिते जानि गुरुर वासना ।
शारदादि काल बुझि करिवे अर्च्चना ॥
आहार्य्य लइवे साधु अनुकूल गुण ।
याहा द्वारा हइवेक पित्त विनाशन ॥२०
गुणेर विपत्ति पाय अविनीत जन ।
वहुगुण लाभकरे विनीत सुजन ॥
विनय ओ अविनये लभि तत्त्वज्ञान ।
ग्रहणासेवन शिक्षा तिनि प्राप्त हन ॥२१
यिनि हन अति क्रोधी हइया दीक्षित ।
सम्पत्तिर गर्व्वकारी परनिन्दारत ॥
दुष्कर्म्म करणे यार अत्यन्त साहस ।
गुरु आज्ञा अपालने याहार प्रयास ॥
विनयेते अनभिज्ञ श्रुतादि वर्ज्जित ।
गोचरादि लये येवा शास्त्र विधिमत ॥
ना देन समता ज्ञाने अन्य साधुजने ।
ना हय मुकुति तार कदापि भुवने ॥२२
गुरुर आदेश यारा करेन पालन ।
विदित श्रुतार्थ यारा विनीत वचन ॥

नवम अध्ययन

द्वितीय उद्देश

महा पराक्रमी साधु धरार भूषण।
दुस्तर संसार अब्धि करि उत्तरण॥
नाशिया सकल कर्म्म पूतकरे धरा।
परम कैवल्य लाभ करेन तांहारा॥२३
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना।
वल्तिेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा॥२४

इति नवम विनय समाधिअध्ययनेर द्वितीयोद्देशावचूर्णि

समाप्त

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ नवम अध्ययन ।

अथ तृतीय उद्देश ।

अग्निर रक्षार तरे साग्निक ब्राह्मण ।
अति सावधान हय सर्व्वदा येमन ॥
सेइ रूप साधुजन प्रबुद्ध सतत ।
सयत्न हयेन गुरु शुश्रूषाय रत ।
स्वगुरुर दृष्टिमात्रे बुझि अभिप्राय ।
तांर कार्य करि रत गुरुर पूजाय ॥
एतादृश शिष्य भवे सदा पूज्य हय ।
ताहाकेइ योग्य शिष्य सर्व्वलोके कय ॥१
उपदिष्ट गुरुवाक्य यिनि शुनिवारे ।
अभिलाषी हन सदा ज्ञानलाभ तरे ॥
विनय संयम यिनि करेन ग्रहण ।
गुरुर अवज्ञा त्यजि तिनि पूज्य हन ॥२
ये साधक दीक्षा-ज्येष्ठ मुनिर सदन ।
यथायोग्य नम्र भाव करे प्रदर्शन ॥

अथ नवम अध्ययन ।

तृतीय उद्देश ।

अल्प यार वयःक्रम अविज्ञ आगमे ।
दीक्षाज्येष्ठ हले तारे सकले प्रणमे ॥
आगमे अधिक विद्या लभि शुद्धाचार ।
दीक्षा ज्येष्ठ्ये करे येवा नम्र व्यवहार ॥
गुरु - पूजारत यिनि सुसत्य वचन ।
पालेन गुरुर आज्ञा तिनि पूज्य हन ॥३
संयमेर भारवाही देह रक्षातरे ।
केवल भिक्षाते येवा अभिलाष करे ॥
ना राखि कारणे अन्य सदा अनुराग ।
भिक्षालब्ध बस्तु करि नित्य समभाग ॥
परिचय ना वलिया येवा भिक्षा लय ।
विशुद्ध आहार करे साधु महाशय ॥
भिक्षान्ते कोन चिन्तार ना हय उदय ।
अहङ्कार श्लाघाशून्य हय ये हृदय ॥
तिनिइ धराय धन्य साधक सुजन ।
सकलेर निकटेइ सदा पूज्य हन ॥४
आहार आसन शय्या संस्तारक जल ।
अनेक यखन आसे साधुर सम्बल ॥
नेहारि प्राचुर्य्य यिनि सामान्य कल्पित ।
लइवारे अभिलाष करेन सतत ॥

नवम अध्ययन।

तृतीय उद्देश।

राखेन सन्तुष्ट आत्मा कल्पित आहारे।
सन्तोष-प्रधान तिनि पूज्य चराचरे ॥५
मानव "पाइब अर्थ" ए रूप आशाय।
लौहमय कण्टकओ सहे ए धराय॥
किन्तु तीक्ष्ण वाणीरूप आघात भीषण।
पारे ना सहिते भवे मानव कखन॥
निराश ये साधु सहे कर्कश वचन।
धराधामे करे ताँरे सकले पूजन।६
मुहूर्त्त कालेर तरे हय दुःखमय।
कण्टक नरेर देहे कभु लौहमय॥
अनायासे किन्तु उहा करि उत्तोलन।
दुःखदूर करि हय सुखेर भाजन॥
किन्तु वाणीरूप काँटा विंधिले हृदये।
उठाइते हय उहा वहु कष्ट दिये॥
इहलोके परलोके वचन कण्टक।
मानवेर अति-वैरि - भावेर वर्द्धक॥
कुगति कारक उहा अति दुर्निवार।
भयङ्कर किवा आछे मतन उहार॥७
कर्कश वचनाघात यदा कर्णे लागे।
उपजे अतीव दुःख निज मर्म्म-भागे॥

नवम अध्ययन।

तृतीय उद्देश ।

वाक्य सह्य करा धर्म्म वलि मानि
संयम-प्रवीर यिनि जितेन्द्रिय मुनि ॥
सहेन वचनशर हइया आहत।
धराय सर्व्वत्र तिनि हन सुपूजित ॥८
प्रत्यक्ष कुशलहीना दुःख प्रदायिनी।
निश्चयरूपिणी अप्रिया याहा कुवाणी ॥
परोक्षे अश्लाघ्य याहा कथित धराय।
त्यजिया साधक उहा सदा पूज्य हय ॥९
अलोलुप शुद्धवृत्ति यिनि अपिशुन।
अमायी ओ स्थिरचित्त कुहक विहीन ॥
कभु ना वलेन स्वीय प्रशंसा वचन।
यिनि परकाछे कभु, अथवा कखन ॥
परेर अनृत वाक्य वलिया उत्तम।
कभु ना कहेन यिनि आमोदे अक्षम ॥
संयम - पालनेरत सेइ तपोधन।
संसारे मानव मध्ये सदा पूज्य हन ॥१०
विनयादि गुण द्वारा नर साधु हय।
विनयादि हीन येवा असाधु निश्चय ॥
अतएव साधो गुण करह ग्रहण।
असाधु ये गुणचय करह वर्ज्जन ॥

नवम अध्ययन ।

तृतीय उद्देश ।

आत्मज्ञाने निज आत्मा जाने येइ जन ।
रागद्वेष-समज्ञान तिनि पूज्य हन ॥११
युवक अथवा वृद्ध सन्यासी श्रावक ।
नारी वा पुरुष जन किम्वा नपुंसक ॥
काहाके करे ना निन्दा किम्वा अपमान ।
छेड़ेछेन सदा यिनि राग अभिमान ॥
आगम-विधान - रत शुद्ध तपोधन ।
तिनिइ धराय सदा अति पूज्य हन ॥१२
शिष्य हते यिनि सदा लभिया सम्मान ।
करेन शिष्येर हिते श्रुत ज्ञान दान ॥
येमन जननी पिता कन्याके आपन ।
शिखाइया करि तार योग्यता वर्द्धन ॥
संसारेर सर्व्व - सुख - वृद्धिर कारण ।
गृहिणीर पदे यत्ने करेन स्थापन ॥
सेइ रूप यिनि शिष्ये आगम शिक्षाय ।
पारदर्शी कराइया अशेष चेष्टाय ॥
आचार्य्येर श्रेष्ठ पदे वसान अचिरे ।
उपकारी सेइ गुरु धन्य चराचरे ॥
तादृश सम्मानपात्र गुरुके येजन ।
करेन सम्मान अति करिया यतन ॥

नवम अध्ययन।

तृतीय उद्देश।

इन्द्रिय करिया जय सेइ साधुजन।
सत्य-पथगामी नित्य अति पूज्य हन ॥१३

सर्व्वलोक पूजनीय गुणेर सागर।
गुरुगण ह'ते शुनि विज्ञ साधुवर॥
सुभाषित मुक्तिप्रद संसार - तारक।
महाव्रत लन यिनि मुकति कारक॥
त्रिगुप्ति पालेन यिनि यतने सतत।
चारिटि कषाय-मुक्त हन सत्यव्रत॥
अशेष गुणेते गुणी लब्ध ज्ञानधन।
पूजित हयेन सेइ साधु विचक्षण॥१४

गुरुर सेवाय रत सदा सर्व्वक्षण।
आगम-प्रवीण यिनि सार्थक जीवन॥
साधुर सत्कारे यिनि दक्ष अतिशय।
पुराकृत रजोमल यार ध्वंश हय॥
तेजोमयी अनुपमा सिद्धि-रूपागति।
लभेन तिनिइ सिद्ध अपूर्व्वशकति॥१५

तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना।
बलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा॥

इति नवम विनय समाधि अध्ययनेर तृतीयोद्दशावचूर्णि समाप्त

दश-वैकालिक-सूत्र

अथ नवम अध्ययन ।

चतुर्थ उद्देश ।

सम्बोधिया जम्बुशिष्ये सुधर्म्मा प्रवीण ।
वलेन आयुष्मन् मोर शुन सुवचन ॥
भगवान् श्री महावीर कथित सुवाणी ।
शुनिले ज्ञानेर वृद्धि हइवे एखनि ॥
विनय समाधि स्थान हय चतुर्विध ।
अभिज्ञ छिलेन ताते स्थविर विबुध ॥
विनय समाधि, श्रुत, प्रथम द्वितीय ।
तपः समाधिर नाम हयेछे तृतीय ॥
चतुर्थ समाधि हय विख्यात आचार ।
सकल समाधि मार्गे धाय शुद्धाचार ॥
उक्त चारि समाधिते विज्ञ सत्यव्रत ।
जितेन्द्रिय हन आत्मा करि समाहित ॥१

नवम अध्ययन ।

चतुर्थ उद्देश ।

आदिष्ट शुश्रूषा हय प्रथम स्थानीय ।
सम्प्रतिपादन उहा कथित द्वितीय ॥
श्रुताराधना आर आत्मोत्कर्ष सम्पादन ।
तृतीय चतुर्थ वलि कहेन सज्जन ॥
निम्नोद्धृत श्लोके उहा हय उल्लिखित ।
विनय समाधि फल उहाते कथित ॥
विनय समाधि द्वारा मोक्षार्थी भिक्षुक ।
हयेन गुरुर आज्ञा शुनिते इच्छुक ॥
उहार मर्म्मार्थ साधु वुझिया तखन ।
श्रुतलाभे यथारीति करि आराधन ॥
विनीत शुसाधु आमि एइरूप ज्ञान ।
ना करिया साधु छाड़े निज अभिमान ॥२
श्रुत समाधिर भेद चारिटि प्रकार ।
निम्ने उहा यथारीति हइवे प्रचार ॥
श्रुतवाक्य अध्ययन, एकाग्र चिन्तन ।
स्वात्मार स्थापन धर्म्मे परकेओ तेमन ॥
निम्नोद्धृत श्लोके उहा विवृत हइवे ।
साधुरा उहार तत्त्व वुझिते पारिवे ॥
अध्ययने तत्परेर ज्ञानोदय हय ।
[illegible]ने हय सदा [illegible]थ[illegible] [illegible]त्तेर उदय ॥

नवम अध्ययन ।

चतुर्थ उद्देश ।

आत्मा हय धर्म्मेस्थित चित्तस्थिरताय।
आत्मस्थ धरमे जने स्थापन कराय ॥
श्रुत ज्ञान लाभ करि साधु तपोधन।
श्रुत समाधिते सदा अनुरक्त हन ॥३
चतुर्विध भेद हय तपः सनाधिर।
शुन मनोयोगे इहा साधक सुधीर॥
करिवेना तपः इह परलोक तरे।
संसार सम्बन्ध सब त्यजिवे अचिरे॥
कीर्त्ति वर्णादि श्लाघार्थे तपस्या त्यजिवे।
निर्जरा व्यतीत अन्य तपस्या छाड़िवे॥
श्लोके इहा पुनर्वार हयेछे वर्णित।
शुन उहा सावधाने साधु सत्यव्रत॥
त्रिविध गुणेर स्थान—तपस्या निरत।
हइवेन साधुवर भवे अविरत॥
निर्जरा लोलुप हये वासना छाड़िवे।
पूर्व्व पाप तपोवले विनाश करिवे॥
एइ रूपे तपोरत लभि ज्ञान धन।
तपः समाधिते रत हन साधुजन ॥४
चतुर्विध हय भवे समाधि आचार।
शुन साधु उहा यथा सुसाध्य सवार॥

नवम अध्ययन ।

चतुर्थ उद्देश ।

करिवेना उहा इह परलोक तरे ।
कीर्त्ति वर्णादि ते सदा ख्याति पाइवारे ॥
मूल गुणोत्तरगुण-मय ये आचार ।
छाड़िवे उहारे साधु करिया विचार ॥
जिन वचनेते रत्त हइवे साधक ।
वलिवेना पुनः कथा असूया सूचक ॥
प्रीति पूर्ण थाकिवेक सूत्रादिर योगे ।
मोक्षार्थी हइवे सदा आचार प्रयोगे ॥
करिवे आसन्न मोक्ष, इन्द्रिय दमिवे ।
आचार समाधि साधु अवश्य पालिवे ॥५
जानिया समाधि चारि पूर्व्वोक्त रीतिते ।
पालन करेन यिनि पापमुक्त हते ॥
कायमनोवाक्ये सदा विशुद्धहृदय ।
समाधिते युक्त हन अति पुण्यमय ॥
संयम - वलेते तिनि करेन स्वहित ।
अपूर्व आत्मज सुख लभेन सतत ॥६
समाधिते सिद्धिलाभ करि साधुजन ।
जनम मरण हते चिर मुक्त हन ॥
नारकादि चतुर्विध संसार कारण ।
वर्ण संस्थानादि सव करेन वर्जन ॥

नवम अध्ययन ।

चतुर्थ उद्देश ।

स्थायिरूपे सिद्ध हन विचित्र जगते ।
काटान समय तिनि अपार सुखेते ॥
अवशिष्ट कर्म्म यार थाके मोहमय ।
महर्द्धिक देवरूपे तार जन्म हय ॥७
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ॥८

इति नवम विनय समाधि अध्ययन समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ दशम अध्ययन ।

आचार्य्य आदेशे करि प्रव्रज्या ग्रहण ।
करेन प्रफुल्ल यिनि तदाज्ञा पालन ।।
नित्य समाधिते हन एकाग्रहृदय ।
चित्त हते दूर करि लोभ दुराशय ।।
भुक्त भोग्य ना करेन कखन ग्रहण ।
एइ भवे साधु बलि तिनि ख्यात हन ।।१
ये साधु सचित्त पृथ्वी करेना खनन ।
ना कराय अन्य द्वारा उहावा कखन
खनने प्रवृत्त जने ना देन सम्मति ।
त्रिविध करणे यार हय ना प्रवृत्ति ।।
शीतोदक येवा साधु ना करेन पान ।
ना करान् अन्य द्वारा पान सुमहान् ।।
अनुमति नाहि देन पिपासु मानवे ।
त्रिविध-करण - योगे संयम प्रभावे ।।

दशम अध्ययन ।

खड्गादि निशित अस्त्र-रूप भीमानल ।
ज्वालेना वा ज्वालाय ना कखन प्रवल ॥
करे ना सम्मतिदान अग्नि प्रज्ज्वालने ।
सर्व्वदा निवृत्त यिनि त्रिविध करणे ॥
सेइ साधु धराधामे सतत पूजित ।
भाव साधु नाम धरि ह्येन विख्यात ॥२
पाँखा द्वारा देह् येवा ना करे व्यजन ।
ना कराय अन्य द्वारा उहा वा कखन ॥
व्यजने तत्पर जने नेहारि कखन ।
नाहि देन अनुमति यिनि तपोधन ॥
करे ना कराय ना ये दूर्व्वादि छेदन ।
छेदने सम्मतिदान करे ना कखन ॥
करे ना सजीव खाद्य ये साधु ग्रहण ।
भाव साधु वलि विश्वे तिनि पूज्य हन ॥३
पृथ्वी तृण काष्ठ आदि आश्रये सतत ।
त्रस स्थावरादि कीट नाश हय कत ॥
औद्देशिक आहारेते वुभिया येजन ।
औद्देशिक भोज्य द्रव्य करे ना ग्रहण ॥
अन्नादि स्वयं कभु करे ना पाचन ।
ना कराय पर द्वारा येवा साधुजन ॥
देन ना सम्मति काके पाके अग्रसर ।
भाव साधु तिनि पूज्य साधक प्रवर ॥४

दशम अध्ययन।

श्री महावीर-वचने, दृढ़ासक्त मन।
षड्जीवे करेन ज्ञान आत्मार मतन॥
पञ्च महाव्रत यिनि मोक्षेर कारण।
संयत हइया सदा करेन पालन॥
हिंसा आदि पञ्चास्रव रोधेन सतत।
भावसाधु वलि भवे तिनि हन ख्यात॥५
क्रोध आदि भयङ्कर चारिटि कषाय।
त्याग करे साधु येवा प्रथित धराय॥
तीर्थङ्कर उपदेशे संयमेनिश्चल।
हइया ये साधु छिंड़े मायार शृङ्खल॥
चतुष्पद स्वर्ण रौप्य त्यजे तुच्छ भावि।
गृहस्थ सम्बन्ध छाड़े ममतानुधावी॥
भाव भिक्षु वलि तारे भवे सर्व्वजन।
ताहार सुख्याति करे श्लाघ्य तिनि हन॥६
अतीन्द्रिय विषयेते रहियाछे ज्ञान।
सञ्चित कर्म्मेर क्षये याहार धेयान॥
कर्म्मबन्धरोधकारी संयमे निरत।
तपस्या-प्रभावे यार पाप दूरीकृत॥
अशुभ प्रवृत्ति याहा पापेर आवास।
काय-मनोवाक्ये यार हयेछे विनाश॥
भाव भिक्षु वलि तिनि हयेन पूजित।
ताँहाकेइ श्रद्धा करे मानव सतत॥७

दशम अध्ययन ।

आगामी परश्व दिन-तरे कोनस्थाने ।
ना राखेन एकरात्रि स्वीय प्रयोजने ॥
अनेक प्रकार यिनि आहार्य्य पानीय ।
खाद्य स्वाद्य वहुविध विविध जातीय ॥
ना राखान नरद्वारा देनना सम्मति ।
सञ्चय वासना मुक्त हन भाव यति ॥८
प्राप्त हये खाद्य स्वाद्य पानीय अशन ।
समान धार्मिक जने करे निमन्त्रण ॥
ये साधु अर्पण उहा थाकि समादरे ।
करेन भक्षण यिनि [illegible] ॥
स्वाध्यायेते रत तिनि शरार भूषण ।
प्रकृति भिक्षुक वलि कुण्ठित हन ॥९
हय ना मुखेते यार कभु उच्चारण ।
कलहेर कथा सदा अशान्ति कारण ॥
सद्वाद कथाय यार नाहि हय क्रोध ।
करेन इन्द्रिय शक्ति सतत निरोध ॥
काय-मनोवाक्ये यिनि संयमेते रत ।
प्रशान्त-हृदय यिनि आकुल-रहित ॥
अनादर नाहि यार कर्त्तव्य साधने ।
भाव साधु वलि तिनि ख्यात एभुवने ॥१०
दशेन्द्रिय-कण्टकेर आक्रोशा प्रहार ।
दुर्ज्जन सहेन यिनि अति अत्याचार ॥

दशम अध्ययन।

वेतालादि कृत शब्द अट्टहास आर।
शुनियाओ सुखदु खे समभाव धार॥
तिनिइ प्रकृत साधु सर्व्वगुणाधार।
भाव साधु वलि तिनि पूजित सवार॥११
श्मशाने प्रतिमा किम्वा दृश्य भयङ्कर।
नेहारि ये साधु हन निर्भय अन्तर॥
साधुवर यिनि हन वहु गुण युत।
दिन रात हितकर तपस्याय रत॥
ना करेन अभिलाप शरीर धारणे।
वर्त्तमान ओ भविष्यत् सुखेर कारणे॥
ईदृश संयत मुनि ममता-विहीन।
भाव साधुरुपे ख्यात हन चिरदिन॥१२
शरीरे ममता करि शरीरेर शोभा।
त्यजेन ये साधुवर अति मनोलोभा॥
भर्त्सित प्रहृत किम्वा कर्त्तित भक्षित।
हइया सहनशील पृथिवीर मत॥
करेना कामना येवा साधक प्रवीण।
कुतूहल देखाशुना-सम्बन्ध विहीन॥
भाव साधु वलि तिनि भवे ख्यात हन।
ताहाकेइ लोके करे सभक्ति पूजन॥१३
ये साधु धराय थाकि अति अनुरागे।
क्लेश राशि जय करे शरीर प्रयोगे॥

दशम अध्ययन ।

जनम मरण रूप - संसार हइंते।
उद्धार करेन आत्मा तपस्या - वलेते ॥
भयङ्कर बुझि यिनि जनम मरण ।
साधु सदाचारे थाकि तपस्या मगन ॥
भाव साधु वलि भवे तिनि ख्यात हन ।
सर्व्वलोके करे तारे सभक्ति पूजन ॥१४
हस्त पाद वाक्ये यिनि सतत संयत ।
जितेन्द्रिय साधु यिनि धर्म्म-ध्याने रत ॥
हइयाछे समाहित आत्मा यार भवे ।
अध्यात्म चर्च्चाय यिनि लिप्त सर्व्वभावे
आगम सूत्रेर अर्थ यार सुविदित ।
भाव साधु वलि तिनि जगते विख्यात ॥१५
ये साधु पात्रादि वस्त्र - स्वीयोपकरणे ।
ममता लालसा त्याग करेन यतने ॥
विना परिचये गृहे भिक्षातरे यान ।
दोषहीन भिक्षा लाभे सन्तुष्ट पराण ॥
पुलाक ओ निस्पुलाक दोष हंते दूरे ।
थाकेन सङ्कल्पवद्ध संयमेर तरे ॥
खरिद विक्रये किम्वा सञ्चये विरत ।
हइया सकल सङ्ग त्यजेन सतत ॥
भाव भिक्षु तार नाम सफल जीवन ।
मोक्ष लाभे नित्य तिनि करेन यतन ॥१६

দশম অধ্যয়ন ।

অলব্ধ বস্তুর যাচ্না-লোভেতে বিরত ।
লাভে ও আহার রসে নাহি যিনি প্রীত ॥
আবেতে বিশুদ্ধ হ'য়ে গোচরী-প্রবণ ।
সংযমবিহীন প্রাণ না চান কখন ॥
স্থির চিত্ত, ঋদ্ধিস্তুতি সৎকার পূজন ।
চাহেনা যে সাধু তিনি ভাব ভিক্ষু হন ॥১৭
যে সাধু বলেনা কভু অমুক কুশীল ।
ক্রোধের জনক বাক্য অথবা অশ্লীল ॥
পাপাপুণ্য-জন্য - দাহ বেদনা প্রখর ।
প্রত্যেক আত্মার হয় জানি যতিবর ॥
নিজ আত্মা সর্ব্বগুণে উৎকৃষ্ট আমার ।
অভিমান এতাদৃশ মনে নাহি যার ॥
তাহাকেই নরগণ করেন পূজন ।
ভাব সাধু বলি ভবে তিনি খ্যাত হন ॥১৮
জাতিমত্ত রূপমত্ত না হয়েন যিনি ।
লাভে ও শ্রুতের জ্ঞানে অপ্রমত্ত মুনি ॥
সর্ব্ববিধ গর্ব্ব ত্যজি ধর্ম্ম ধ্যানে রত ।
ভাব ভিক্ষু বলি হন তিনি সুপূজিত ॥১৯
মহামুনি শ্লাঘ্য যিনি বিনয় প্রধান ।
পরহিতে উপদেশ করেন প্রদান ॥
স্থির থাকি নিজ ধর্ম্মে অপরে উৎসাহে ।
করান সুস্থির পরে ধরমে আগ্রহে ॥

দশম অধ্যয়ন।

কুশীল আরম্ভ আদি চেষ্টা তেয়াগিয়া।
হাস্যকারী কুহকেতে যুক্ত না হইয়া॥
প্রব্রজ্যা লইয়া যিনি হন সমাহিত।
ভাব ভিক্ষু বলি তিনি হয়েন পূজিত॥২০
অশুচি অনিত্য দেহে মমতা ত্যজিয়া।
রাখি হিতে নিজ আত্মা আগম স্মরিয়া॥
সংসারের বন্ধ হেতু জনম মরণ।
উভয়ের হেতু যিনি করেন ছেদন॥
সিদ্ধিগতি, তিনি ভবে সাধু প্রাপ্ত হন।
ভাব সাধু নাম তার সফল জীবন॥২১
তীর্থঙ্কর মহাপূজ্য সাধক যাহারা।
দিয়াছেন উপদেশ হিতার্থে তাহারা॥
স্মরি সেই উপদেশ ত্যজি স্বকল্পনা।
বলিতেছি পূর্ব্বরূপ করিও ধারণা॥২২

ইতি দশম সভিক্ষ্বধ্যয়ন সমাপ্ত।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

अथ प्रथम चूलिका ।

भिक्षु भिक्षुगुण - युक्त तपोवले हय ।
दशमाध्ययने उहा उल्लिखित रय ॥
पूर्व्व कर्म्म फले साधु यदि दुःख पाय ।
चूलिका द्वयेते आछे उद्धार उपाय ॥
गुरु महाराज कहे हे शिष्य ! आमार ।
संयम त्यजिया यदि दुःख हय कार ॥
संयम त्यजिते पुनः करे वा प्रयास ।
अष्टादश स्थान चित्ते करिबे विकाश ॥
लागाम धरिले अश्व सुपथेते धाय ।
अङ्कुश आघाते हस्ती हितपथे याय ॥
पताकार बले नौका चले नानापथे ।
पताका लइया चले ताइ साथे साथे ॥
सेइ रूप यदि केह अष्टादश स्थान ।
वुझिया सतत राखे संयमे धेयान ॥
ताहार पतन भवे कभु ना सम्भवे ।
संसार सागर हते सेइ उद्धारिबे ॥

प्रथम चूलिका ।

हे शिष्य ! सकल प्राणी थाकि ए संसारे ।
दु.खमय समयेते दुःख भोग करे ॥
गृहस्थ आश्रमे वास यदि दु.खतरे ।
तथाय थाकिते इच्छा केन नर करे ? ॥१
गृहस्थेर काम भोग अति तुच्छ हय ।
अल्पकाल स्थायी उहा अति दु.खमय ॥२
नरगण मायावद्ध हय चिर दिन ।
अविश्वस्त हये हय सन्तोष विहीन ॥
भोगेर वासना द्वारा सर्व्वदा विह्वल ।
एहेन गृहस्थाश्रमे थाकि किवा फल ॥३
संयमेते उद्वेगेर हइले सञ्चार ।
चिन्तिवे यतने साधु निम्नोक्त प्रकार ॥
शारीरिक मानसिक दुःख चिरकाल ।
थाकिवेना कर्म्मवन्ध परम जञ्जाल ॥
गृहाश्रमे लालसाय किवा हवे फल ।
संयमेते दृढ़ थाकि हइवे सफल ॥४
अर्च्चना सत्कार करे संयमी साधुके ।
वड़ वड़ महाराज थाकि इह लोके ॥
दीक्षात्यागी साधुजन कार्य्य सिद्धितरे ।
साधारण लोकगणे खोशामोद करे ॥
एहेन दुर्दशा हेरि कोन साधु जन ।
याइते इच्छुक हन गृहस्थ भवन ? ॥५

प्रथम चूलिका ।

त्यजि भागवती दीक्षा गृही येवा हय ।
गृहस्थेर सुखभोगे आसक्त हृदय ॥
वमन करिया पुनः ये करे भोजन ।
तारमत तिनि हन तुच्छेर कारण ॥६
संयम त्यजिया पुनः गृही हन यिनि ।
दुर्गति लाभेर पथे चलिवेन तिनि ॥६
भार्य्या पुत्र मित्रामित्र युक्त ए संसारे ।
धर्म्मलाभ कोन जन करिते ना पारे ॥
चलिले साधक लये संयम दुर्लभ ।
धर्म्मलाभ तार पक्षे अतीव सुलभ ॥८
ये गृहस्थ असंयमी हय क्षितितले ।
संसर्गज रोग तारे नाशे अवहेले ॥६
सङ्कल्प विकल्प आदि आतङ्क मनेर ।
गृहस्थेर सदा हय कारण नाशेर ॥१०
जीविका निर्व्वाहे गृही सतत चिन्तित ।
वाणिज्यादि सदा करे अभाव ताड़ित ॥
कत कष्ट पाय सदा गृहे करि वास ।
संयमीर विना क्लेशे मोक्षेते प्रयास ॥११
यथा कीट आत्मकोशे वद्ध सदा रय ।
गृहावास महावन्ध जानिवे निश्चय ॥
उपक्लेश चिन्ता [illegible] न्य संयमि-जीवन
सुखमय सदा हय मोक्षेर साधन ॥१२

प्रथम चूलिका ।

गृहावासे गृही दुःखी पापेर कारणे ।
संयमी निष्पाप हय अहिंसा पालने ॥१३
चौर पशु आदि यथा काम भोग करे ।
गृहिगण तथा काम भुञ्जे ए संसारे ॥१४
वहु द्वारा पाप पुण्य अनुष्ठित हय ।
अनुष्ठाता भुञ्जे फल नाहिक संशय ॥१५
कुशाग्रेर जलविन्दु यथा क्षण रय ।
मानव जीवन तथा अनित्य निश्चय ॥१६
करियाछि वहुपाप आमि दुराशय ।
चारित्र मोहनीयादि सकल समय ॥
अन्यथा हत ना मोर एत अधोगति ।
ना हइवे लुब्ध मन गृहाश्रम प्रति ॥१७.
करियाछि पाप पुण्य पूरव जनमे ।
प्रमाद कपाय आदि वशे पड़ि क्रमे ॥
मिथ्यात्व ओ अविरति कर्म्म मोर अति ।
पराक्रान्त हयेछिल ताहे ए दुर्गति ॥
कर्म्मफल भुञ्जि परे यदि तपस्याय ।
पूरव करम करि एकवारे क्षय ॥
ताहा ह'ले मोक्षमार्ग पाइव निश्चय ।
कर्म्म भोग ना करिले नाहि फलोदय ॥
संयमइ श्रेष्ठ इथे नाहिक संशय ।
अष्टादश स्थान सदा कर परिचय ॥

प्रथम चूलिका।

इङ्गाङ्गे एवे मोर मोहेर भञ्जन।
गृहाश्रमे आर मोर किवा प्रयोजन? १८
चारित्र्यादि धर्म्म छाड़े भोगेर कारण।
ये अनार्य्यो धर्म्मत्यागी भोगेबद्ध मन॥
जानेना से परिणाम भावी नराधम।
निर्व्वोध बालक मत छाड़िया संयम॥१
संयमेर बहिर्द्देशे करिया गमन।
इन्द्रासन छाड़ि यथा इन्द्रेर पतन॥
सर्व्व धर्म्म हते तथा साधु भ्रष्ट हन।
अनुतप्त हन परे मोहेर कारण॥२
संयमादि साधुकार्य्य करि साधुजन।
सुरेन्द्र नरेन्द्र द्वारा सुपूजित हन॥
किन्तु साधु धर्म्म हते भ्रष्ट यदि हन।
केह नाहि करे तारे सभक्ति पूजन॥
स्थानच्युत देव यथा सन्तप्त हृदय।
धर्म्मभ्रष्ट तथा साधु अनुतप्त हय॥३
संयमी पूजित हय तपस्या निरत।
धर्म्म भ्रष्ट साधु कभु ना हय पूजित॥
राज्य भ्रष्ट राजा यथा अनुतप्त हय।
धर्म्मभ्रष्ट हये साधु विपण्ण हृदय॥४
धर्म्मरत साधु हय सदा माननीय।
धर्म्महीन हये पुनः घृणार स्थानीय॥

प्रथम चूलिका ।

कुग्रामेते परित्यक्त श्रेष्ठीर मतन ।
धर्म्मभ्रष्ट हये साधु अनुतप्त हन ॥५
असंयमी अतिक्रमि सुन्दर यौवन ।
वार्द्धक्य अवस्था मन्द यवे प्राप्त हन ॥
गिलिया वड़शी मनुष्य यथा सहे क्लेश ।
तथा वृद्ध लोभे पाय सन्ताप अशेष ॥६
असंयमी वृद्ध यवे हयेन पीड़ित ।
कुकुटुम्ब - दोपकर-चिन्ताय निरत ॥
शृङ्खल वन्धनयुत हस्तीर मतन ।
अनुतापे दग्ध हन वृद्ध आजीवन ॥७
असंयमी वृद्ध हये पुत्रदारान्वित ।
दर्शन ओ मोह आदि कर्म्मेते व्यापृत ॥
कर्द्दम - पतित - वन गजेर मतन ।
अनुतापानले दग्ध हन सर्व्वक्षण ॥८
असंयमी वृद्ध जन चिन्तेन सतत ।
निम्नोक्त प्रकारे भवे हये सन्तापित ॥
"यदि आमि थाकिताम साधुभावे स्थिर ।
प्रव्रज्या ते रति मोर थाकित गभीर ॥
भावितात्मा बहुश्रुत हये एइ क्षणे ।
वसिताम सर्व्वपूज्य आचार्य्य आसने" ॥९
संयमेते रत सदा महर्षि पर्य्याय ।
सुखेर प्रदानकारी त्रिदिवेर न्याय ॥

प्रथम चूलिका ।

संयत विहीन जन प्रव्रज्या रहित ।
दारुण नरक कष्ट पाय अविरत ॥१०
साधुर आचारे रत महर्षि सकल ।
देव तुल्य श्रेष्ठ सुख भुञ्जे अविरल ॥
साधुर आचार भ्रष्ट लोक नराधम ।
नरक सदृश दुःख पाय सुविषम ॥
बुझिया पूर्व्वोक्त फल सदसद्विवेकी ।
सदाचारे रत हन मोक्षमार्गे थाकि ॥११
यज्ञ शेषे भष्मानल अल्प तेजोयुत ।
उद्धृत - दशन सर्प घोर विष मत ॥
धर्म्मभ्रष्ट दोषकारी तपोलक्ष्मी हीन ।
नर के अवज्ञा करे स्वभाव मलिन ॥१२
ये जन धरमभ्रष्ट, अधर्म चालक ।
अखण्डनीय चारित्र-खण्डन कारक ॥
इहलोके अधर्म्मात्मा तारे सबे कय ।
पराक्रमाभावे तार कीर्त्ति नाश हय ॥
पतित बलिया तारे सामान्य मानव ।
दुर्नाम करिते थाके अति असम्भव ॥
विशिष्ट लोकेर कथा कि बलिब आर ।
लाञ्छना पाइते हय अत्यन्त ताहार ॥१३
कृष्यादि स्वरूप अति सन्तोष विहीन ।
संयमविहीन काजे मन यार लीन ॥

प्रथम चूलिका ।

अ' हेलि धर्म्मपथ भुञ्जे ये विषय ।
दु:खप्रद विघ्नपथे तार गति हय ॥
वहुजन्म घूरि फिरि करिले यतन ।
जिनधर्म्म प्राप्ति तार ना हय कखन ॥१४
नरके याइया जन्तु वहुदु:ख पाय ।
अति क्लेशे यातायात करे तथा हाय ॥
पल्य वा सागरोपम वहु काल थाके ।
कत ये यातना पाय विषम नरके ॥
अरति स्वरूप दु:ख संयमे आमार ।
हे गुरो सतत हय कि करिव आर ॥१५
संयमे अरति रूप दु:ख चिर दिन ।
थाकिवेना ममभाग्ये असुख विहीन ॥
भोगेर पिपासा वाड़े यौवन समये ।
वृद्धकाले ह्रास पाय शक्तिहीन हये ॥
वृद्धकाले देह हते ना गेले पिपासा ।
आयु:शेषे दूर हवे एइ मोर आशा ॥१६
ये जन सर्व्वदा थाके संयमेते रत ।
तार आत्मा हय भवे अति दृढ़व्रत ॥
आसन्न विपदे त्यजे से देह केवल ।
करेना से परित्याग धरम सम्वल ॥
येमन प्रवल वायु उत्थित हइले ।
हेलाइते नारे कभु सुमेरु अचले ॥

प्रथम चूलिका ।

तेमनि इन्द्रियगण पापेर निदान ।
कदापि कांपाते नारे धार्म्मिकेर प्राण ॥१
सुबुद्धि साधक बुझि अष्टादश स्थान ।
ज्ञान ओ दर्शनादिते हये ज्ञानवान् ॥
उहार साधनरीति सयत्ने बुझिया ।
कायमनोवाक्ये सदा संयम राखिया ॥
त्रिगुप्तिते गुप्त हये जैनेन्द्र कथित ।
शास्त्रोक्त क्रियाय हय तत्पर सतत ॥१८
तीर्थङ्कर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ॥
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
बलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ॥१

इति रतिवाक्य चूलिका समाप्त ।

दश-वैकालिक-सू ।

अथ द्वितीय चूलिका ।

द्वितीय चूलिका कथा केवलिभाषित ।
शुन मन दिया सबे, हइया संयत ।।
कुरकण्डुक नामक छिल एकजन ।
जैन धर्म्म भक्तियुक्त यति तपोधन ।।
साध्वीर आदेशे, तिनि करि अनशन ।
द्रुतकाले कर्म्मफले हारान जीवन ।।
मृत्युवार्त्ता शुनि साध्वी उद्विग्ना रमणी ।
सीमन्धर गुरुकाछे चलेन तखनि ।।
भावेन उद्विग्ना मने किसेर कारण ।
करिलाम अनशने मुनि विनाशन ?
गुरुके बलेन साध्वी आमि अभागिनी ।
तवादेशे कथा कहि मोक्ष-विधायिनी ।।
एक साधु ममवाक्ये करिया विश्वास ।
हारायेछे प्राण इहा हयेछे प्रकाश ।।

द्वितीय चूलिका ।

नाहि दोष इथे मोर गुरो शुद्धाचार ।
तोमार प्रदत्त ज्ञान करेछि प्रचार ॥
शुनिया पूर्व्वोक्त कथा पुण्यशीलजन ।
चारित्र धर्म्मेते रत हन सर्व्वक्षण ॥१

विषय-विकार रूप प्रवाहे पतित ।
सांसारिक जीव सव हतेछे वाहित ॥
प्रतिकूल प्रवाहेते पालिया संयम ।
शुद्धचित्त पुण्यफल लभेन परम ॥
सुयोग संयमे कारो हइले कखन ।
ना करिवे व्यर्थ उहा विज्ञ साधुजन ॥
मुमुक्षु साधकवर मोक्षलाभ तरे ।
सतत संयमे स्थिर राखेन आत्मारे ॥२

अनुकूल विषयादि सुख आछे यत ।
निम्नगति जलराशि पतनेर मत ॥
संसारई अनुस्रोत शास्त्रे उक्त हय ।
प्रतिस्रोत विपरीत जानिवे निश्चय ॥
इन्द्रियादि जयकारी आस्रव भूतले ।
भवोद्धारे प्रतिस्रोत जानिवे सकले ॥
जनम मरण रूप संसार विषम ।
अनुस्रोत वलि उहा हय अनुगम ॥
संसारेर भोग लिप्सा हइते निस्तार ।
प्रतिस्रोत रूपे भवे हयेछे प्रचार ॥३

द्वितीय चूलिका ।

ज्ञानादि आचारे नित्य पराक्रमयुत ।
इन्द्रियादि निरोधक संवरे सुस्थित ॥
संयम विशुद्धितरे देखिवे साधक ।
चर्य्या गुण ओ नियम पवित्र कारक ॥
गृहेर विशुद्धि ज्ञान, अनियत वास ।
विशुद्ध वस्तुर प्राप्ति निर्ज्जन निवास ॥
वसन पात्रादि वस्तु-अल्प संरक्षण ।
कलह् व्यापार ह्ते दूरे आगमन ॥
अप्रतिहत विशुद्ध साधुर विहार ।
पूर्व्वोक्त कार्य्येर नाम चर्य्या शुद्धाचार ।
गुण हय द्विप्रकार शुन साधु जन ।
मूल ओ उत्तर गुण संयम निदान ॥
पिण्डेर विशुद्धि आदि आसेवना रूप ।
शास्त्रेते कथित हय नियम स्वरूप ॥४
अनियत पान आर भिक्षा वहुस्थाने ।
विशुद्ध वस्तुर लाभ संस्थिति विजने ॥
वस्त्र पात्र उपधिक, अल्प सरक्षण ।
कलह व्यापारे ह्ते दूर आगमन ॥
विहरण गतिस्थिति प्रशस्त मुनिर ।
पालिवे सतत उहा करि वुद्धि स्थिर ॥५
जनताय परिपूर्ण कोलाहलयुत ।
राजार दरवार किम्वा सभा समाहूत ॥

द्वितीय चूलिका ।

अथवा यथाय भय आछे लांछनार ।
स्वपक्ष वा परपक्ष ह'ते अविचार ॥
विहार चर्य्याय साधु पूर्वेर स्थान ।
तेयागिया अन्यस्थाने करिवे प्रस्थान ॥
कथित सकल स्थान सदोप जानिवे ।
आकीर्ण स्थानेते सदा आघात पाइवे ॥
अपमान स्थाने लाभ हयना काहार ।
आधा कर्म्म आदि दोप घटे वारंवार ॥
त्यजिया पूर्व्वोक्त दोप आहार्य्य ग्रहण ।
करिवेक यथारीति यति तपोधन ॥
हस्त मात्रकादि द्वारा संसृष्ट विधिते ।
भिक्षा आहरिवे भिक्षु जैनशास्त्र-मते ॥
निरवद्य आहारेते हात लागाइवे ।
सावद्य वस्तुते हात कभु ना फेलिवे ॥६
मद्य मांस खाइवेना कभु साधुजन ।
करिवेना परद्वेष भ्रमेओ कखन ॥
सरस विकृत घृत आर दुग्धपान ।
करिवेना साधुजन पापेर निदान ॥
यातायाते किम्वा परिभोगे विकृतिर ।
काय्योत्सर्गकारी हवे साधु महावीर ॥
वाचनादि कार्य्ये साधु हवे यत्नशील ।
पालिवे पूर्व्वोक्त विधि साधक सुशील ॥७

द्वितीय चूलिका ।

मासादि कल्प समाप्ति हले शुद्धप्राण ।
करिवेना सेइ स्थाने साधु अवस्थान ॥
स्वाध्याय भूमि ओ शय्या भक्तपान एवे ।
आमाके सादरे तूमि अर्पण करिवे ॥
करावेना एइरूप प्रतिज्ञा कखन ।
गृहस्थके साधुजन स्मरि सत्यपण ॥
ग्रामे वा श्रावककुले देशे वा नगरे ।
करिवेना माया कोन वस्तुर उपरे ॥८
गृहस्थेर भोजनादि सेवा ना करिवे ।
वन्दना प्रणति पूजा साधुरा त्यजिवे ॥
ये साधु-गणेर सङ्गे ना हय कखन ।
चारित्रेर हानि कभु जानि सर्व्वक्षण ॥
ताहादेर संगे थाकि साधक सुमति ।
करिवेक मित्रभावे एकत्र वसति ॥९
साधु गुणाधिक किम्वा समगुण सखा ।
विहार कालेते यदि नाहि पाय देखा ॥
ताहले एकाकी त्यजि पापज आचार ।
अनासक्त हये कामे करिवे विहार ॥१०
वर्षाऋतु काले साधु शुधु चारि मास ।
ऋतुवद्धकाले पुनः एकमास वास ॥
एकस्थाने करिवेक संयम-प्रधान ।
आगम कथित इहा उत्कृष्ट प्रमाण ॥

द्वितीय चूलिका ।

अतीत ना हले पुनः ·समय द्विगुण ।
तथाय कभु ना करे साधुरा गमन ॥
चारिमास ऋतुवद्ध मासेर द्विगुण ।
समय ना हले गत साधुरा वसन ॥
चातुर्मास्य मासकल्प करिवेना तथा ।
ठिक पथे चलिवेक सूत्रे आछे यथा ॥
विधि वा निषेध-वाक्य सूत्रे उल्लिखित ।
पालन करिवे साधु हये सुविदित ॥११
रात्रिर प्रथम भागे अथवा अन्तिमे ।
आत्मा द्वारा आत्मा देखे ये साधु मरमे ॥
ताहार कल्पित आत्मचिन्तन प्रकार ।
लिपिवद्ध करितेछि शुन एइवार ॥
यथाशक्ति करियाछि कोन तपोव्रत ।
अवशिष्ट आछे कोन कर्त्तव्य विहित ॥
आगमोक्त वैयावृत्ति आदि कर्म्म कत ।
सामर्थ्ये थाकिते उहा हय नाइ कृत" ॥१२
अपर, कोन कि त्रुटि, देखेन आमार ।
अत्यल्प वैराग्य किवा हयेछे आत्मार ॥
कोन भ्रम दोषयुत अज्ञानजड़ित ।
करि नाइ त्याग आमि मायाय मोहित ॥
इत्यादि वाक्येर अर्थ हये सावधान ।
आगमोक्त विधिवले वुझि भ्रमज्ञान ॥

द्वितीय चूलिका ।

भविष्यते जन्मावेना वाधा संयमेते ।
वुभिया चलिवे साधु गड़ पृथिवीते ।।१३
नियमित गतिपथे अश्व चालाइते ।
चालक अश्वके युक्त करे लागामेते ।।
तथा काय-मनोवाक्ये संयम-विच्युत ।
स्वकीय आत्माके हेरि प्रमाद संयुत ।।
धीर साधु अवरोधि, आत्मार विकार ।
करेन संयत आत्मा हये शुद्धाचार ।।१४
धैर्य्यशील जितेन्द्रिय ये साधु पुरुष ।
स्वहितालोचना-मतिरूप योग आसे ।।
काय-मनोवाक्ये सदा ताहाके सकले ।
संयमेते सावधान साधु श्रेष्ठ वले ।।
पूर्व्वरूप गुणे युक्त सेइ साधुवर ।
सतत संयमे हन वद्धपरिकर ।।१५
संयत - इन्द्रिय-युक्त संयमी साधक ।
स्वपर आत्मार हन सतत रक्षक ।।
परलोक - समुत्पन्न अपाय हइते ।
करेण आत्मार रक्षा तिनि संयमेते ।।
संसारे आवद्ध हय आत्मा अरक्षित ।
सर्व्वदुःख मुक्त हय आत्मा सुरक्षित ।।
तीर्थकर महापूज्य साधक याहारा ।
दियाछेन उपदेश हितार्थे ताहारा ।।
स्मरि सेइ उपदेश त्यजि स्वकल्पना ।
वलितेछि पूर्व्वरूप करिओ धारणा ।।

वि-विक्तचर्य्या नामक द्वितीय चूलिका समाप्त ।

दश-वैकालिक-सूत्र ।

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजीमतीर उपाख्यान

उग्रसेन नामे छिल राजा मिथिलाय ।
धारिणी ताहार राणी विख्यात धराय ॥
कंस नामे एक पुत्र, कन्या राजीमती ।
प्रसव करेन राणी अति बुद्धिमती ॥
अत्यन्त सुशीला छिल कन्या राजीमती ।
सुन्दरी परमा धन्या लक्ष्मीर मूरति ॥
यदुवंशे दशभ्राता छिल शौर्य्यपुरे ।
अतुल प्रतापशाली विख्यात समरे ॥
वसुदेव नामे छिल एक सहोदर ।
सकल कनिष्ट यिनि स्वधर्म्मतत्पर ॥
रोहिणी देवकी छिल दुइ राणी तार ।
पति-सेवारता सदा अति शुद्धाचार ॥
रोहिणी - पुत्रेर छिल वलभद्र नाम ।
केशव देवकीपुत्र छिल अभिराम ॥

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजोमतोर उपाख्यान ।

वसुदेव - ज्येष्ठ - भ्राता समुद्रविजय ।
पालन करेन राज्य उदार-हृदय ।।
समुद्रविजय-पत्नी शिवा पुण्यवती ।
प्रसव करेन एक पुत्र सुमूरति ।।
अरिष्टनेमि नामेते तिनि ख्यात हन ।
कालक्रमे पान तिनि सुन्दर यौवन ।।
राजीमती कन्या सह अरिष्टनेमिर ।
विवाह प्रस्तावे यान केशव सुधीर ।।
शुनि वार्त्ता विवाहेर राजा उग्रसेन ।
प्रफुल्ल हइया अति केशवे वलेन ।।
आसिले हेथाय वर विवाहेर दिने ।
राजीमती समर्पिव उल्लसित-मने ।।
यखनि विवाहवार्त्ता प्रचार हइल ।
माङ्गलिक कार्य्य सर्व्व आरम्भ करिल ।।
शंखेर ध्वनिते काँपे प्रासाद राजार ।
उलुध्वनि देय नारी करे गृहाचार ।।
अरिष्टनेमिके देन सुन्दर भूषण ।
सज्जित करेन तारे वरयात्रि - गण ।।
हाती घोड़ा सैन्य सह शिपिकारोहणे ।
अग्रसर हन तिनि विवाह भवने ।।

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजोमतोर उपाख्यान ।

पथे हेरि वहु दीन पशु पक्षिगण ।
खोंयारे आवद्ध हये करिछे क्रन्दन ॥
नेहारि एहेन दशा सारथिके वर ।
जिज्ञासे इहार वल कारण विस्तर ॥
सारथि विनीतभावे वले नेमिनाथे ।
विवाहे एसेछे वहु धनिजन रथे ॥
मांस खाद्य व्यवहृत भोजने हइवे ।
राजसिक प्राणि वधे सन्तोप लभिवे ॥
शुनि हिंसावाक्य नेमि सारथिर मुखे ।
चिन्तित हलेन अति जनता सम्मुखे ॥
भावेन अरिष्टनेमि आमार कारण ।
हइवेक पशु - पक्षि - जीवेर निधन ॥
परलोके ना हइवे मङ्गल आमार ।
अलीक भोगेर तरे जीवेर संहार ॥
त्यजिया कुण्डल आदि भूपण सकल ।
द्वारिकाय चले यान हइया विह्वल ॥
तथा हते रैवतके यान क्षुन्नमन ।
करेन अरिष्टनेमि केश - उत्तोलन ॥
प्रवज्या लइया हन ध्यानेते तत्पर ।
भुलेन संसार-माया साधु योगपर ॥

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजोमतीर उपाख्यान ।

वासुदेव हेन काले प्रसन्न वदने ।
आशीर्व्वाद देन ताके निम्नोक्त वचने ॥
हइवे अभीष्ट सिद्धि शीघ्र आपनार ।
दर्शन चारित्र ज्ञान आसिवे सुसार ॥
निर्लोभता आदि द्वारा हवेन उन्नत ।
हइवेन भूभारते सर्व्वत्र विख्यात ॥
रामभद्र केशवादि यादव सकल ।
नेमिनाथ - वन्दनार्थे हयेन विह्वल ॥
यादव सकल आसे त्वरा द्वारिकाय ।
अरिष्टनेमिर ख्याति उच्चस्वरे गाय ॥
एदिके राजार कन्या सती राजीमती ।
दीक्षित अरिष्टनेमि जानि बुद्धिमती ॥
शोके दुःखे अतिशय हये म्रियमाण ।
हाय हाय वलि हन विह्वल - पराण ॥
जनक जननी तार निरखिया भाव ।
अन्यसह विवाहेर करेन प्रस्ताव ॥
से प्रस्तावे राजीमती हन अस्वीकृता ।
धरमेते स्थिर - मति हलेन वनिता ॥
विचारि स्वामीर कार्य्यो त्याग शिक्षादान ।
धन्या हये त्याग धर्म्मे हन आगुयान ॥

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजीमतीर उपाख्यान

निज मोहे राजीमती निजेके धिक्कारे ।
त्यागधर्म्म उपजिल ताहार अन्तरे ॥
नेमिनाथ लभेछेन परमार्थ ज्ञान ।
करेछेन चतुर्विध संघेर स्थापन ॥
शुनि हेन वार्त्ता तार उपजिल मने ।
नेमिनाथ तुल्य साधु ना आछे भुवने ॥
नेमिनाथ हते दीक्षा करिते ग्रहण ।
राजीमती मने मने करेन चिन्तन ॥
सार्थक हइवे मोर तुच्छ ए जीवन ।
नेमिनाथ हते दीक्षा करिले ग्रहण ॥
भावेन संसारे थाकि आमि कि करिव ।
दीक्षा लाभे श्रेष्ठ पथे सत्वर चलिव ॥
जितेन्द्रिय राजीमती दीक्षिता हइते ।
वहिर्गत हइलेन आलय हइते ॥
केशव आशिष देन अति फुल्लचिते ।
उत्तीर्ण हइवे तुमि भवार्णव ह'ते ॥
राजीमती शीघ्र करि सन्न्यास ग्रहण ।
करेन पवित्र चित्ते संयम पालन ॥
एकदा श्री नेमिनाथे करिते दर्शन ।
रैवतक अभिमुखे करेन गमन ॥

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजीमतीर उपाख्यान ।

मुसुल धाराय पथे वृष्टि आरम्भिल ।
राजीमती-देहवस्त्र सकलि भिजिल ॥
अवशेषे कोनमते एकाकिनी हाय ।
लयेन आश्रय तिनि भीषण गुहाय ॥
जनशून्या गुहा इहा भावि निज करे ।
शुकाइते निज वस्त्र क्षिपेन वाहिरे ॥
अरिष्टनेमिर भ्राता संयम - तत्पर ।
गुहाते ध्यानरत छिल श्रमणेर पर ॥
नग्न देहा राजीमती निरखिया तिनि ।
कामभावे विचलित हलेन अमनि ॥
नेहारि ताहाके कांपे भीता राजीमती ।
लज्जास्थान करे ढाकि वसिलेन सती ॥
भयभीता कुमारीके करिया दर्शन ।
काममत्त रथनेमि वलेन वचन ॥
सुरूपे चन्द्र - वदने सुचारु-भाषिणी ।
स्वामित्वे वरण कर मोरे अभागिनी ॥
निर्भये उत्तर दाओ भूल पूर्व कथा ।
दोहे भुञ्जि भोगसुख दूर कर व्यथा ॥
मनुष्य जनम हय अतीव दुर्लभ ।
भोगपारे जैनमार्ग हइवे सुलभ ॥

परिशिष्ट ।

रथनेमि ओ राजीमतीर उपाख्यान ।

रथनेमि मनोवल नष्टप्राय हेरि ।
वलेन सुमिष्टस्वरे राजार कुमारी ॥
जानिओ जगते सवे कालेर कवले ।
पड़िवे मरणकाल आगत हइले ॥
धर्म्माधर्म्म विचारे ये शकति विहीन ।
जाति कुल रक्षाकरा ताहार कठिन ॥
वैश्रवण इन्द्र नल हते यदि तुमि ।
अनादर करिताम राजीमती आमि ॥